'सृजन शब्द से शक्ति का'

अन्तरा शब्दशक्ति

अप्रैल २०२० (अंक-१२)

मासिक साझा संकलन

अप्रैल माह में अन्तरा शब्दशक्ति वेब अंक में प्रकाशित रचनाएँ

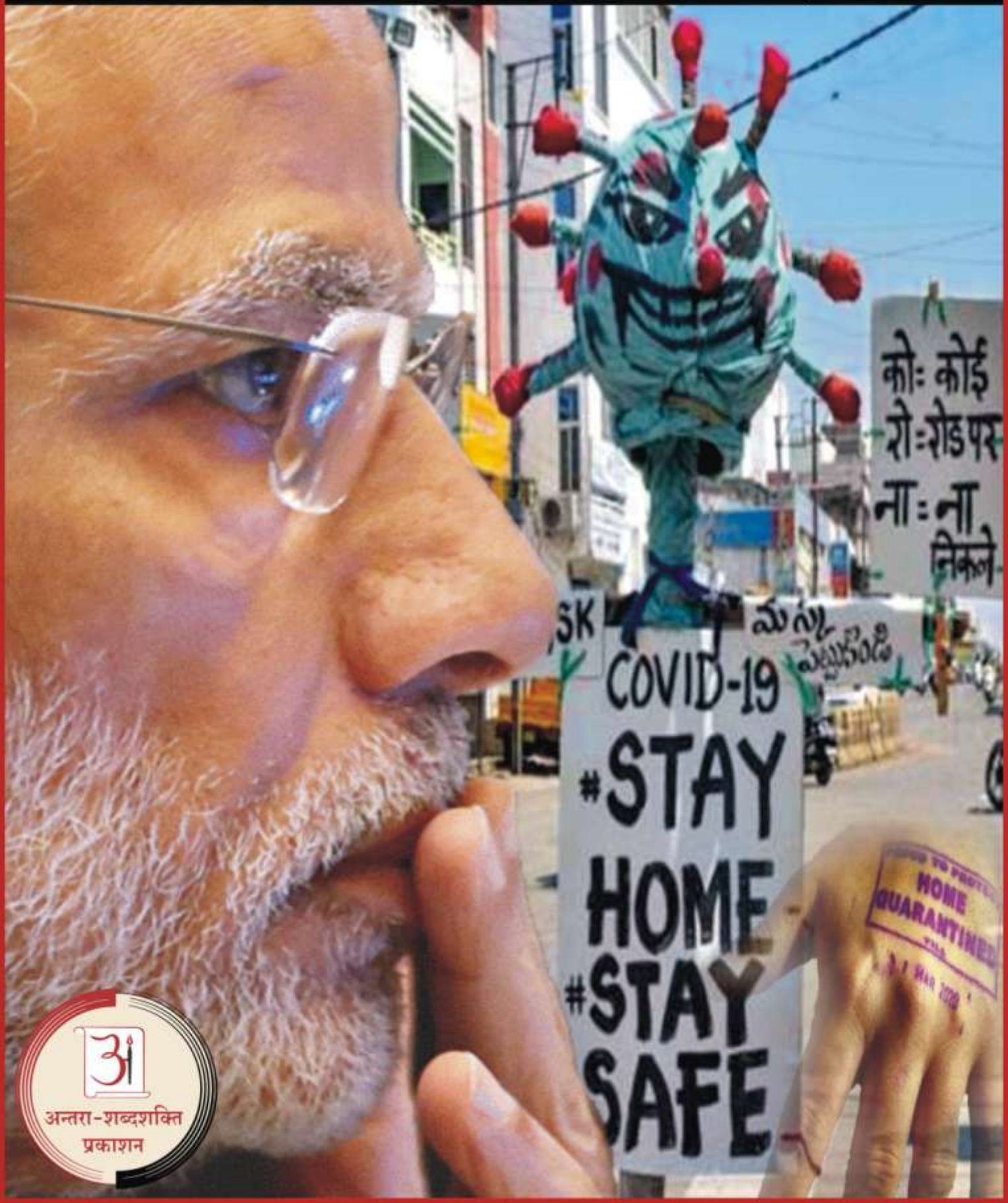

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

'सृजन शब्द से शक्ति का'

मासिक साझा संकलन
अप्रैल २०२०

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

ISBN No. - "978-93-5372-097-1""

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण- २०२०, अन्तरा शब्दशक्ति- साझा संकलन

मूल्य- १२०.०० रूपये

मूद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

माह – अप्रैल 2020

मासिक साझा संकलन

अन्तरा शब्दशक्ति

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

15, नेहरु चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

संपादकीय..

काश वो कर लिया होता!

कुदरत के कहर ने ही सही आज दी है मोहलत
तो कर लो वो शौक पूरे जो बन न सके आदत
कल ये मत कहना कि काश वो कर लिया होता
जरुरी नहीं है जिंदगी फिर से दे इतनी फुरसत

डॉ. प्रीति समकित सुराना

कब और किसने सोचा था कि एक छोटा सा जीवाणु जन्म लेगा और विश्व को एक ऐसा इतिहास दे जाएगा जो किसी भी सदी में न कभी किसी ने सोचा, न समझा, न जाना, न देखा,..! कोरोना जिसके कारण आज सम्पूर्ण विश्व भयग्रस्त है जिसने बड़े-बड़े देशों को अपनी चपेट में लेकर क्षति पहुंचाई है।

भारत जैसा अत्यधिक घनी आबादी वाला देश जो सबसे ज्यादा तीज, त्यौहार, नुक्कड़ और गलियों की बैठक, पिट्ठू, दंगल, लुकाछिपी, धर-पकड़ जैसे खेल गलियों में खेलता, ३३ कोटि देवताओं के उत्सव मनाता, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई आपस में जहाँ भाई-भाई बनकर महफिलें जमाने के बहाने ढूंढकर आए दिन गले मिलकर अपनत्व बाँटता फिरता है आज ऐसे आपातकाल में इस महामारी से जन-जन को बचाने के लिए तालाबंदी जैसा कठोर कदम उठता सकता है सचमुच कभी सोचा न था।

देश के प्रधान के एक आवाहन पर समूचा देश एक होकर इस महामारी से अनेक दैनिक जरुरतों को भूलकर एकता के बल पर महामारी को फैलने से रोक पाने में बहुत हद तक सफल रहा है, जितना फैला है कुछ अज्ञानता और अराजकता के कारण फैला है और वो आंकड़ा .०००००२: भी नहीं है। आज हम सब दृढ़ हो जाएं तो ये तय है कि देश विकास के सर्वोच्च पायदान पर पहुंच जाएगा।

मैं रात-दिन 'विश्वगुरु भारत देश' के स्वप्न देखते हुए यही कामना करती हूँ कि देश सुरक्षित रहे। क्योंकि ये सिर्फ देश नहीं यहां की माटी चंदन और पानी गंगा और मातृभूमि भारत हमारी माँ है और माँ की रक्षा यहां के कण-कण और जन-जन का प्रथम दायित्व है।

आज देश और जिस स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (**covid19**) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजन से जोड़े रखा जाए। अन्तरा शब्दशक्ति के रचनाकारों को हमारा ये अंक उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

इरादे है मजबूत
भरोसा है खुद पर
किसी मजिंल के लिए
बढ़े जो कदम
तो सिर्फ जिद ही नहीं
स्वाभिमान की खातिर भी
पीछे नहीं हटेंगे कदम
होंगे कामयाब हम
बात अगर वतन की हो
तो मातृभूमि की कसम
जीत जाएंगे हम!

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

मासिक साझा संकलन

इस माह प्रकाशित रचनाकार

सूचना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
बैंक- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
शाखा- वारासिवनी
खाता क्रमांक
3672176230
IFSCode CBIN0281785
Paytm 9424765259

१ अक्टूबर २०१६ से अन्तरा शब्दशक्ति का वेब अंक सृजन शब्द से शक्ति का आरंभ किया। **ISSN** या **RNI** नंबर की जटिल प्रक्रिया से बचते हुए अन्तरा-शब्दशक्ति हर माह के अंत में इसे एक साझा संकलन और ईबुक के रूप में संग्रहित कर रहा है। इसमें कविताएँ, लेख, लघुकथा, लघु-कहानियाँ और अन्तरा शब्दशक्ति के साहित्यिक समाचार, आगामी कार्यक्रमों की सूचना आदि सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक अंक सशुल्क अंकित मूल्य जमा करने पर उपलब्ध है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

१.
अंजुम रहबर
कुँअर बेचैन
पिंकी परुथी श्ज्योत्सनाश
डॉ. प्रीति समकित सुराना
गरिमा राकेश गौतम
डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
तरुणा पुंडीर तरुनिल
डॉ. रविन्द्र बंसल
भावना विशाल
भाऊराव महंत
जयकृष्ण चाण्डक जय

२.
रेणु दीपक खर्द
प्रियंका राय ॐ नंदिनी
ऋषभ तोमर
केवरा यदु
नवीन जैन अकेला
प्रदीप अरोरा
स्वयंभू शलभ

३.
शीलकान्त पाठक
जयराम जय
डॉ. किशोर सोनवाने अनीश
वंदना राय
मंजू सरावगी
ओम कृत सिंह
शिल्पा पाठक
पवन मुन्तजिर
महिन्दर कौर
सुशील सरना
अशोक शर्मा

४.
विजय कुमार गुप्ता
पूनम राजपुरोहित मानवधर्मी

५.
संतोष तिवारी
कृति गुप्ता
रामप्रसाद मीणा लिल्हारे
सुमित ओरछा
सीए जितेंद्र मित्तल

६.
डॉ. प्रीति समकित सुराना
दिनेश देहाती
रामकुमार झा 'निकुंज'
कीर्ति वर्मा
ऋतु कोचर

७.
अनुपम आलोक
नीलमणि पांडेय
राजीव रंजन शुक्ल
इमानुएल दीप
अरविंद त्रिवेदी
सुखदेव भंडारी
डॉ. रमेश त्रिपाठी मछण्ड
आशीष जैन
महेंद्र कुमार गुदवारे

८.
लोकेश महाकाली
श्यामसुंदर सेन
मिथिलेश कुमार दर्द
प्रेमलता पंथी
प्रियंका अग्रवाल
मनोज कुमार मन
राजू उपाध्याय
नीर सोनी
आशीष पाठक

९.
लीना मित्तल खेरिया
स्नेहलता
मुकेश कुमार परिहार अन्जान
संजय कुमार सिंह सारथी
कृष्ण भारतीय
चंद्रप्रभा सूद
राजेश देशप्रेमी
प्यासा अंजुम

१०.
सुरेन्द्र भसीन
माधवी उपाध्याय
सुरेखा 'स्वरा'

११.
प्रज्ञा सुमेध जायसवाल
इला सागर रस्तोगी
देवयानी नायक
अदिति रुसिया
सीता गुप्ता
डॉ. वासिफ काजी
हेमंत बोर्डिया
उमाकांत दीक्षित

१२.
पवन अरोरा- पुस्तक समीक्षा
मीनाक्षी सुकुमारन
उमाकांत दीक्षित
राजेश 'प्रखर'
मानसिंह 'मनहर'
भवानी शंकर खत्री

१३.
शिखर चंद जैन
सीए जितेंद्र कुमार मित्तल
राजेश्वर दयाल वत्स
अनुराधा कुमारी सिंह 'अनु'

१४.
शरद कोकास
अधिवक्ता स्वप्निल डोंगरे
डॉ. नरपतसिंह
शिवनंदन सिंह
वर्षा श्रीवास्तव
डॉ. अंजुलता
विजय कुमार अग्रहरि आलोक

१५.
नीना सिन्हा
प्रदीप पुष्पेंद्र
किरण मोर
किशोर छिपेश्वर
अजय कुमार झा
अमित के किशोर
वेदप्रकाश लाम्बा

१६.
बृजनाथ श्रीवास्तव
प्रदीप सोनी शून्य
राजू उपाध्याय
विंध्य प्रकाश मिश्र
प्रीति अमित गुप्ता
डॉ. पायल राय
नीरज त्यागी

१७.
डॉ. प्रीति समकित सुराना
टीना संदीप सोनी
रागिनी त्रिपाठी
सुमन जैन
जगदीश पंकज
संजीव शशि
जावेद अकरम
अनिता जैन विपुला

१८.
मुकेश कुमार सिन्हा
मुकेश मनमौजी
केवरा यदु 'मीरा'
रेणु दीपक खर्द
अंतु झकास
लीना शर्मा
संदीप कुमार
ठाकुर दास सिद्ध
हार्दिक महाजन
कैलाश सोनी सार्थक

१९.
डॉ. पी.डी. शर्मा
प्रदीप झा
राम प्रताप वर्मा
तुमेश पटेल 'सारथी'
अर्चना मिश्रा
हिमांशु कलंत्री

२०.
भारत कोरणा
व्ही. व्ही. रामकिरण
अम्बि सिंह
डॉ. प्रज्ञा पांडे
कुंवर उदय
डॉ. अनिल भतपहरी

२१.
मनोज श्रीवास्तव
रुचिका
प्रेमलता पंथी
अशोक शर्मा वशिष्ठ
सुरेश नायक
लीना सुराना
मुकेश परिहार
शेखर अस्तित्व

२२.
दुर्गेश मेघवाल
ऋतु कोचर
रमा प्रेम शांति
डॉ. अनीश गढ़
अपेक्षा व्यास
अनिता जैन विपुला
सुखविंद्र सिंह मनसीरत
मंजीत जायसवाल

२३.
शिखर चंद जैन
मान बहादुर सिंह 'मान'
शिशुपाल यदुवंशी

२४.
मधु प्रधान
अर्चना अनुप्रिया
मीनाक्षी सुकुमारन
दिनेश दीवाना
मनोज जैन
के.टी. दादलानी
नवनीता कटकवार
सुमित अग्रवाल

२५.
प्रणय श्रीवास्तव अश्क
रेशमा त्रिपाठी
साधना छिरोल्या
डॉ. आशु जैन
त्रिशला गुड्डा
वसुंधरा राय

२६.
कमलेश कमल
सरन घई
आशुतोष पाल (आशू)

२७.
आदित्य राजोरिया
डॉ. प्रदीप त्रिपाठी
राकेश पटेरिया
रोहित प्रताप सिंह
नफे सिंह योगी
राजेश आचार्य
बबिता कंसल

अंजुम रहबर

आग बहते हुए पानी में लगाने आई
तेरे ख़त आज मैं दरिया में बहाने आई

फिर तिरी याद नए ख़्वाब दिखाने आई
चाँदनी झील के पानी में नहाने आई

दिन सहेली की तरह साथ रहा आँगन में
रात दुश्मन की तरह जान जलाने आई

मैं ने भी देख लिया आज उसे ग़ैर के साथ
अब कहीं जा के मिरी अक्ल ठिकाने आई

ज़िंदगी तो किसी रहजन की तरह थी 'अंजुम'
मौत रहबर की तरह राह दिखाने आई

कुँअर बेचैन

ग़ज़ल

फूल को खार बनाने पे तुली है दुनिया
सबको बीमार बनाने पे तुली है दुनिया

हमने लोहे को गलाकर जो खिलौने ढाले
उनको हथियार बनाने पे तुली है दुनिया

मन महकती हुई मिट्टी है खुले आँगन की
उसको दीवार बनाने पे तुली है दुनिया

प्यार के रिश्तों को जो दिल में जगह देती थी
उनको बाजार बनाने पे तुली है दुनिया

जिसके बसने से बहुत खुश थी जमीं, उस पर ही
खुद को क्यों भार बनाने पे तुली है दुनिया

पिंकी परुथी 'अनामिका'

क्वारेन्टाइन अच्छा है

बरसों से ही,
क्वारेन्टाइन में रहने की,
आदत है मुझे ।
पहले जरूर,
कुछ नीरस सा लगता था,
घर, घर और सिर्फ घर में ही,
थोड़ा कैद सा महसूस होता था,
पर धीरे-धीरे, इस मजबूरी,
मजबूरी से आदत,
और आदत से एक मनमौजी,
बनने की सनक,
सनक ने पैदा किया,
मेरा दूसरा रूप,
वो रूप जिससे,
आज मैं खुद ही प्यार करती हूँ ।
अपने आप को,
हमेशा व्यस्त रखने का हुनर,
और उसकी ही वजह से मिला,
वो सब कुछ,
जो शायद,
बिना क्वारेन्टाइन में रहकर,
नहीं पा सकती थी ।
अपना वजूद,
अपने ख्यालों का
साझा करने का मंच,
समूह सिर्फ अपनी सखियों का,
मित्र जिसने उभारा,
मेरे अन्दर छिपे हुए जज्बातों को,
दिया उन्हें एक भरोसा,
हाँ,
यह क्वारेन्टाइन बहुत अच्छा है ।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

सरहद पर सेना
सैनिक समर्पित
देश यह सुरक्षित
शीश को झुकाइये

गाँव-गाँव गली-गली
कूड़े कचरे का ढेर
करता सफाई कर्मी
शुक्र तो मनाइए

जाग रहे रात-रात
स्वास्थ्य सेवी, डॉक्टर
महामारी फैल रही
आभार जताइए

घर से न निकलो तो
यही बड़ा काम होगा
कुछ नहीं करके भी
साथ यूँ निभाइये

गरिमा राकेश गौतम

कोरोना

कोरोना एक बीमारी है
जात पात नहीं देखती है
हो जायेगी तो ये
हिन्दू-उननेसपउ नही देखती
मिलकर लड़ना है इससे
सियासत करना बंद करो
ऐ नादानों हालात समझकर
कर्तव्यों को पूरा करो
डॉक्टर, नर्सो,
पुलिस वालों पर करते वार
इतना ही सिखाता है क्या
मजहब तुझको यार
छोड़ मजहबी दीवारों को
कुछ दिन देश के लिये जी लो यार
पूजा, नमाज तो फिर कर लेंगे यार
अभी तो मानवता के लिये
दुआ, सजदा कर लो यार

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

भविष्य का विश्व और भारत

भविष्य वाला विश्व चलेगा
भारत के पदचिह्नों पर,
उनके चलने हेतु भारत ही
नए मार्ग बनायेगा।

जिन बातों की कभी हँसी
उड़ाते थे विश्व के देश,
आज उन्हीं बातों पर उनका
लगा है पूरा ध्यान।

अपनी सभ्यता और संस्कृति
जीवन धन है अपना,
अपनाने को अब इसे सोचते
विश्व देख रहा सपना।

हाथ जोड़ नमस्कार करने को
अब विश्व भी है तैयार,
संकट में कैसे एकजुट हैं हम
सोच रहा बारंबार।

विश्व गुरु बनने की राह पर
अब भारत है तैयार,
श्रम, संयम, तप, त्याग, समर्पण
मार्ग को दे रहे आकार।

भारत के विश्व गुरु बनने की बातें
चारों ओर छा जायेंगी
सबके देंगे एक-दूजे को समाचार
वो सुबह कभी तो आयेगी।

तरुणा पुण्डीर 'तरुनिल'

आत्मचिंतन

प्रकृति ने मानो मानव को
आत्मचिंतन का कुछ समय दिया
तो मन ने यह विचार किया
बीमार हम हैं या वो?
और इस दौरान
यह महसूस हुआ,
यह आसमान चिड़ियों का भी है
और हाँ आसमान नीला ही होता है!
मैंने सुना मोर को अपनी प्रिया को पुकारते
मानो कह रहा हो
आ जाओ बाहर कोई नहीं है!
मैंने पशुओं को
इंसान की फिक्र करते देखा!
मैंने चाँद को शर्माते देखा,
तारों को टिमटिमाते देखा,
सूरज को खिलखिलाते देखा!
साथ ही मैंने महसूस किया
बूढ़े पिता के अकेलेपन को!
जो कह रहा था-
तुम तो फिर भी परिवार के साथ हो
अकेले कहाँ हो? अकेला तो मैं रहता हूँ!
आज मैंने महसूस किया
घर में रहने वाली उन बहनों के सवाल को
जिसे हम कामकाजी महिलाएँ अक्सर
हँस कर टाल देती हैं!
उनके पति भी प्रति प्रश्न करते हैं कि
तुम करती ही क्या हो ?
वह सवाल आज प्रश्न बन खड़ा था
जैसे ये घर का काम जो,
चौबीस घंटे से भी बड़ा था।
मैंने देखा मानव आज
स्वेच्छा से कैद है,
जहाँ है वहीं ठहर गया है।
मैंने उसे अपने डर पर हँसते देखा
मैंने मौत को गलियों में
गश्त करते देखा।

डॉ.रविन्द्र बंसल 'रवि'

प्यार को लग गए पर
उड़ती उमंगे ऊँची ऊपर

इतना भागे फिरे बरसों
चंद हफ्तो रह लो घर

कितना खूबसूरत है
ये दो कमरों का शहर

साझे है दुख सुख अपने
साझे रस्ते साझी डगर

पँछी रुख मोड़ अब
करें भीतर का सफर

हो कोई दुनिया ,कोई बला
मौत है इक कायम डर

ए खौफ खुदारा यूँ न कर
मत कर ताल्लुक बेअसर

भावना विशाल

आओ दीप जलाएं

विपदा के क्षण में, इस घोर रण में
हो धीर हम, गंभीर हम
दृढ संकल्प जन-जन में भरें
एक दीप ज्योति आहूत करें

है सघन तम, भयकारी भ्रम
हो कर निडर, इस तिमिर पर,
सौ सूर्य आशा के धरें
एक दीप ज्योति आहूत करें

है युद्ध यह, और यज्ञ भी
है धर्म भी, कर्तव्य भी
हो जाति-पाति से परे
एक दीप ज्योति आहूत करें

भाऊराव महंत

भावाभिव्यक्ति

क्यों जताते आप मुझ पर प्रेम का अधिकार बोलो-
जबकि मुझको जिन्दगी में ठाँव दे सकते नहीं हो!

राधिका सम प्रेम मेरा, आपके घर रुक्मिणी है।
प्रेमिका हूँ आपकीय वह आपकी अर्धांगिनी है।
रख हमें दो इक तुला में, तो अधिक है भार उनका।
हाय रे! मुझसे अधिक है, आप पर अधिकार उनका।
सत्य सौ प्रतिशत यही है, दे अगर वह इक इशारा-
आप बाहर द्वार निज के, पाँव दे सकते नहीं हो।।

म्यान हो यदि एक, तलवारें उभय कैसे रहेंगी?
सौत बोलो एक-दूजे को भला कैसे सहेंगी?
इसलिए तो एक का परित्याग करना ही पड़ेगा।
आपको दो भाग से, इक भाग रहना ही पड़ेगा।
हो भले परिणय हमारा, किन्तु मेरी सौत के सम-
आप सच्चे प्रेम का हर दाँव दे सकते नहीं हो।।

प्रण करो मुझसे अभी-भी, प्रेम सच्चा कर सको तो।
पूर्व तिय निज त्यागकर यदि, आप मुझको वर सको तो।
दीजिए उत्तर मुझे है आपसे यह प्रश्न मेरा।
क्यों भला सागर किनारे, है हृदय यह तृष्ण मेरा?
इसलिए परित्याग करने, आपका मजबूर हूँ मैं-
क्योंकि अपने छत्र नीचे छाँव दे सकते नहीं हो।।

ग़ज़ल

जयकृष्ण चांडक 'जय'

है दुश्मन की चाल समझ,
किसने फैंका जाल समझ।

उसकी गरज थी तो तब तक,
खूब बजाए गाल समझ।

दाढ़ी में अब दिखते नहीं,
तिनके में है बाल समझ।

खूब उड़ाया जी भर के,
बाप का अपने माल समझ।

कब और कैसे सुधरेगा,
देश का अपने हाल समझ।

छोड़ दे बातें सदियों की
दिन, महीना 'जय' साल समझ।

नवीन जैन अकेला

बिंदु से शून्य तक

एक बिंदु से प्रारंभ हुआ जीवन
समय के पथ और
सांसों के रथ पर सवार होकर
निरंतर गतिमान है
भवसागर से पार होने के लिए
सवार होना होगा हमें
मर्यादित कर्मों की नाव पर
इस नाव पर बांधना होगा हमें
दृढ़ संकल्प की पतवारें
मन को सज्ज करना होगा
त्याग, समर्पण, कर्तव्य, सच्चाई
और स्नेह के सुगंधित पुष्पों से
तब हम मुकाबला कर पायेंगे
झूठ, कपट, अनाचार,
और स्वार्थ की प्रचंड लहरों का
तब हमें हासिल होगा
वो विराट शून्य जिसे कहते
'मोक्ष द्वार'

विनाश काले विपरीत बुध्दि

प्रदीप कुमार अरोरा

भाव-

वक्त बड़ा बलवान है। वक्त की नजाकत समझना, वक्त के इशारे को समझना और उसके अनुरूप स्व-अनुशासन की ओर प्रेरित होना ही बुद्धिमान होने की निशानी है। अर्थात, जब तक हम इस सीमा, संयम, अनुशासन का पालन कर रहे हैं तब तक वक्त वक्त आपका है आप इसे 'स्वर्णकाल' कह सकते हैं।

और तब, जब आपने अपनी जिद के आगे वक्त को बौना समझा, जब वक्त की चेतावनी को अनसुना कर दिया, अथवा वक्त की तुलना में स्वयं को बलवान मानकर कोई दुस्साहस करने का निर्णय ले ही लिया तो वक्त अपनी निर्धारित शक्ति (हाइड्रोलिक बल) से अपना काम करेगा ही।

हमारे धार्मिक ग्रंथों में, राजे-रजवाड़ों के इतिहास में, और आज के परिदृश्य में (हमारे आसपास समाज में) ऐसे एक नहीं सैकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे, जहाँ वक्त (काल) का आकलन करने की चूक हुई है और उसका बहुत बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ा।

कंस हो, दुर्योधन हो, धृष्टराष्ट्र हो, कोई भी हो।

एक उदाहरण प्रस्तुत है-

एक वरिष्ठ बैंक अधिकारी जो प्रारम्भ से ही शीर्ष मैनेजमेंट के समीप (जी एम के सेक्रेटरी) रहे, सेवानिवृत्ति के अंतिम वर्षों में उसी शहर की मुख्य शाखा में प्रबन्धक बने। तब कम्प्यूटर नहीं थे, खाता बुक चलती थी। झाबुआ आदिवासी क्षेत्र है, अनपढ़ कृषक अधिक हैं। एक कृषक को कृषि ऋण खाते में रू.३५००-०० शेष बताया। ये राशि ले भी ली और बैंक में लागू समझौता योजना में खाते को रू. ३०००-०० से बंद कर रू. ३५००-०० की रसीद दे दी, रू. ५०० अपनी जेब मे रख लिए।

अनुमान नहीं था, शिकायत होगी।

शिकायत हो गई तब अनुमान गलत था कि मैनेजमेंट उनके खिलाफ कोई कार्यवाही कर उन्हें दंड देगा।

कार्यवाही प्रारम्भ हुई तो अनुमान नहीं था कि कोई आर्थिक हानि होगी।

परिणाम- सेवा निवृत्ति से मात्र, मात्र दो माह पूर्व, सेवा से बर्खास्तगी, ग्रेच्युटी जब्त, अन्य क्लेम की पात्रता से बाहर। यानि मात्र रू. ५०० की लालच में लाखों का नुकसान।

इसे कहते हैं- विनाश काले विपरीत बुध्दि।

यह संकट जाते जाते कई सबक देकर जाएगा...

यह संकट जाते जाते मानव जाति को कई सबक देकर जाएगा...यह मनुष्य को नए तरीके से जीना सीखा कर जाएगा...यह मनुष्य को उसके कृत्यों का दंड देकर उसकी सीमाओं का अहसास करा कर जाएगा...यह समझा कर जाएगा कि सिर्फ दौड़ना जरूरी नहीं होता रूकना भी जरूरी होता है...

यह आत्मानुभूति के ऐसे बीजतत्व देकर जाएगा जो मनुष्य के अंदर एक नई सोच और एक नई दृष्टि पैदा करेंगे... यह निराशा के घोर अंधकार में सकारात्मकता की रोशनी दिखाकर जाएगा...यह जीवन के लिए संघर्ष करते मनुष्य के अंदर उसकी जिजीविषा को जगा कर जाएगा... यह सिद्ध करके जाएगा कि इसी शक्ति के बदौलत बड़े से बड़े संकट पर विजय पायी जा सकती है...

यह मनुष्य द्वारा बनाये गए सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक अवधारणाओं पर एक नया विमर्श छोड़कर जाएगा...यह धन संपदा, प्रभुत्व, प्रतिस्पर्धा और भौतिक उपलब्धियों की मूल्यहीनता को समझा कर जाएगा...यह समझा कर जाएगा कि मानव अस्तित्व की रक्षा के लिए पूरी दुनिया को श्सर्वे भवन्तु सुखिनरू सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्श के मार्ग पर आगे आना होगा...

यह विज्ञान द्वारा अब तक की खोजों और अनुसंधानों के आगे एक बड़ी चुनौती छोड़ कर जाएगा...यह समझाकर जाएगा कि प्रकृति के भीतर जब विकार बढ़ते हैं तो वह स्वयं अपना परिमार्जन भी करती है...यह समझा कर जाएगा कि प्रकृति के इन रहस्यों तक पहुंचने के लिए विज्ञान और तकनीक को अभी बहुत आगे जाना है...

यह प्रकृति के द्वारा बनाये गए नियमों के साथ खिलवाड़ का मतलब समझा कर जाएगा...यह समझा कर जाएगा कि अप्राकृतिक जीवन शैली के नतीजे क्या होते हैं...यह समझा कर जाएगा कि पेड़ों, जंगलों और नदियों को नष्टकर पृथ्वी और पर्यावरण को असंतुलित करने का परिणाम क्या होता है...यह समझा कर जाएगा कि अब तक जो तबाहियां दुनिया ने देखी है और जिस तबाही से दुनिया अभी गुजर रही है उससे बचने के लिए पूरी दुनिया को प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलना होगा, उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना होगा...

शुभम् भवतु

डॉ. स्वयंभू शलभ

रेनु दीपक खर्द

गुलजार होते 'घर'

वजह चाहे कुछ भी बने,
सूने मकान भी घर लगने लगे!
एक मुद्दत के बाद अब वो
रोशन और गुलजार होने लगे!
मौन कमरों को भी अब मुस्कुराना आ गया,
बर्तन और रसोई खुद पर इतराने लगे!
बचपन की जर्जर होती
खट्टी मीठी यादों के संग,
सब एक साथ खिल खिलाने लगे!
सुस्त पड़े इंडोर गेम भी,
पहले हम की होड़ लगाने लगे!
बाहर जो चहुंओर नाकाबंदी की है,
ठहाके और तकरार के बीच,
उसने ही जुगलबंदी दी है!
'कोरो ना' ने ही सही,
वतन के लिए जज्बा दिल में जगाया है!
शंखनाद हो या घंटी,
घर से ही सबको एक सूत्र में पिरोया है!
आव्हान करती है रेनू सबसे एकसाथ,
हमें घर-घर दीप जलाना है!
करोना का अंधकार मिटाना है!

प्रियंका राय ॐनंदिनी

वक्त है सम्भलने का

रूठ गया यह नीला अम्बर धरती माँ भी रूठ गई
मानव तुमने हद की इतनी धैर्य की सीमा टूट गई

नदियों की जलधारा रोकी रुका पवन का वेग यहाँ
भाई भाई को छलता है खत्म हुआ संवेग यहाँ
निर्बल और निसहाय जनों की चीखों का अंबार हुआ
नर से नारायण क्यों मिलते धर्म का बस व्यापार हुआ
जो प्रकृति ने दर्द सहे थे बारिश बनकर फुट गई
मानव तुमने हद की इतनी धैर्य की सीमा टूट गई

शहरों को रौशन करने में गांवों को वीरान किया
पैसों के पीछे कितने ही रिश्तों का बलिदान किया
पेड़ो को तुम काट काटकर कंक्रीटों को रोप दिए
जिससे मिलते रहे गले उसको ही खंजर घोंप दिए
जीवन की आपा धापी में नेह की डोरी छूट गई
मानव तुमने हद की इतनी धैर्य की सीमा टूट गई

नैतिक मूल्यों का जीवन में यहाँ रोज ही ह्रास हुआ
धर्म-कर्म को अलग बांट कर जब तब ही उपहास हुआ
सकल विश्व पर एक कोरोना देखो पड़ गया भारी है
मानव देखो बंद घरों में ये कैसी लाचारी है
आयी काली रात सदी की जो उजियारा लूट गई
मानव तुमने हद की इतनी धैर्य की सीमा टूट गई

ऋषभ तोमर

गर हूँ दर-बदर तो हुआ क्या है
इश्क में जख्मों के सिवा क्या है

बातो में ख्वाबो में सांसो में वो है
उसके सिवा मुझमें बचा क्या है

अजीब बीमारी फैली है इश्क सी
सभी पूछते है इसकी दवा क्या है

प्रेमी, पागलो और शायरों के पास
फाका मस्ती के सिवा दिखा क्या है

गर जिश्म न हुआ लहू का पैराहन
तो फिर बता इश्क ए बफा क्या है

बस दो घूँट मय बना देती है खुदा
पीने वाला बोलता है खुदा क्या है

एहतराम से कहता हूँ रिश्ते न बना
साथ चाकू छुरी खंजर बता क्या है

बहुत हँसते हो बिन वजह के ऋषभ
इश्क में हार या धोखा मिला क्या है

प्रार्थना

माँ गाऊँ मैं तेरी गीत प्रार्थना सुन लीजे।
चरणों में लागी प्रीत विनय माँ सुन लीजे।।

प्रथम प्रार्थना मैया तुमसे
विपता दूर करो माँ जग से।
हम जायें रोग से जीत।
विनय माँ सुन लीजे।

एक बार तुम हाथ फिराओ माँ
कोरोना को दूर हटाओ माँ ।
जन नाचे बजा संगीत ।
विनय माँ सुन लीजे।।

प्रार्थना यह माँ झोली भरदो
बेटियों को माता निर्भय करदो।
नहीं फिरे कभी भयभीत ।।
विनय माँ सुन लीजे।।

रक्तबीज संहार हो करती
खप्पर में तुम रक्त हो भरती।
रावण दुस्साशन करो चित्त।
विनय माँ सुन लीजे।

पग पग विपदा आन पड़ी माँ
भक्त बेबस लाचार खड़ी माँ ।
मैं जग हित माँगू भीख ।
विनय माँ सुन लीजे।।

तेरे दर पे शीश झुकाऊँ
झोली खाली माँ फैलाऊँ।
अब दे भी दो माँ आशीष।
विनय माँ सुन लीजे।।

केवरा यदु 'मीरा'

भूखे को माता रोटी दे दो।
दुर्जन को सद्बुध्दि दे दो।
हम जंग से जायें जीत।
विनय माँ सुन लीजे।।

माँ गाऊँ मैं तेरी गीत प्रार्थना सुन लीजे।
चरणों में लागी प्रीत विनय माँ सुन लीजे।।

शीलकांत पाठक

भक्ति-गीत

आज मैं
भक्ति-गीत रचूंगा एक
आत्मा मेरी क्योंकि
अपराध-बोध से त्रस्त है

मुझे
विपथगा ठहरा रही है
विश्वास है मुझे कि
इष्ट मेरे आकर
सहलायेंगे पीठ मेरी
कि पुत्र! सही है तू
और दुनिया सचमुच दुष्ट है

मैं
गूंगे भेड़ों के व्यापार से प्राप्त
अकूत मुनाफा-धन की
वृद्धि के निमित्त
उनके मंदिर में
स्वर्ण-कलश चढ़ाने की
पुण्य-प्रतिज्ञा करुंगा

जिन भेड़ों को
मारा है मैंने
उनकी संततियों के निमित्त
धर्मशाला बनाने का
वादा भी करुंगा

मैं और मेरा अहं
कहता है कि
सचमुच ही महान होगा
यह अनूठा प्रायश्चित

मुझे विश्वास है कि
इष्ट के प्रखर-प्रभामंडल-सम्मुख
धूमिल आत्मा जब नत होगी
गलती अपनी मानेगी
फिर मैं पुनः
इस विपथ पथ पर
निर्बाध निर्भय बढ़ूंगा!

जयराम जय

तुम हिम्मत रखना

जीवन जीना कठिन बहुत पर, चिन्ता मत करना
सोच-समझकर धीरे-धीरे, बस बढ़ते रहना

टेक रहे हैं घुटने सब जन, संयम हार रहा
कैसा है यह दुष्ट कि फिर भी, करता वार रहा
दानव बनकर जबसे जग में, घूमा कोरोना
मानव छुपकर बैठा दानव, चुन-चुन मार रहा
किंतु न इसके बस का कुछ भी, तुम हिम्मत रखना

देश-देश फैला विष इसका, सब पर है भारी
जाने क्या होने वाला अब, शंका है जारी
राजा हो या रंक सभी जन, इससे घबराये
जीवन कैसे बचे इसी की, है मारा-मारी
चक्र समय का चलता रहता, फिर कैसा डरना

कोरोना की नहीं दवाई, लोग रहे हैं मर
हिम्मत से लें काम न,पालें कोरोना का डर
पूजा-अर्चन टोना टुटका, काम न आयेंगे
भीड़-भाड़ से दूर रहें सब, बैठें अपने घर
नदिया का है बहता पानी, अविरल है बहना

कार्य अनैतिक किया है जिसने, उसको धिक्कारें
कोरोना कितना भी बढ़ ले, हिम्मत मत हारें
क्या कर पायेगा मानव का, रहें सचेत सभी
कोई भी बाहर मत निकले, यह प्रण सब धारें
हारेगा-हारेगा इक दिन, मेरा है कहना

डॉ. किशोर सोनवाने 'अनीस'

गज़ल

वबा ने याद दिला दी है सबको नानी की।
हिला के रख ही दिया नींव राजधानी की।।

हवा में जह्र है फैला धरा फफक उट्ठी।
बदल दी हमने जो तासीर आज पानी की।।

जमीं ये माँ है अगर तो उसे दिया क्या है।
किया है पार हदें हमने बेइमानी की।।

शजर के दूर तलक साये भी नहीं अब तो।
अजी ये तो है शुरुआत बस कहानी की।।

जिसे जो चाहा किया सबने अपनी मनमानी।
किसी ने सोचा नहीं लाभ और हानी की।।

छिपाते जान फिरे सब इधर उधर लेकिन।
खबर है किसको यहाँ अपनी जिन्दगानी की।।

जुबाँ पे आज सभी के है नाम कोरोना।
चपेट में है वतन इस वबा तुफानी की।।

वंदना राय

विपदा

विपदा आज पड़ी है भारी,
संकट में है दुनिया सारी!
अब तो आ जाओ बनवारी,
आओ! सुध लो प्रभु हमारी।

जब भी स्थिति बनी अस्थायी,
तुम ही प्रभु सदा बने सहायी।
अब क्यों न ये रीति निभाई,
आओ! सब की करो भलाई।

दुष्ट, भयंकर ये विषधारी,
डरा रहा दुनिया को सारी।
फन कुचलो, फिर एक बारी,
आ जाओ, हे! कृष्ण मुरारी।

रूद्र क्रंदन चहुँओर भयकारी,
मानवता हार रही अब सारी।
तुम मानवता के पाहनहारी,
हर लो संकट, हे! त्रिपुरारी।

आत्मविश्वास

मंजू सरावगी मंजरी

घनी अंधेरी रातों में
राहों में उजाला करना होगा
आत्मविश्वास की मशाल
जला, हाथों में थमाना होगा

कमजोर बनकर जमाने में
एक दिन तू खो जायेगा
आत्मविश्वास की डोर थाम
जमाने में आस्तित्व बनायेगा

यह दुनिया तो है गहरा समंदर
लहरे किनारों से टकराती है
हौसले की कश्ती होती जिनकी
लहरें उनको ही पार लगाती है

लहरों से डर गए अगर तो
मंजिल कभी न मिल पायेगी
आत्मविश्वास की पतवार बना
दुनिया में फिर नाम कमायेगी

चल चला पथिक राहों के
कांटों से कभी न डरना
फूल ही फूल बिछ जायेंगे
बस आत्मविश्वास ले चलना

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

ओम सिंह कृत

सुनो! मैं पूछूंगा तुमसे तुम कौन?
और तुम कहना मुझसे बार-बार
बस यही बात कि हाँ, वही हूँ मैं..
जिसकी तुम्हें तलाश है!

जन्म-जन्मों से तुम प्यासे जिसके
मैं वही बरखा की बदली हूँ
भ्रमर पिया तुम जिस हेतु हो
मैं कुमुद वही अलबेली हूँ
भर जाऊं तेरे नैनन में
तेरे जीवन की वो अभिलाषा
साथ-साथ जो चलती तेरे
मैं जीवन की वो प्रत्याशा!

कैसे मुझसे पार चलोगे
अनंत व्योम, अविराम हूँ
मैं किश्ती तू मांझी मेरा
तू मुरली मैं तान हूँ

वाद्ययन्त्रों से जो है फूटा
तू है वो संगीत रे
सुर-लय बनकर साथ मिलूँ जब
रचूँ वेद नव साम रे!
बन मीरा मैं भजती जिसको
तू मेरा वो श्याम है
तू सृष्टिचक्र, मैं गति हूँ तेरी
मैं रति, तू मेरा काम है!

अधि. शिल्पा

होकर मनुष्य बहुत बलवान
दम्भ में वो नाच रहा था,
चुनोती देता ईश शक्ति को
आँचल माँ का रौंद रहा था,
सारे प्रकृति नियमों को
धता बता कर
अपनी दुनिया रच रहा था,
मात शक्ति की कर अवहेलना
स्व शक्ति पर झूम रहा था,
आँखों पर थी परत स्वार्थ की
शब्दों को नव अर्थ गढ़ रहा था,
और देख न समय चक्र को
असुर लीला रच रहा था,
त्रिनेत्र फिर कैलाश पर
मंद नयन मुस्काए,
एक कीट से ही
सब दम्भ मिटाए,
विनती अब सुन
हे पितृ परमेश्वर
हे मातृ शक्ति नमः
तिनका मात्र है मानव जाति
अब यह लीला त्याग,
चरण पड़े हे जगदीश्वर
समाप्त यह लीला कर,
हे जगजननी माँ
अपनी संतान की पीड़ा हर,
नमस्कार बारम्बार तुझे शक्ति
नमन अब स्वीकार कर।

मीठे दोहे

सुशील सरना

चौखट से बाहर नहीं, रखना अपने पाँव।
घर के अंदर स्वर्ग से, सुंदर अपना गाँव।।

घर के अंदर स्वर्ग से, सुंदर अपना गाँव।
मीठे रिश्तों की यहाँ, मीठी लगती छाँव।।

मीठे रिश्तों की यहां,मीठी लगती छाँव।
बार-बार मिलती नहीं,ऐसी मीठी ठाँव।।

बार बार मिलती नहीं, ऐसी मीठी ठाँव।
अंतस की दूरी मिटे, नफरत हारे दाँव।।

अंतस की दूरी मिटे, नफरत हारे दाँव।
घर के अंदर स्वर्ग से, सुंदर अपना गाँव।।

पवन मुंतजिर साहब

पर सलामत हैं, जान है साहब!
जिन्दगी मेहरबान है साहब!

सबको फिक्रे-जहान है साहब!
सबकी मुश्किल में जान है साहब!

तोड़ लाता है तारे लफ्जों के,
ये तो मन की उड़ान है साहब!

एक थे हम कि जैसे जिस्मो-जां,
कोइ अब दरमयान है साहब!

इश्क के शहर से निकल लो, यहाँ,
धड़कनों पर लगान है साहब!

फिर कोई पार से बुलाता है,
फिर नदी में उफान है साहब!

जब वो रहते थे,दिल में रौनक थी,
अब ये खाली मकान है साहब।

अपने-अपने खुदा हैं हम सबके,
अपनी-अपनी दुकान है साहब!

आप इतरा रहे हैं क्यूँ आखिर?
जबकि मिट्टी, ये शान है साहब!

खून पीयेंगे? और वो भी रफीक?
जी नहीं! मुँह में पान है साहब!

अपने पैरों तले जमी है बस,
सर पे इक आसमान है साहब!

एक पत्थर पे नाम कुनबे के,
ये भला कैसा? दान है साहब!

वहम् क्या हो गया है उनको मियाँ?
सबका, हिन्दोस्तान है साहब।

बोल के, सुन के, लुत्फ आता है,
ऐसी उर्दू जुबान है साहब!

हर सू अम्नो-अमान है साहब,
चाइना मेहरबान है साहब!

रुये कहाँ? घूमता है आवारा,
इसका घर तो रुवुहान है साहब!

मुंतजिर! घर में बैठिये कुछ दिन,
जान है तो, जहान है साहब।

महिन्द्र कौर समय

गगन नीलवर्ण है
चांद तारे चमक रहे हैं
हवा जहर मुक्त है
पेड़, पशु-पंछी प्रसन्न हैं।

कुछ लोगों की रग- रग में
जहर भर गया है,
उनकी फितरत
शर्मसार करती है
इंसानियत को.. ।

वक्त रुकता नहीं
कुछ भी थमता नहीं
देखते हैं सभी
कुदरत के रंग।
वक्त ही सबको
स्वयं देता है दंड।

अशोक शर्मा

जलता है तो जल जाए घर,
हमको करना अल्लाह ईश्वर।

जितना जोड़ा उतना छोड़ा,
क्या लाया क्या जाए लेकर।

रोज दिखाता है वो जादू,
खूब बड़ा है वो जादूगर।

सच कहने पर रोक लगी है,
चढ़ जायेंगे लश्कर तुझ पर।

पिंजरे में हैं कैद परिंदे,
वो उड़ते हैं जो हैं बेपर।

इधर जला दें उधर जला दें,
आग लगा देंगें ये घर-घर।

मरना ऐसे मरना वैसे,
कैसे मरना है तू तय कर।

लड़कर मर जायेंगे गर सब,
राज करोगे तुम भी किस पर।

बाँध रखी है आँख पे पट्टी,
टॉर्च लिए कुछ घूमें दिन भर।

पूनम राजपुरोहित मानवताधर्मी

राष्ट्र देवो भव:

'कोरोना वायरस' युद्ध में प्रधानमंत्री मोदी को अभूतपुर्व जनसमर्थन रूपी भारतीय राष्ट्रवाद देख विश्व अचंभित!

मोदी की दृढइच्छाशक्ति, दूरदर्शिता, त्वरित एवं कठोर निर्णय की बेजोड क्षमता ने दूनिया को सर्वश्रेश्ठ नेता मानने को किया मजबूर! उभरते मजबूत भारत के लिये पुलिस की लट्ठमार, गुण्डाई, स्वछंद एवं उद्दंड छवि गंभीर चिन्ताजनक पहलू।

'कोरोना वायरस' ने एक झटके में ही मानव जाति द्वारा चांद व मंगल पर बस्तियां बसाने जैसी सभी वैज्ञानिक उपलब्धियों, सामाजिक विकास, ढांचागत सफल व्यवस्थाओं के निर्माण तथा आपदा नियंत्रण में सक्षमता आदि दावों को धराशायी कर दिया है। अमेरिका, चीन, इंग्लैंड जैसे शक्तिशाली देश कोरोना वाइरस से भयाक्रांत होकर घुटनों के बल आ खडे हुए हैं। भारत की स्थिति भी कमोबेश वैसी ही है, फलतः केन्द्र एवं राज्य सरकारों को अघोषित आपातकाल स्तर पर युद्ध स्तरीय 'लाकॅडाउन' जैसे कठोर कदम उठाने पडे हैं!

सौभाग्य से वर्तमान में भारत को नेतृत्व के रूप में नरेन्द्र भाई मोदी जैसा दृढइच्छाशक्तिके साथ कठोर, दूरदर्शी व त्वरित निर्णय लेने में बेजोड सक्षमता वाला प्रधानमंत्री मिला हुआ है। कोरोना वाइरस के इस वैश्विक संकटकाल में प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रहित सर्वोपरि रूपी असंदिग्ध प्रतिबद्धता एवं छवि ने उनके घोर राजनैतिक विरोधियों तक को साथ खडे होने को मजबुर कर दिया है। प्रधानमंत्री के पहले एक दिवसीय जनता कर्फ्यू तथा बाद में २१ दिवसीय 'लाकॅडाउन' की अपील व आदेश को देश की संपूर्ण जनसाधारण, सभी राजनैतिक दलों तथा समस्त धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यापारिक आदि संगठनों का अभुतपूर्व समर्थन मिला है। प्रधानमंत्री के प्रति इस अभूतपुर्व विश्वास, समर्थन एवं एकजुटता को नयी 'राष्ट्रीय शक्ति अथवा पूंजी' का उदय कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगा।

कोरोना को काबू करने के लिए व्यक्तियों के मध्य आपसी दूरी रखना ही एकमात्र कारगार उपाय होने के कारण सरकारों के सामने यकायक 'लाकॅडाउन या कर्फ्यू' के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं था। देश की जनसाधारण स्वयं, समाज एवं राष्ट्र हित में लाख प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भी 'लाकॅडाउन' का पालन करती नजर आ रही है। परन्तु रेल, बस सहित सभी प्रकार के परिवहन सेवाओं के अचानक बंद हो जाने से दिहाडी मजदूरी करने वाले, फेरी व रेहडी वाले, प्रदेशों में दैनिक मजदूरी पर निर्भर वर्ग, घुमन्तु जातियां, पर्यटन, शिक्षा व व्यवसायिक भ्रमण पर गये लोगों के सामने अपने घर तक पहुंचने का गंभीर संकट खडा हो गया है। करोडों जनमानस का पूरे देश में बहुत बडा तबका है जो यहां-वहां अनिश्चितता में फंस गया है। उन्हें समुचित व सुचारू रोटी, कपडा, मकान एवं चिकित्सा तक मिलना दूर की कौडी हो गई है। ऐसे लोगों के लिए कई दिनों बाद अब जाकर भोजनादि कुछ-कुछ स्थानीय स्तर पर सामाजिक संगठनों के प्रयास सामने आने लगे हैं।

कोरोना से देश को बाहर निकालने हेतु प्रधानमंत्री मोदी की सजगता, परिश्रम और प्रयास अतुलनीय है। देश में सभी दलों की राज्य सरकारें भी पूरजोर ईमानदार प्रयास कर रही है। यह संकट की घडी भारत के लिए कई शुभ संदेश भी लायी है। देश की जनसाधारण का इस आपदा काल में एकजुटजा से केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयासों में सकारात्मक भूमिका व योगदान लिए हर क्षण तत्पर खडा होना सुखद है। परन्तु देश में सर्वत्र दैनिक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति, अति महत्वपूर्ण सेवाओं के संचालन तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने की नीति संबन्धित केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मध्य स्पष्ट दिशा-निर्देशों तथा समन्वय के अभाव के चलते जनता के अन्दर एक अदृश्य आक्रोश पनपने अथवा पनपाये जाने के प्रयासों से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। आज चाहे राष्ट्रीय हित में अथवा नैतिक मजबूरी में सभी विपक्षी राजनैतिक दल प्रधानमंत्री के साथ खडे नजर आ रहे हैं परन्तु इन्हीं के द्वारा भविष्य में इन व्यवस्थागत आपदा प्रबन्धनों को विफल साबित कर बढ-चढकर विवेचन किया जाना भी निश्चित है। कोई बडी बात नहीं कि 'धारा-३७० हटाने, तीन तलाक मिटाने एवं श्रीराम मन्दिर जैसे राष्ट्रीय अस्मिता के मुददों तक पर विरोध करने वाले तत्व आने वाले समय में इस अदृश्य जन आक्रोश को बढा-चढाकर वोटगत भटटी पर चढाकर 'मोदी विरोध' की खिचडी पकाने का प्रयास करें।

आज भारत अपने मजबुत नेतृत्व एवं इच्छा शक्ति के चलते विश्व के सामने 'कोरोना वायरस' के विरूद्ध संगठित एवं एकजुट प्रयास युक्त मजबुत राष्ट्र के रूप में ऊभरकर सामने आया है। ऐसे समय में पुलिस, प्रशासन और सरकार द्वारा उठाये गये सभी कदम राष्ट्र व समाज के लिए एकजुटता का संदेश व संकल्प को मजबुत करते हुए उपयोगी एवं प्रभावी दिखने चाहिये। यह वक्त विश्व मानव समुदाय के सामने भारत, भारतीय जनमानस, भारतीय कार्य प्रणाली एवं संपूर्ण ढांचागत व्यवस्थाओं में सहजता व संतुलन तथा आपात परिस्थितियों के नियंत्रण में परिपक्वता सिद्ध करने का भी है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों को पूरी ईमानदारी से 'कोरोना वाइरस' पर विजय प्राप्ति की लडाई में दैनिक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति, अति महत्वपूर्ण सेवाओं के संचालन तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने की नीति व स्वरूप संबन्धित स्पष्ट दिशा-निर्देशों तथा समन्वय को लागू करना होगा। विशेषकर नियमों की अनुपालना संबधी दिशा-निर्देशों के अभाव में पूरे देश में समान रूप से पुलिस की ऊभरकर आयी गुण्डा कार्यशैली पर रोक लगाना अति आवश्यक है। निश्चित ही बार-बार नियमों की अनदेखी एवं लापरवाही करने वालों पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही होनी चाहिए परन्तु दंड के प्रावधान व तरीके सुसभ्य, कानून सम्मत और न्याय के मूल स्वभाव के अनुरूप होने भी उतने ही जरूरी है।

वर्तमान में पूरा विश्व समुदाय इंटरनैट के चलते संवाद एवं जानकारियों की दृश्टि से हर समय सब कुछ देख रहा साथ बैठा परिवार बन चुका है। अतः आवश्यक है कि पूरे देश में पुलिस द्वारा खुल्लेआम जनमानस को गांव-गांव, शहर-शहर सड़कों व गलियों में दौडा दौडाकर कर मारपीट के दृश्यों को तत्काल रोका जावें। सीमित रूप से ही सही परन्तु आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति तथा सभी जन सेवाओं का संचालन स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ चलें। भारत कोरोना वाइरस से पुलिसिया लाठी के बल पर नहीं अपितु विवेक, समझ, संवाद संयम, धैर्य और सेवा के मूल मन्त्र के साथ अनुशासित रूप से लडता नजर आना चाहिये।

भारत को 'कोरोना वाइरस' जैसी आपात परिस्थितियों को प्रेम, एकता और समझपूर्वक निपटते हुए सुसभ्य नव भारत निर्माण के अवसर के रुप में लेना चाहिए।

विजय कुमार गुप्ता

विस्तारित कोरोना

कोरोना का कहर है, पाई उचित सलाह।
घर रहकर सब करें, अपनी पूरी चाह।।

अपनी आंखों देख रहे, जीवन का जब अंत।
रोटी फिर भी सेकते, छोटे बड़े श्रीमंत।।

है एहसास कलयुग का, वायरस कुप्रभाव।
कोरोना के बाद क्यों, पत्थर देते घाव।।

चूक हुई ना जाने कब, कैसे हुए फरार।
संयम नियम अनुशासन, तोड़ा बहुत करार।।

इटली फ्रांस अमेरिका, बेदम हुए रिवाज।
लहकडाउन भारत का, जमाती पढ़े नमाज।।

लोहा लेता भारत का बिगड़ गया हालात।
राह बिगाड़ी देश की, ग्रसित हुई हयात।।

लक्ष्मण रेखा है प्रबल, त्रेता युग की याद।
रेखा पार के सबक से, हुआ अत्यंत फसाद।।

सेवा डॉक्टर पुलिस की अतुल्य विशेष अचूक
मति जिनकी मारी गई, फेके उन पर थूक।।

डॉक्टर पुलिस कार्य से, अच्छा हुआ प्रभाव।
किया जी जान लगाके, कोरोना से बचाव।।

अश्लीलता के कुदृष्य, ना भूले करतूत।
द्रोह विरोध अपकारी, सही सजा मकसूद।।

पथ प्रदर्शक की सभी, रखते दिल में याद।
कर्मों से कोसे जाए, अब मौलाना साद।।

काम किया अबतक बहुत, क्यों जाते हो दूर।
घर मंदिर है आपका, पाओ रब का नूर।।

कारोना वाइरस के विरूद्ध युद्ध में पुलिस अपनी गुंडाई कार्यशैली के स्थान पर संयमपूर्वक गांधीगिरी से गांव-गांव व गली-गली दो-चार अच्छे उदाहरण पेश करते हुए उच्चतम कठोरता की घोषणा करें तो अधिक प्रभावी होगा। विश्व समुदाय में भारतीय पुलिस की ऊभरती हुई लटठमार, गुण्डाई, स्वछंद एवं उद्दंड छवि से देश के कानूनों के अरिपक्व व अमानवीय होने, गरीबी, भुखमरी, वस्तुओं के आभाव, कमजोर वितरण प्रणाली, चरमराई सेवा व्यवस्था, ढांचागत विकास में विफलता आदि कहानियां बन रही है। ऐसे में दुनिया भारतीय संविधान, कानूनी प्रक्रिया और व्यवस्थाओं के संचालन व नियंत्रण में हमारी विफलताओं पर क्यों नहीं हँसेगी?

इस स्थिति में पुलिस व जनता में दूरियां भी बढ़ेगी और कई प्रकार से स्थायी वैमनस्य की भावी स्थितियां बनेगी। कई स्थानों पर आम लोगों द्वारा पुलिस को पीटने के समाचार इन चिंताओं को प्रमाणित कर रहे है। पुलिस के इस गुंडाई व्यवहार के चलते सुसभ्य लोगों द्वारा अति आवश्यक चिकित्सा जैसे कार्यों के लिए भी बाहर नहीं निकलने से भारी जानमाल का नुकसान भी संभव है, जो समय बीतने के बाद ही ज्ञात हो सकेगा। किसी भी कारण से कोई अकेला व्यक्ति हो, स्त्री व बच्चों के साथ हो, वृद्ध हो अथवा अकेली स्त्री हो आदि मामलों में बिना पूछताछ के डण्डे बरसाने वाले पुलिस वालों पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। जनता को बाहर निकलने से रोकने के उपायों में डंडे की बजाय आर्थिक एवं शारीरिक सेवा कार्य का दंड रखें जाये तो अधिक कारगर हो सकते हैं। कोई बिना उचित कार्य घूमता मिले तो बड़ा आर्थिक दंड का चालान हो अथवा हिरासत में लेकर दो-चार दिन-सप्ताह भर का शारीरिक श्रम का दंड कार्यालयों में बागवानी, आइसोलेशन सेंटरो में सेवा, गौशालाओं में गोबर उठाने आदि कार्य करवाया जाये। यह कदम जनता के बाहर निकलने की प्रवृति पर डंडे से कहीं अधिक प्रभावी नीति संभव होगें।

सरकार को अति आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति के सरल उपायों पर जोर देना चाहिए। जैसे कि सांसद, विधायक, जिला प्रमुख, पंचायत समिति प्रधान, सरपंच, ग्राम पंच स्तर तक के जन प्रतिनिधियों को कानूनी रुप से अपने क्षेत्रों में रहकर जनता से संवाद का काम अनिवार्य रूप से सौंपा जाये। ऐसा संक्षिप्त आपात प्रशिक्षण हों कि वो भेदभाव रहित तथा वोटगत सोच से ऊपर केवल राष्ट्रसेवा के मापदंडो पर कार्य करें। जो प्रतिनिधि इस आपातकाल धर्म में गैर जिम्मेदार आचरण करे,उन पर कठोर संसदीय कार्यवाही हो। ग्राम पंचायत स्तर पर 'आवश्यक सेवा निर्णय समितियों' का गठन हों ताकि आमजन की आवश्यकता के अनुसार समाधान की सरल अनुमति प्रक्रिया बन सके। इन कदमों से अनावश्यक सडकों पर निकलने का बोझ कम होगा। ग्रामसेवक, पटवारी आदि पंचायती राज कर्मचारियों को अपने कार्य स्थल पर रहने की अनिवार्यता कर गांव व पंचायत स्तर पर नियंत्रण कक्ष की भांति काम करने का आदेश हों! ग्राम पंचायत स्तर पर अस्पताल आदि के लिए टेक्सी, आवश्यक वस्तुओं के लिए करियाना दुकान और सब्जी-दूध-दवा आदि हेतु अनुमति पत्र जारी हों। इन कदमों में कोरोना वाइरस से लडने के मूल नियमों से कोई समझौता नहीं हो तथा भीड़ न होने देने एवं आपसी दूरी आदि नियम कठोरता से लागू रहें।

पुलिस द्वारा कानुन की कठोर अनुपालना अवश्य हों परन्तु सभी कारगर व प्रभावी ढंग हेतु नियंत्रण उपायों में सभ्य समाज वाले महान भारत निर्माण का स्वप्न परिलक्षित होना भी उतना ही आवश्यक है। स्वतंत्र भारत में यह पहला अवसर है जब किसी प्रधानमंत्री की निष्ठा को देश की जनता और पूरा विश्व एक स्वर में भारत के पर्याय के रूप में देखने लगा है। अतः हमें 'कोरोना वाइरस' से कामयाब होती लडाई के बाद प्रधानमंत्री मोदी जैसे श्रेष्ठ एवं कुशल नेतृत्व को देश विरोधी तत्वों द्वारा असंवेदनशील या जनविरोधी बताने की संभावित किसी कुचेष्टा को रोकने के प्रति भी सजग रहना होगा। यही अवसर है जब भारत को पूरे विश्व के सामने अपनी समस्याओं से सहजता व एकजुटता से बाहर निकलने में समर्थ राष्ट्र के रुप में साबित करना है। हमें प्रभावी ढंग से कोरोना जैसी आपदाओं को प्रेम, सहकार, सद्भाव, एकता एवं राष्ट्रीय मजबूती के अवसर में बदलकर दिखाना होगा!

पूनम राजपुरोहित मानवताधर्मी

अब ये क्या तमाशा है भाई

लीजिये! आज फिर देश के प्रधान मंत्री जी एक अजीब-सा संदेश दे गए टी वी पर। ५ अप्रैल को रात ९ बजे ९ मिनिट तक घर के लाइट्स बन्द कर दिये मोमबत्ती या टॉर्च जलाएं सभी देशवासी।

'क्या यार इस संकट की घड़ी में ये क्या टोटकेबाजी है।' कह के बुदबुदाता हुआ मैं टी वी के सामने से उठकर सोफे में धंस गया। इससे क्या कोरोना गो हो जाएगा? इससे क्या महामारी पर नियंत्रण हो जाएगा? इससे क्या लोगों की परेशानियाँ हल हो जाएंगी?

'कुच्छ भी यानि!' मैं फिर बुदबुदाया।

तभी एक खबर कौंधी जेहन में। कल के ही एक सर्वाधिक बिकने वाले राष्ट्रीय समाचार-पत्र के हवाले से खबर थी कि लॉक डाउन में सेल्फ क्वारंटाइन हो रहे लोगों में खौफ, चिंता और अनिश्चितता के चलते डिप्रेशन का प्रतिशत लगभग २० प्रतिशत बढ़ गया हैं। हर पाँच में से एक रोगी मानसिक विकार का शिकार हो रहा है। सच ही है खुला जेल ही तो हो गया है घर। बाहर खौफ के साये चहलकदमी कर रहे हैं और सब कुछ अनिश्चय की स्थिति में है। अवसाद के इस माहौल में कोई खुशखबर नही आ रही। रोज कोरोना के बढ़ते आँकड़े, बढ़ता डेथ टोल, नियंत्रण खोता प्रशासन, आस्था के नाम पर उद्दंडता करते मूरख लोग, सुबह से शाम कोई एक खबर तो अच्छी मिल जाये। पर नहीं। भला हो प्रसार भारती का कुछ साफ सुथरे अच्छे धारावाहिकों का पुनः प्रसारण देख लेने से आत्मिक शांति मिल जाती है। लेकिन फिर भी कदाचित ये असरकारी साबित नही हो रही। अभी तो शुरुआत है पता नही भविष्य के गर्त में और कैसे कैसे दिन छुपे हैं।

भारतीय संस्कृति में तीज त्योहारों की बहुलता ही है जिसने यहां के बाशिंदों को हर हाल में जीवट बना रखा है। हम प्रकृति की हर शय में त्योहार ढूंढ लेते है। ये त्योहार हमे साहस देते हैं, उत्साह देते हैं, संकट में भी मुस्कुराने का, हंसने-खिलखिलाने का बहाना देते हैं। भय को भूल जाने का नाम है त्योहार, चिंताओं को टाल देने का नाम है त्योहार। हमारे सारे त्यौहारों का सम्बंध प्रकाश से है। चाहे दीवाली के दिये हों, शरद पूर्णिमा और ईद का चंद्रमा हो, या क्रिसमस की मोमबत्तियाँ। प्रकाश और आनन्द परस्पर जुड़े हैं।

मुझे नहीं पता रात ९ बजे दिए जलाने से कोरोना का क्या होगा किन्तु इन अवसाद के क्षणों में प्रधान मंत्री जी हम थके हुए देशवासियों को नित नए त्यौहार जरूर दे रहे हैं।

याद है न वो ताली और थाली का स्वर। फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया पर सबने अपने वीडियो फोटो ऐसे साझा किये थे जैसे हम दीवाली, ईद और क्रिसमस मनाने के बाद करते है। जोश में होश खो बैठने वाली कुछ घटनाओं को यदि छोड़ दें तो वो एक अच्छा अनुभव था। लगता था हम कोई वर्ल्ड कप जीत के लौटे हों। एक अजीब से उत्साह था मन मे, बिना बात उमंग थी।

अब उस अखबार की खबर को दिमाग मे रखें और ५ अप्रैल की रात ९ बजे के दृश्य की कल्पना करें। गुदगुदी होती है ना। ये मुश्किल वक्त से आंखें मिलाने जैसा है। देश के सर्वोच्च पद पर बैठा व्यक्ति ऐसे ही नही अफलातूनी टोटके दे रहा है आपको। वो तरीके दे रहा है आपको संकट में साहस कैसे पैदा हो, निराशा में आशा का संचार कैसे हो, अंधकार में प्रकाश कैसे विकीर्णित हो। चलिए हमेशा की तरह भरोसा रखें और एक और नए त्यौहार को मनाने की तैयारी करें।

आपका दिन शुभ हो.

सन्तोष तिवारी

कृति गुप्ता

है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है।

कुछ दिनों से मिमक दिल्ली के जमात में आने वालों के **corona infection** के बारे में पोस्ट्स से भरी थी। हिंदू मुस्लिम को दोष दे रहे, मुस्लिम हिंदू को! ढेरों पोस्ट्स और सिर्फ कंफ्यूजन। फिर कल एक दोस्त से मैसेंजर में **discussion** हुआ। उनकी मुझसे शिकायत थी कि गलतियाँ सब करते हैं पर ठीकरा मुसलमान पर फोड़ा जाता है... मेरी उनसे शिकायत थी कि जैसे मैं (**I can vouch for myself only**) अपने धर्म की भी अच्छी, बुरी दोनो खबरें **share** करती हूँ वैसा आप क्यों नहीं कर सकते?

उनका कहना था कि **selectively defaming** पोस्ट्स **share** किये जाते हैं, मंदिरों में जो हो रहा वो नहीं दिखाते दमू या उमकपं में और सिर्फ एक **community** को **target** किया जाता है।

पर **media** है क्या? **Medium** का **plural--- Medium of communication**? है न? और मैं, आप हम सब **medium** ही तो हैं... अगर हम सब **individually** अपने आसपास की सच्चाई एक दूसरे से **share** करें तो यही **news** बनेगी... ये ही मीडिया होगा। चूंकि हम चुप रहना बेहतर समझते हैं इसलिए गलत न्यूज दिखाकर न्यूज चैनल पैसा बनाते हैं.. उनकी तो वही रोजी रोटी है... पर हमारी नहीं!

खैर, काफी **discussion** के बाद हमने तय किया कि अब से 'ग़लत को गलत बोलने के साथ अपने धर्म या मजहब की सच्ची सीख भी **share** करेंगे क्योंकि अगर **fake masseges** से दंगे हो सकते हैं, **lynching** हो सकती है तो सच्चे **masseges** के **Circulation** से शांति और अमन भी फैल सकता है.... कम पढ़े लिखों को भी जागरूक किया जा सकता है! माहौल सुधारा जा सकता है।

और पता है क्या, **You Get What You Focus On**! अब मेरी फीड पर कंट्रोवर्शियल पोस्ट्स की बाढ़ कम हो गयी है... **Infact**, जो दोस्त सोचते थे बोलकर कुछ फायदा नहीं वो भी सच्चाई **share** कर रहे हैं! खुशनसीबी ये है कि मेरे पास ऐसे दोस्त हैं जिनसे **Discussion** करके सिक्के का दूसरा पहलू समझ सकती हूँ और उन्हें समझा भी सकती हूँ!

क्या आपके पास हैं ऐसे दोस्त?

बच्चन जी की कविता का अंश जो हम सबने स्कूल में पढ़ा है, अब उसे जीना है। ५ अप्रैल रात ९ बजे ९ मिनट के लिए दिये, मोमबत्ती जलाने से पहले एक दिया मन के अंदर आज अभी जलाना है!

क्या हवाएं थी कि उजड़ा प्यार का वह आशियाना?
कुछ न आया काम तेरे शोर करना, गुल मचाना
नाश की उन शक्तियों के साथ चलता जोर किसका?
किंतु ऐ निर्माण के प्रतिनिधि, तुझे होगा बताना!
जो बसे हैं वे उजड़ते हैं प्रकृति के जड़ नियम से
पर किसी उजड़े हुए को फिर बसाना कब मना है?
है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है?

रामप्रसाद मीना 'लिल्हारे'

गीत

कब न जाने कौन किसको
दे दगा जाये यहाँ-
भाँपकर हालात को जोखिम उठाना चाहिए।

आप अपनी में लगें सब भूल सेवा कर्म को।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख बने हैं त्याग मानव धर्म को।
भूल बैठा आदमी अब आदमी के मर्म को।
बन गया बेशर्म गिरवी रख दिया है शर्म को।

ढोल होते हैं सुहाने
दूर के ही बात सुन-
जब जरूरत हो तभी रिश्ता निभाना चाहिए।

आग के बदले यहाँ अब आग का चलता चलन।
देख इसकी प्रगति को हो रही उसको जलन।
हम किसी से कम नहीं की भावना अब है प्रबल।
शेर कहलाते यहाँ गीदड़ बनाकर यार दल।

हो नहीं सकते कभी भी
ख़्वाब पूरे नींद के-
ख़्वाब केवल कर्म के बल पर सजाना चाहिए।

एकता की बात की देते दुहाई है सभी।
एकता से काम पर करता नहीं कोई कभी।
जब जरूरत हो नहीं तैयार रहते साथ को।
काम होता जब कभी तो छोड़ देते हाथ को।

लूटकर ज्यादा कमाया
धन यहाँ बेकार है-
कम कमाओ धन मगर श्रम से कमाना चाहिए।

दीप ये जलता रहेगा

कवि सुमित ओरछा

एक दीप विश्वास का, प्रेम के अहसास का
मातृभूमि को अर्पण का, निस्वार्थ समर्पण का

अँधियार से युद्ध का, दीप गाँधी-बुद्ध का
नित नए प्रकल्प का, जागरण संकल्प का

शहीदों की याद का, कौम से फरियाद का
सिलसिला चलता रहेगा, दीप ये जलता रहेगा,..!

संस्कृति के गान का, दीप स्वाभिमान का
न राजा न राज्य का, लोक स्वराज्य का

न दंश का न दर्प काल, सिर्फ शौर्य पर्व का
न ही भेदभाव का, और न अलगाव का

एकता के गान का, देश हिन्दुस्तान का
कारवाँ चलता रहेगा, दीप ये जलता रहेगा,..!

दीप है बलिदान का, दिव्य ज्योतित ज्ञान का
शोक का न हर्ष का, दीप है संघर्ष का

साधना का शक्ति का, दीप भाव भक्ति का
भ्रम नहीं यथार्थ का, दीप है परमार्थ का

ये हमारा मित्र पर, है बड़ा विचित्र पर
तिमिर को खलता रहेगा, दीप ये जलता रहेगा,..!

आयकर प्लानिंग से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

सी ए जितेंद्र मित्तल

दोस्तों, सर्वप्रथम तो आप सभी को नए वित्तीय वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं. आशा करता हूँ कि आपका पिछला वित्तीय वर्ष भी आपकी आय के लिए अच्छा रहा होगा। परंतु जाते जाते इस वर्ष ने हमको बहुत घातक कोरोना वायरस दे दिया जिसकी वजह से आयकर से संबंधित प्लानिंग को लेकर वर्ष के अंतिम दिन तक असमंजस बना रहा. आपकी सुविधा के लिये कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मैं आप से साझा कर रहा हूँ...'

१- पहला भ्रम वित्तीय वर्ष २०१९-२० को आगे बढ़ाने से संबन्धित था जो कि बता दूँ कि इसे आगे नहीं बढ़ाया गया है। मतलब वित्तीय वर्ष २०१९-२०, ३१ मार्च को ही समाप्त हो गया है। जो आय आपने ३१ मार्च तक की है उसी पर आपके आयकर की गणना होगी।

२- वैसे तो निवेश करने का कोई समय नहीं होता परन्तु सामान्यतः हम लोग वित्तीय वर्ष के मार्च महीने मे ही ज्यादातर निवेश करते हैं जिससे कि टैक्स बचाया जा सके। परंतु इस बार **covid** १९ के प्रकोप के कारण हम लोग ये निवेश करने मे असमर्थ रहे, लेकिन सरकार ने आपको इस निवेश के लिए ३ महीने का समय और दिया है यानी आप ३० जून २०२० तक अपने पुराने जीवन बीमा प्रीमियम, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी का प्रीमियम, चर्चा, देव, सुकन्या समृद्धी योजना आदि का भुगतान कर देते हैं तो इसका बेनिफिट आप टैक्स बचत के लिए वित्तीय वर्ष २०१९-२० की आयकर रिटर्न मे ले सकते हैं।

३ - अगर आप नयी बीमा पॉलिसी खरीदना चाहते हैं या चर्चा, देव, सुकन्या समृद्धी योजना आदि (जो कि सामान्यतः **80 C** और **80 D**, **80G Donation** के निवेश के रूप मे जाने जाते हैं) मे निवेश ३० जून २०२० तक करते हैं तो उसका बेनिफिट भी आप चाहें तो वित्तीय वर्ष २०१९-२० की आयकर रिटर्न मे ले सकते हैं।

४- अगर आप किसी कारणवश वित्तीय वर्ष २०१८-१९ की आयकर रिटर्न नहीं भर पाये जिसकी अंतिम तिथि ३१ मार्च २०२० थी तो आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि सरकार ने वित्तीय वर्ष २०१८-१९ की रिटर्न भरने की अंतिम तिथि को बढ़ाकर ३० जून २०२० कर दिया है।

और अगर समय से रिटर्न भर दिया है परंतु कुछ करेक्शन करके रिवाइज करना है तो भी ३० जून २०२० तक कर सकते हैं.

५- आवास ऋण योजना मे ब्याज आयकर कानून मे देय **basis** पर छुट के लिए योग्य होता है हालांकि ३१ मार्च तक कि आवास ऋण की **EMI** का भुगतान ३० जून २०२० तक हो जाना चाहिए.

६-**PAN** को आधार से लिंक करने की अंतिम तिथि को भी ३० जून २०२० कर दिया है।

आओ! मिलकर दीप जलायें...

अंधियारों को मिटाने को हर दीप संकल्पबद्ध है
अनुशासन में रहें सभी से निवेदन करबद्ध है
थोड़ा सा काट ले समभाव से ये आपातकाल
ये सभी कार्य हमारी निरोग्यता से ही सम्बध्द है।
अन्तरा शब्दशक्ति परिवार देशहित हेतु प्रतिबद्ध है।
जय हिंद

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक- अन्तरा शब्द शक्ति

दिनेश 'देहाती'
दीपदान पर

दीप जलाने के आव्हान पर एक अनोखी बात थी।
राष्ट्र हित में एक-एक कुटिया भी महलों के साथ थी।।

तपती धूप को सहकर जिसने रचा घरौंदो का भाग्य।
उस अभागी कुटिया के हिस्से में तो अंधेरी रात थी।

आज को नया आधार दिया स्वयं निराधार रहकर।
श्रमिक तेरे श्रम और समर्पण की कुछ तो बिसात थी।

गांव से आकर शहरों को आकार देने वालों के लिए,
विपदा में नही जागी, इंसानियत या पत्थर की जात थी।

अंधेरों में भटकते स्वयं के अस्तित्व से अनभिज्ञ,
गर्व है सर्वहारा की सद्बुद्धि तो राष्ट्र के साथ थी।

हे राष्ट्रनायक संकट में सबको साथ लेकर चलने वाले,
बड़े आश्वस्त हो पर कुटिया को न लगे वो अनाथ थी।

डॉ.राम कुमार झा 'निकुंज'

'तमसो मा ज्योर्तिगमय'
संकल्प चित्त आवृत्त हम
जगमग जगमग दीप जलाएँ
नवप्रकाश हम नवप्रभात बन,
नव अरुणिम नव आश जगाएँ।

अवसादन बन महाव्याधि जग,
घनघोर घटा बन जग में छायी,
आओ सब मिलकर एक भाव से,
खल जमात भष्मासुर को हर
सुखद शान्ति की दीप जलाएँ।

महातिमिर बन कोराना जग
महाकाल मुख जग ग्रास बनाता,
चन्द्रकिरण मधुरिम मन शीतल,
जुगनू बन रजनीगंधा मन भाएँ,
समरस पीयूष बन नवदीप जलाएँ।

जाति धर्म भाषा प्रदेश सब,
आज मिलें सब भेद भुलाएँ,
जन मन धन अर्पण जीवन हो,
नैतिक बौद्धिक भौतिक विपदाएँ
रक्षण मानवता दीप जलाएँ।

छल कपटी, झूठे हत्यारे फिर,
भ्रमित जगत में कहर मचाने,
नैतिक धर्म धीरज साहस बल,
कर शंखनाद दृढ़ संकल्प दिखाएँ।
असुर मिटा सुख ज्योति जलाएँ।

पुकार रही माँ पुनः भारती,
देशद्रोह दानव लखि दुश्मन,
सुन क्रन्दित मर्माहत विचलित मन,
भारत माँ की लाज बचाएँ।
हम मिल ढाढस का दीप जलाएँ।

आज रात्रि के प्रथम पहर में
तिमिर हीन घर से बाहर आएँ,
नौ मिनट तक नौ बजने पर,
मोमबत्ती या टार्च मोबाईल,
एक साथ मिल यशदीप जलाएँ।

दें आहट हम दीप जलाकर,
महाशक्ति हम शौर्य दिखाएँ,
रूह कंपे कोराना दानव,
भारत माँ को नव आश जगाएँ,
सद्भावन जग दीप जलाएँ।

आज पुनः संदेश विश्व को,
हम महाशक्ति असहास दिलाएँ,
सद्भावसमन्वित एक राष्ट्र हम,
बन रणयोद्धा मानव यश गाएँ
आओ जन मन मंगल दीप जलाएँ।

सत्यं शिव सुन्दर मानव जग,
आओ मिलकर साथ बचाएँ,
मिटे कालिमा कोराना दानव,
आरोग्य शान्ति फिर जीवन पाएँ।
प्रकाश पर्व हम दीप जलाएँ।

आओ मंगल गान करें हम,
भारत माँ जयगान करें हम,
तन मन धन रक्षण जन जीवन
नवशक्ति सबल धीरज साहस मिल,
स्मित मुख जनमन दीप जलाएँ।

रे द्रोही मानवता दुश्मन ,
मत बिगाड़ समरस जनजीवन,
भाग्यवान् तू जन्म लिया तू,
तुले नाश खुद मानव जीवन,
तजो नाशमति राष्ट्र बचाएँ।
मानव बन आओ ज्योति जलाएँ।

एक साथ समभाव साथ में,
आज रात्रि में दीप जलाएँ,
असतो मा सद्गमय पथगामी,
तमसो मा ज्योतिर्मय गाएँ,
भारत माँ यश कीर्ति बढ़ाएँ।
दीवाली विजयी दीप जलाएँ।

नयी आश संत्रास मिटे जग,
आभारी उपचार चिकित्सक,
कर्मकार अविरत नर्स अनवरत,
साथ खड़े हम विश्वास जगाएँ।
नमन राष्ट्र के क्रान्तिवीर को,
एक साथ मिल दीप जलाएँ।

महावीर के सिद्धांत और वर्तमान परिप्रेक्ष्य

कहते हैं जब जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है तो परमात्मा स्वयं अवतार लेते हैं।

ऐसे ही जब पृथ्वी पर कर्मकांड और पाखंड जैसी कुरीतियाँ समाज में व्याप्त थी ऐसे समय में छठवी शताब्दी में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का राजा सिद्धार्थ के घर बालक वर्धमान के रूप में जन्म हुआ।

अत्यंत बलशाली एवं ज्ञानी राजकुमार वर्धमान ने सर्प एवं हस्ती को काबू किया, तभी से उनका नाम महावीर पड़ गया।

महावीर का अर्थ होता है- साधना के पथ पर आने वाली बाह्य बाधाओं पर पराक्रम के साथ विजय प्राप्त करने वाला, उन्होंने साढ़े बारह वर्ष की घोर तप एवं साधना के द्वारा इंद्रियों पर जीत हासिल की एवं समाज में जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। सबसे पहली शिक्षा -

अहिंसा परमो धर्म
जैन धर्म की नीव है।

जहाँ आज मानव मानव को काटने देख रहा है वहीं उन्होंने मानव का मानव के प्रति प्रेम पर विशेष जोर दिया।

मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु वनस्पति सभी के साथ मित्रवत व्यवहार करना ही अहिंसा है।

आज जहाँ हम 'मैं' में ही उलझे हुए हैं, वहीं उन्होंने वनस्पति तक से प्रेम करना सिखाया।

आज किसान निर्ममता से नरवाई में आग लगा देते हैं, जिससे हरे भरे पेड़ तो नष्ट होते ही हैं ,आजू बाजू के गांव में आग लग जाती है, धरती में रहने वाले करोड़ों प्रकार के जीव जंतु मारे जाते हैं, पंछियों को एक दाना तक नहीं मिलता खेतों में, यही हिंसा है।

महावीर स्वामी ने उपदेश दिया कि- प्रकृति से प्रेम करो। वृक्षारोपण करो। जल अनमोल है जिसे व्यर्थ न बहाओ। सभी के साथ मित्रवत व्यवहार रखो। बेटे की चाहत में कन्या भ्रुण हत्या, हिंसा है। शाकाहार-आज के वातावरण में मांसाहारी भी स्वस्थ रहने के लिए शाकाहार को अपना रहे है।

आज हमारे बच्चे जहाँ चारों ओर हिंसात्मक वातावरण देख रहे हैं, नशे को अपना रहे है, ऐसे माहौल में पल बढ़ रहे हैं जिससे उनकी मानसिकता दूषित हो रही है, वे आत्महत्या की ओर बढ़ रहे है है, बच्चे अपने लक्ष्य से भटक गए हैं।

ऐसे समय में महावीर स्वामी के नियमों पर चलना अति आवश्यक है, बच्चों में नैतिक शिक्षा का अभाव है।

इंद्रियों पर संयम पाना महावीर स्वामी की का अति आवश्यक सिद्धांत है आने वाली पीढ़ी को सुंदर बनाने के लिए उनके सिद्धांतों पर चलने की अति आवश्यकता है।

उनके तीन सिद्धांत प्रमुख हैं जिन्हें आत्मसात कर मानव अपने चित्त की वृत्तियों का परिशोधन कर सकता है।

१.**सम्यक दर्शन**- समस्त कुप्रवत्तियो से मुक्त होना। जिससे मनुष्य के अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है।

२.**सम्यक ज्ञान**- सांसारिक बंधनों से मुक्ति के लिए सम्यक ज्ञान का होना अति आवश्यक है।

३. **सम्यक चरित्र**- सच्चरित्रतत्ता एवं सदाचरण पर चलें, आज जहां चारों और झूठ छल कपट का बोलबाला है ऐसे वातावरण में महावीर स्वामी के सत्य के पालन की अति आवश्यकता है।

इंद्रियों पर काबू पाना ब्रह्मचर्य अपनाना इस अगर थोड़ा भी अमल किया जाए तो आज बलात्कार जैसी घटनाएं हो ही नहीं सकती।

आज के परिपेक्ष में महावीर स्वामी की बताई हुई शिक्षा हमारी आने वाली पीढ़ी का सुंदर भविष्य कर निर्माण कर सकतीं हैं। आवश्यकता है उन्हें राह दिखाने की।

- कीर्ति प्रदीप वर्मा

महावीर जन्मोत्सव

ऋतु कोचर

समता वाला तेरा वही नजारा चाहिए

विश्व को फिर एक बार सहारा चाहिए।
वर्धमान है जो सबका वो प्यारा चाहिए।

राग द्वेष से दुनिया ज्वालामुखी बनी।
प्रभु तेरी करुणा मुझको दोबारा चाहिए,

सबके लिए बराबर थी तेरी नजर प्रभु।
समता वाला तेरा वही 'नजारा 'चाहिए,

नाथ तेरे उपदेश को सुन कई तिर गए।
तेरी तरह इस जग को उजियारा चाहिए,

नाव है मेरी की तिरती ही नहीं है।
मझधार फंसी कश्ती को किनारा चाहिए,

हर युग में कहते हैं कि जब पाप बढ़ता है।
लेता है जन्म जो वही संकटहारा चाहिए,

इससे उससे किसीसे अब काम चलेगा नहीं।
हमको तो वो महावीर ही हमारा चाहिए।

महावीर जन्मकल्याणक की हार्दिक शुभकामनाएँ

एक बार फिर आओ वीर

विपदा आन पड़ी है वीरा
मार्ग सही दिखलाना होगा
जीयो और जीने दो का
पाठ पुनः दोहराना होगा
शत-शत नमन तुम्हारे चरणों में
आज जन्मकल्याणक पर वीरा
अनुनय आज हमारी सुन लो
तुम्हे एक बार फिर आना होगा।

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक
अन्तरा शब्द शक्ति

अनुपम आलोक

आओ चलकर दीप जलाएँ,
उनके घर दीवाली पर।
जिनके घर का दीप बुझ गया,
भारत की रखवाली पर।

करें चरण वंदन उस माँ का,
जिसने सुत का दान दिया।
अपने घर का दीप राष्ट्रहित,
हम सब पर कुर्बान किया।
जिसने कोख निछावर कर दी-
राष्ट्रधर्म की लाली पर।
आओ चलकर दीप जलाएँ-
उनके घर दीवाली पर।

उन बहनों को धीर बँधाएँ,
जिनके उर की भूख गयी।
देकर के सिंदूर राष्ट्र को,
सरित नयन की सूख गयी।
दिया सुहाग-सुहागन ने जिस-
सीमा की बदहाली पर।
आओ चलकर दीप जलाएँ-
उनके घर दीवाली पर।

उन बच्चों के आँसू पोछें,
जिनके माथ न लेख रहे।
सूनी आँखों से पापा की,
राह आज भी देख रहे।
ग्रहण लग गया आह्ह, अचानक-
जिनकी हर खुशहाली पर।
आओ चलकर दीप जलाएँ,
उनके घर दीवाली पर।

एक दीप उस आँगन रख दें,
जहाँ शहादत सोयी है।
जिस सूनी देहरी को लखकर,
भारत माँ भी रोयी है।
ले संकल्प गर्व हम कर लें-
अपनी नमक हलाली पर।
आओ चलकर दीप जलाएँ-
उनके घर दीवाली पर।

नील मणि पाण्डेय

कलि की कलुषहीन मूर्ति

उड़ रहे थे कभी आसमानों में हम,
घोंसला आज वीरान ये हो गया।
जिंदगी तेरे इस विविध रूप से,
इस नील का, नीलमणि खो गया।।

सुकूनों की वो जिंदगी खो गई,
चैन की नींद का वो बिछौना गया।
सिरपे मरहमी हस्तों की सहलाहटें,
स्नेह का वह खजाना सभी लुट गया।।

पूर्व जन्मों के पुण्यों का फल थीं मेरे,
घोर कलिकाल में जो मुझे मिल गया।
भाव सेवा का सतयुग से जो लाई थीं,
आज सब खो गया, आज सब खो गया।।

जिसने अपने पराये की इस भीड़ में
सिर्फ अपनत्व से जिंदगी भर दिया।
कोई संशय नहीं ऐसी पुण्यात्मा,
स्वर्ग में ही गया, स्वर्ग में ही गया।।।

इमानुएल दीप

प्यार न हो तो

प्यार न हो तो, मिलने का इंतजार न हो,
वो प्रीत ही क्या, जो दिल बेकरार न हो।

प्यार तो सब करते हैं, इस जहां में,
मगर समझें कैसे, गर इजहार न हो।

हम रूठे वो मनाएं, वो रूठे,सब मनाएं,
वो रिश्ता ही क्या, जिसमें तकरार न हो।

जिंदगी, जिंदगी से कभी रूठती है भला,
खुशी नहीं मिलती उन्हें, जो वफादार न हो।

मां, बहन, घर की इज्जत, वो क्या समझेंगे,
बड़े होकर भी जो इंसान, समझदार न हो।

हम कब से 'दीप' जलाये बैठे हैं इंतजार में,
मन्नत रहेगी अधूरी, जब तलक दीदार न हो।

राजीव रंजन शुक्ल

एक कड़वी सच्चाई

बहुत से लोगों का
पद पाते ही व्यवहार बदल जाता
उनका नाम बदल जाता
संज्ञा और सर्वनाम उनका है बदल जाता,
पद पाते ही उनका पहचान बदल जाता
नाम से नहीं पद से उनको जाना जाता
पदासीन होने के पहले उनका भी एक नाम होता
पदासीन होते ही उनका पहचान पद हो जाता
नाम तो शायद अपना वह स्वयं भी भूल जाता
क्योंकि पद से ही वह समाज मे कद पाता
दोस्ती और मित्रता का उनका पैमाना बदल जाता
अपने ही लोगों से मिलने मे उनका सम्मान घट जाता
पद पाते ही निगाह उनका बदल जाता
जब वह सेवानिवृत होता समय फिर है बदलता
उनसे लाभान्वित लोगों का व्यवहार बदल जाता
कल तक जो भीड़ से घिरा रहता आज अकेला हो जाता
पदच्युत होते ही उनका भी व्यवहार बदल जाता
कल तक जिनसे मिलने मे उनका सम्मान घट जाता
आज उसी को फिर खोजने वह लग जाता
लेकिन अपने तो अपने रहे नहीं,
क्योंकि उनके पद का डर उन्हे नहीं जाता
पद की पहचान जाते ही फिर वह आदमी बन जाता
लेकिन अपने मित्रों और परिवार मे
आज भी वह पद से जाना जाता
इसीलिए वह आज भीड़ में अकेला पड़ जाता
एक समान जो व्यवहार रखता
हमेशा सम्मान है वही पाता

अरविन्द त्रिवेदी

विघ्न अनेकों द्वार खड़े हैं।
सकल विश्व के नैन गड़े हैं।
मंत्र विजय का साथ जपे फिर,
आवाह का शंख बजाएँ।
आओ मिलकर दीप जलाएँ।।

घेर रहा जग को अँधियारा।
सूख रही है जीवन धारा।
पीड़ाओं की इन लहरों को-
आत्मशक्ति से आज सुखाएँ।
आओ मिलकर दीप जलाएँ।।

सन्नाटा कैसा यह पसरा?
मानवता पर भय का पहरा।
मेघ यहाँ घुमड़े संकट के,
आँधी बनकर इन्हें उड़ाएँ।
आओ मिलकर दीप जलाएँ।।

सुखदेव भंडारी

सहसा सूरज बोल पड़ा

सहसा सूरज बोल पड़ा...
क्या मेरा ठेका ले रखा है।
सब जग जाना,
रश्मि फैलाना।
समझो और समझाओ,
बूझो और बुझाओ।
कुछ धरा ऐसी बची,
जहां मुश्किल है आना।
क्या आप इस धरा के मानुष नही!
कहीं तो अपनी रश्मि डालो,
उठो और उठाओ।
सहसा सूरज बोल पड़ा...

क्या मेरा ठेका ले रखा है!
सब जग जाना,
रश्मि फैलाना।
निर्भया जैसी घटना,
अब फिर हो न पाए।
बुरी निगाह से कोई,
छू न पाए।
ऐसी हृदय विदारक,
फिर हो न पाए
समझो और समझाओ।
कुछ धरा ऐसी बची,
जहां मुश्किल है आना।
सहसा सूरज बोल पड़ा...

टूटे-फूटे रास्तों में,
गली-मुहल्ले की बातों में...
जाती हुई लड़की को देखकर
क्या सुंदर माल है!
कर गई सबको बेहाल है।
जरा सोचो!
क्या आपकी माँ-बहिन-सुता नहीं?
ऐसे यदि आपके हाल हैं,
तो कहाँ सुरक्षित जान है!
सहसा सूरज बोल पड़ा...

डॉ.रमेश त्रिपाठी 'मछण्ड'

आओ मिलकर दीप जलाएं,
प्रकाश पुंज से तम को मिटाएं
प्रकाश किरणें ऊर्जा का श्रोत,
कोरोनावायरस को दूर भगाएं।
आओ मिलकर दीप जलाएं।

देश मुखिया का संदेश मानना,
प्रजा के हित की सही कल्पना
संकट की इस कठिन बेला में,
बे मौसम दिवाली...मनाएं।
आओ मिलकर दीप जलाएं।।

अज्ञान मिटाए दीप प्रकाश,
हौसला संग होश-ओ-हवाश
मिसाल एकता की दिखला के,
औरों को हम जीना सिखाएं।
आओ मिलकर दीप जलाएं।।

प्रकाशोत्सव के आयोजन में,
विज्ञान व मनोविज्ञान छुपा है
नष्ट होगा विषाणु गर्मी ऊर्जा से,
अध्यात्म चिंतन को आगे बढ़ाएं।
आओ मिलकर दीप जलाएं।।

महेन्द्र कुमार गुदवारे

दीप ज्योति

पांच अप्रेल को द्वार-द्वार पर,
सबको ही दीप जलाना है।
कोरोना पर जीत पाने को,
हम सबको एक हो जाना हो।

दीप जलाकर करें रोशनी,
ऊर्जा का सदुपयोग कीजिए।
साहस में करें अपने वृद्धि,
औरों को भी साहस दीजिए।

एक साथ करें दीप प्रज्वलित,
समी यह ही माने सु-विवेक।
दिखला दीजिए नौ बजे पर,
हैं भारतवासी हम सब एक।

मेरा बेटा हिसाब करके सोता है

आशीष जैन

हाँ!
आजकल मेरा बेटा हिसाब करके सोता है,
कितना है पूंजी में जमा उसके,
कितना लाभ और कितनी हुई हानि,
बड़ी सहेजता से उस पिरोता है,
आजकल मेरा बेटा हिसाब करके सोता है।
दिन भर दौड़ता भागता रहता है,
सुकून से नहीं वो सोता है,
आधा दिन काम काज में,
बचे समय वो खुद में कहीं खोता है,
आजकल मेरा बेटा हिसाब करके सोता है,

मां के आंखों का नूर है,
बच्चों के लिए कोहिनूर है,
पिता की लाठी है,
पत्नी के पास जरूर है,
भाई-भाई में प्यार भी बहुत है,
बहनों के लिए तैयार बहुत है,
मगर कश्मकश में शायद जिन्दगी से बहुत दूर जा बैठा है,
उसके होने का एहसास भी अब साथ नहीं होता है,
आजकल मेरा बेटा हिसाब करके सोता है,

आयी कहां से ये माहमारी है,
सबकी जुबान पे हाहाकरी है,
दुनिया भी जिसके सामने हारी है,
जाने कैसी विपदा आयी सामने हमारी है,
ऊपर से आया एक आदेश है,
जिसका बस यही उद्देश्य है, सलामत रहे घर में आप,
चाहे जितना भी ज्यादा बाहर की दुनिया में आपका समावेश है।

घर में आजकल थोड़ी हलचल सी है,
कुछ करने की एक पहल सी है,
आज बेटा मेरा घर पे नजर आ रहा है,
कोई भी नहीं कहीं आ जा रहा है,
आज सब साथ बैठे बातें कर रहे है,
समझ से परे ये नजारा मेरे है,
देख के दिल मेरा थोड़ा सा थम सा गया है,
अनहोनी ना हो कोई ये सोच के नम सा गया है,
कहीं कोई आपस में मन मुटाव तो नहीं हो गया,
कहीं हिसाब करने की अब आपस में आस तो नहीं,

थोड़ा गौर किया तो पाया ये आदेश का असर है,
आजकल मेरे घर में सब है ये परस्पर है,
अब तो मां की आवाज में भी अजब सी खुशी है,
बच्चो की मस्ती में खनक भी अनछुई सी अजुबी है,
भाई भाई अब साथ बैठ बातें बना रहे है,
भाभियां भी नित रसोई से चहक और खिलखिला रही है,
बहुत दिन बाद में मैंने घर में खुशियों का समावेश देखा है,
आज मैंने मेरे बेटे को बिना हिसाब किए चैन से सोते देखा है।

लोकेश महाकाली

गज़ल

अजब हालात दुनियावी।
गजब शह-मात दुनियावी।

हलक हाला गटक उगले
अदब की बात दुनियावी।

गरज की बात उठते ही
दिखे औकात दुनियावी।

हँसी तक हो गयी नकली
दिखा कर दाँत दुनियावी।

उलट तस्वीर का सच ही
हकीकत जात दुनियावी।

दबाए स्याह कुछ किस्सें
चमकती रात दुनियावी

कही लोकेश ने जो यह
गजल सौगात दुनियावी

श्याम सुन्दर सेन 'श्याम'

मैंने दिल दिया जिनको

मैंने दिल दिया जिनको,
अपना मानकर ।
दिल तो उन्होंने रख लिया,
मगर कबाड़खाना जानकर।।....मैंने दिल

मैंने सोचा चलो उनके दिल में,
चाय काफी बनकर ही रहेंगे।
उन्होंने काफी को भी पिया,
तो जहर की तरह जानकर।।....मैंने दिल

साथ रहने के लिए दिन कम लगा,
रातों को भी जागे उल्लू बनकर।
मगर सुबह होते ही बह सो गए,
चमगादड़ की तरह पैरों को तानकर।।....मैंने दिल

तारीफ में उनकी क्या-क्या न किया,
दुनिया के नामों को पलमें याद किया।
उनके द्वारा दिए हुए पशुओं के नामों को,
दिल में सजा रखा है उपाधी मानकर।।....मैंने दिल

अब तो उसने बस यही गुजारिश करते हैं,
हम तो हो चुके हो उनके भले न वे मरते हैं।
हो सके तो दिल के कूड़ेदान में डाल लेना,
समझ लेंगे पहुंच गए अपने जहान पर।।....मैंने दिल

मिथिलेश कुमार मिश्र 'दर्द'

गांधी हैं एक बहाना

उत्सव देता हमें न रोटी,
देता गेहूँ दाना।
प्रचार स्वयं का करते हो,
गांधी हैं एक बहाना।

'भूखे भजन न होहिं गोपाला',
कह गए हैं पहले पुरखे।
कैसे उत्सव देखें(?), जब
हैं पेट हमारे भूखे।

पहले गेहूँ, तब गुलाब,
यह बात है एकदम सच्ची।
पहले दो तुम रोटी हमको,
फिर कहना बातें अच्छी।

गांधी-पथ है कठिन बहुत,
बस स्वांग ही रच सकते हो।
समझ रहे हैं तुम्हें खूब,
हमसे ना बच सकते हो।

छोड़ो बाकी बातें, बस तुम
कृषकों को ही ले लो।
उनकी उपजायी फसलों का
उचित मूल्य तो दे दो।

'भितिहरवा' में जाकर देखो
कृषकों की बदहाली।
जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों में करते
फसलों की रखवाली।

शीत घाम दोनों सहते हैं
बिना निकाले आह!
देख रहे हैं, करते कितना
तुम उनकी परवाह।

बड़ी-बड़ी बातें करते हो
मंचों पर बस जाकर।
जीयेंगे क्या कृषक तुम्हारी
बातों को ही खाकर?

गांधी ने जो कहा, उसे था
जीवन में अपनाया।
तूने केवल नाटक करके
लोगों को बहलाया।

प्रेमलता पंथी

मिलन

मन अधीर है, वात्सल्य से भरा है दामन।
गर्भित शिशू मिलन को, तरस रहे नयन।।

स्नेह से सींचा करती है, नित घर आँगन।
शिशू मिलन के स्वागत में, हर्षित है मन।।

ईस्वर की रचना देख, पुलकित हुआ गगन
हुई पल्लवित गोद धरा की, महका चमन।

कल्पित पुष्पों से, महक रहा हिय उपवन
कितना पावन होता है, मातृ-शिशु मिलन।

प्रियंका अग्रवाल

हमें इस बात का शिकवा
नहीं करना चाहिए
कि हम सब घर में कैद हैं।
बल्कि भगवान के सामने
नतमस्तक होकर
उनका शुक्रिया अदा करना चाहिए
कि उन्होंने हमें
सर छुपाने के लिए
छत तो दिया है।
जो प्लेटफार्म, सड़कों में
अपने दिन गुजार रहे
उन मासूम गरीबों के पास नहीं है
वो बाहर तो है,
लेकिन सुरक्षित नहीं है।
और हम घर पर है,
लेकिन स्थिर नहीं है

डॉ मनोज कुमार 'मन'

नौ मिनट के विचार

धरती के एक हिस्से का
सबसे शक्तिशाली शासक
कमजोर दिखाई पड़ रहा है
उसकी प्रजा उसके निःवस्त्र स्टेच्यू बना रही है
सबसे मजबूत मुद्रा यानी डालर, यूरो, युआन
सब के सब शक्तिहीन से हो गए हैं
दुनिया की सबसे ताकतवर
सेना भी नहीं रोक पाई
उसे अपनी सीमाओं के भीतर आने से
मनुष्य का सम्पूर्ण दंभ
पल भर में चूर-चूर कर दिया एक कोरोना ने!

वैसे इस कोरोना ने अप्रत्यक्ष रूप से
मानव जाति की बड़ी सेवा की है उसे चेताया है
उसने दानव होते मानव को
मानव ही बने रहने की नेक नसीहत दी है
आदिमानव से मानव तक की
विशाल यात्रा में प्रकृति के शोषण की
अनेक गाथाएं छुपी पड़ी हैं
जिनकी हम अनदेखी कर देते हैं
ठीक वैसे ही जैसे अनदेखा कर देते हैं
अपने घरों की महिलाओं को
उनके श्रम को, उनके विश्वास को
और मान लेते हैं के यह उनकी ड्यूटी है
दोस्तों, रिपोर्ट्स बताती हैं कि
आज मानवीय हस्तेक्षप कम होने से
प्रकृति शुद्ध हो रही है

धीरे-धीरे अपना इलाज कर रही है
प्रकृति अपनी डॉक्टर स्वयं है
ओजोन का घाव भर रहा है
नदियों का जल निर्मल हो रहा है
झीलें अपना सौंदर्य बढ़ा रही हैं
हवाएं शुद्ध हो रही हैं
नीला आसमान, चाँद, सितारे
सब के सब
बेहद चमकीले और आकर्षक हो गए हैं
और क्या चाहिए ...?
यह निराश के भंवर में नहीं
आशाओं के आसमान को
जी भर कर देखने का दौर है..

राजू उपाध्याय

तमस में नन्हीं-किरन...!

ध्वंस में थोड़े सृजन की, बात होनी चाहिये।
तमस में नन्हीं किरन की,बात होनी चाहिये।

सम्वेदनाये यदि सर्द हों, और औंधी पड़ीं हो,
ऐसे में-थोड़ी तपन की, बात होनी चाहिये।

आँसू के दर्दीले बादल, नैनो में जब बसते हों,
ऐसे में-सुनहरे सपन की, बात होनी चाहिये।

कोई दर्द हद से बढ़े, एहसास भी मीठा लगे,
तब उपचार में जलन की, बात होनी चाहिये।

प्यास अधरों पर धरी हो, नदी हो कोई सामने,
इन्ही क्षणों में आचमन की, बात होनी चाहिये।

माना देह से परे है, प्रेम का पावन फलसफा,
ऐसे में-रूहानी मिलन की, बात होनी चाहिये।

यूँ आजकल सब बन्द है, कपाट सबके घरों के,
अब सृष्टि के भूले चलन की, बात होनी चाहिये।

नीर सोनी

अच्छा इंसान

लोगों ने अपनी धर्म जाति बना रखी है। ईश्वर में भी लोगों ने अपना हक बना रखा है। ईश्वर क्या होता है?

ईश्वर वो इंसान होता है जिसने लोगों की मदद की, उनकी सारी जरूरत पुरी करी बिना जाने कि उनका धर्म क्या है? यही महान लोग होते हैं जिन्हें हम ईश्वर कहते हैं। ईश्वर हमें कहते हैं कि 'बच्चों' तुम मेरी पूजा मत करो। तुम मुझसे ज्यादा अच्छे कर्म करो और लोगों की मदद करो बिना उनका धर्म जाने। जिस तरह हमारी माँ हमें बचपन में अच्छी बातें सिखाती है, अगर हमारी माँ हममें गोरे-काले, मोटे-पतले आदि चीजों की अंतर करती तो हम कभी भी कामयाब न हो पाते। माँ तो बस यह चाहती है कि उनका बच्चा जीवन में उनसे भी ज्यादा तरक्की करे। उसी तरह ईश्वर भी यही चाहते है कि हम भी इनसे ज्यादा अच्छे कर्म करें। अगर हमारे जो महान लोग हैं जिनको हमने ईश्वर बना रखा है, वो लोग अगर यह चीज नहीं करते तो वे शायद ही आज हमारे ईश्वर होते!

हमारे पूर्व राष्ट्रपति जी श्री अब्दुल कलाम जी ने कहा है कि -

'अच्छा इंसान वही होता है जो धर्म को दोस्त बनाने और उनकी सहायता करने के लिए करे न कि उनसे लड़ाई करने के लिए'

अश्रुबूंद मे माँ!

आशीष पाठक

दिन हो, रात हो-सुबह या शाम हो!
जब तब निकल पड़तीं है!
जो मेरी आँखो के कोरो से होकर
अश्रु-बूंद के रुप मे
अँजुरीयों मे चुपके से बैठ जाती है माँ!
कहने को तो कब कि मुझको
छोड़कर जा चुकी है वो!
पर अब भी जब हफ्ते मे
शहर से गाँव पहुंचकर,
बन्द किवाड़ का सांकल खोलता हूं!
आंगन के उस पार, चूल्हे पर
खाना बनाते या फिर ओखली मे
कुछ अनाज साफ करती दिखायी
पड़ती सी प्रतीत होती है माँ!
तो कभी पूरे घर मे मेरे पीछे-पीछे,
खाना खिलाने के लिये मुझको,
दौड़ती-भागती नजर आती है माँ!
इस बन्द बड़े घर के हर कोने मे,
अपने होने के अहसास कराती है माँ! जो
मुझको तुमको सबको-अक्सर बहुत याद आती है!
बड़ा हूं न, वो भी पुरुष और मुखिया!
खुल कर किसी से कह भी नही पाता!
किसी के कंधे पर सर रखकर,रो भी तो नही पाता!
पर तुमसे कहता हूं सखी री!
अब भी जब सप्ताहांत मे घर आता हूं!
मुझको बहुत याद आती है मेरी माँ!
अंखियों के कोरो से अश्रु-रुप मे निकल पड़ती है माँ!

लीना मित्तल खेरिया

दिव्य प्रेम..

रोज सुबह सवेरे
आँख खुलते ही
उठ खड़ी होती हैं
आदतन मेरे साथ ही
बिस्तर पर आयी तमाम सलवटें भी

मेरी ही तरह
ये भी सर से पांव तक
पूर्ण रूपेण
नित्य ही तर बतर होती हैं
बीती रात की अनंत प्रणय वर्षा में

इन अनुभुतियों को
सलवटों में लपेटकर
टांग देती हूँ मैं
दिल के दीवार के पीछे
गड़ी खूँटी पर ताकि कोई देख न ले

एक एक करके मैं
समेट कर रख देती हूँ
तुम्हारा अद्वितीय दिव्य प्रेम
जो कि समाता नही है इन
कजरारी नींद से बोझिल आँखों में

स्नेहलता

चल रहा कोरोना

हाँ, जानती हूँ चल रहा कोरोना
पर तुम साहस कभी न खोना,
हर बीस मिनट में हाथ तुम अपना
धोती रहना,
तुम्हें अपने साथ अपने परिवार
का भी ख्याल रखना,
पर अपनी स्वतंत्रता के लिए
निरंतर संघर्ष करती रहना,
स्वतंत्रता का मतलब नहीं होता
बस घर से बाहर कदम रखना,
बल्कि इसका मतलब होता है
विचारों का भी स्वतंत्र होना,
तुम भी तो एक सैनिक ही हो जो
हर वक्त एक जंग लड़ रही हो और
घर के अंदर सबको संभाल
रही हो,
किसी भी हाल में अपने वजूद
को तुम न खोना,
हाँ, जानती हूँ चल रहा है कोरोना,
बाहर भले ही हो लॉक डाउन,
पर अपने मन को कभी लॉक डाउन
कभी न होने देना।

मुकेश सिंह परिहार

'अन्जान'

शांत है गालियां! शांत है चौबारे!
पसरा सन्नाटा! दुबके घरों में सारे!
कुछ नजर नही आता,
दिखता सिर्फ दूर दूर तक
परिंदों का ही नजारा,

दरख़्त जो कट गए थे,
नीड़ जो उजड़ गए थे,
किया कितना दोहन था,
जल थल नभ में सब जीव मरता था,

दिखता नही कोई अब,
गीत सुनता बंजारा,
घासफूस की झोपडी में,
प्रेम बसता था न्यारा,
खेतों में सुबह की महक से,
हलधर होता था मतवारा,

रंग बिरंगी थी सभ्यताएं,
सितोलिया खेलती कन्यायें,
मेले त्यौहार अब नही दिखते,
शॉपिंग मॉल में रिझते,
वो बरगद का पेड़,
रहते थे जिस पर कमेडी, कबूतर,
चुगते दाना, पीते पानी,निर्भीक वो उड़कर,

प्रकति ने ली अंगड़ाई,
बारी फिर से इनकी आयी,
गूंजती चिड़ियों की चहचाहट,
कलरव करते पंखो की फड़फड़ाहट,
बदला जो प्रकति का युग,
जैसे लौट आया इनका जुग,

खिलने लगी है कलियां धरा पर खूब,
कई वर्षों बाद मिला है सुख,
आदमी बना हैवान था,
प्रकति का शैतान था भुला अपनी हद,
जीव जंतु वनस्पति,
जरूरत है इनको भी,
करती प्रकति जो मदद,

कर लेती है सन्तुलित स्वंय को,
सबको मानवजाति-प्राणी जगत
जो प्रकति से हो छेड़छाड़,
देती वो उल्टा पछाड़,
मानव मत कर भूल,
मत चुभा इसको शूल,

संजय कुमार सिंह सारथी

गज़ल

लगे जो सेवा में वो मरता नही है,
इसे भारत कभी बिसरता नही है।

कभी हम नही हार मानी जीतेंगे,
जिम्मेदारी से ये मुकरता नही है।

नमन हम करे सेवा में जो लगे हैं,
कभी ये सेवा से मुकरता नही है।

चलो नाम इनका रखे याद हम सब,
बिना इनके जीवन सँवरता नही है।

कृतज्ञ देश है जो लगे हैं सेवा में,
उपद्रवी दिलो में उतरता नही है।

कमरे में एकाकीपन है..!

कृष्ण भारतीय

कमरे में एकाकीपन है,
और मैं हूं।

गर्म चाय के दो प्यालों का
लिया सहारा,
एक घूंट अपना मारा-
एक घूंट तुम्हारा,

लगा कि जैसे तुम मेरे-
सम्मुख बैठी हो,
एक महकता चँदनवन है,
और मैं हूं।

खेल ताश का जैसे तुम पर-
वार गया मैं,
जानबूझकर जीती बाजी-
हार गया मैं,

भला लगा ये देख खुशी से-
तुम ऐंठी है,
कमरे में एक भीगापन है,
और मैं हूं।

खाली कमरा एक छत है-
कुछ दीवारें,
कितना रहें अकेली ये-
घूरें फुफकारे,

गुजरे दिन, पर रोम रोम में-
तुम पैठी हो,
हर सिलवट में मधुर छुअन है,
और मैं हूं।

चन्द्र प्रभा सूद

विमर्श- अस्वस्थता का कारण

हमारे शरीर की रचना ईश्वर ने इस प्रकार की है कि इसमें कोई कमी ढूँढने से भी नहीं मिल सकती। इसे इस प्रकार से मालिक ने बनाया है कि अपनी आवश्यकता के सभी आवश्यक पोषक तत्त्वों का निर्माण यह स्वयं कर लेता है। जिन-जिन तत्त्वों की इसे जरूरत नहीं होती उन्हें इस शरीर से बाहर निकाल फैंकता है। यह स्वयं ही अपना सुधार कार्य करने में समर्थ है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब नीरोग रहने के लिए यह सारा निर्माण कार्य कर सकता है तो फिर यह बार-बार रोगी क्यों हो जाता है?

इस प्रश्न के उत्तर में मात्र यही कह सकते हैं कि यह स्वयं रोगी नहीं होता। इसे हम अपनी मूर्खता से रुग्ण बना देते हैं। अब आप कह सकते हैं कि मैंने कितनी हास्यास्पद बात कही है। कौन व्यक्ति होगा जो रोगी बनकर कष्ट उठाना चाहता है? कौन अपने धन और समय दोनों ही की बरबादी करना चाहता है? कौन डाक्टरों के चक्कर लगाना चाहता है?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर में मैं फिर वही कहूँगी कि हम स्वयं ही इस सबके उत्तरदायी हैं। हम अपनी नादानी के कारण रोगी बनकर डाक्टरों के पास चक्कर लगाते हैं और अपना समय व धन दोनों ही को व्यर्थ गंवाते हैं।

हम अपने स्वास्थ्य के प्रति सदा ही लापरवाह रहते हैं। अथवा यूँ कहना भी अनुचित नहीं होगा कि हम उसकी ओर बिल्कुल ही ध्यान ही नहीं देते हैं। हम स्वयं ही अपने सबसे बड़े दुश्मन हैं। हमारा आहार-विहार, हमारे तौर-तरीके अथवा हमारी जीवन शैली सभी पूर्णरूपेण दोषपूर्ण है। इसके लिए कोई अन्य नहीं, हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं।

स्वस्थ रहने के बेसिक नियम हैं कि समय पर सोओ और जागो, समय पर भोजन करो, प्रतिदिन सैर करने जाओ और व्यायाम करो। हम इन मूलभूत नियमों को अपनी व्यस्तता का बहाना बनाते हुए अनदेखा कर देते हैं।

जिस रोटी को कमाने के लिए सारे प्रपंच रचते हैं, झूठ-सच करते हैं, पाप-पुण्य के कार्य करते हैं, उसी को खाने के लिए हमारे पास समय नहीं होता। समय-असमय खाने से वह ठीक से नहीं पचता और हम परेशानी में आ जाते हैं।

हमारी सारी पार्टियाँ रात देर तक चलती हैं, शादियों में बारातें भी आधीरात में पहुँचती है। स्वाभाविक है कि हम देर रात घर लौटेंगे और देर से ही सोएँगे। इसलिए प्रातरू भी देर से ही जागेंगे। नाइट शिफ्ट वाली नौकरी भी इसका एक कारण कही जा सकती है। सारा दिन शरीर अलसाया-सा टूटता हुआ रहेगा। उसमें स्फूर्ति नहीं रह सकती।

अपनी व्यस्त जीवनचर्या में हम अपने खान-पान को सुधार नहीं पाते। न चाहते हुए भी मोटापे के शिकार होते जाते हैं जो सब बिमारियों का मूल कारण है। इन सबके अतिरिक्त शौक अथवा अपनी शान बघारने के लिए पार्टियों में पी जाने वाली शराब अथवा अन्य किसी फ्कार के नशीले पदार्थों का सेवन भी शरीर को खोखला बनाता है। सारा समय की जाने वाली टेंशन भी शरीर पर विपरीत प्रभाव डालती है।

हमें अपनी ऋतुचर्या के विषय में तो शायद ज्ञान ही नहीं है। हम नहीं जानते कि किस मौसम में क्या खाना चाहिए और क्या पहनना चाहिए? यह अज्ञानता भी हमारे अस्वस्थ होने का एक कारण हैं।

जंक फूड भी हमारी अस्वस्थता का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है। सभी समझदार और डाक्टर लोग हमें समय-समय पर चेताते रहते हैं पर हम हैं कि उस शिक्षा पर अमल न करने की कसम खाए बैठे हैं। तब इसका खामियाजा हम बीमार पड़कर चुकाना पड़ता है।

हमारा शरीर हमें बार-बार चेतावनी देता रहता है और हम अपनी शान बघारते हुए उसे अनदेखा करते रहते हैं। तब फिर उसका परिणाम हमें रोगों से आक्रान्त हो करके भुगतना पड़ता है। यदि वास्तव में हम अपना मित्र बनना चाहते हैं तब हमें स्वयं से शत्रुता निभाना छोड़कर स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना पड़ेगा अन्यथा रोगो की चपेट में आकर डाक्टरों के चक्कर लगाते हुए अपने बहुमूल्य समय और खून-पसीने की गाढ़ी कमाई को व्यर्थ ही गँवाना पड़ेगा।

राजेश देशप्रेमी

भटकाव का राह

मंजिल को दूर से निहारना
भटकाव का राह, ओछा विचार
मन में बढ़ाता विषाद का बोझ
आसान लक्ष्य भी लगता बोझा
ऐसी गलती करने वाला अक्सर
स्वार्थ में खो देता पाया मंजिल
दूसरे की सफलता निहारता
लेकिन अपनी गलती न मानता
ठहराव के लिए दूसरों को दोषी बता
ढकता अपनी अयोग्यता, असफलता
जिंदगी जीने के उत्साह से वंचित हो
भटकाव का राह पकड़ स्वयं मरता
दूसरे को भी डालता बेवजह संकट में
दुनिया, ऐसे लोगों की वजह से ही
आज हैरान-परेशान और बेहाल ।

गज़ल

प्यासा अंजुम

गैरों के जब भी दिखे ऐब गिनाए तूने।
ऐब अपने तो हरिक बार छिपाए तूने।।

उंगलियां तुमपे उठीं जब भी कभी देखा गया।
तब कई रंग सियासत के दिखाए तूने।।

अपना घर जलता हुआ देख परेशान हो क्युं।
गैरों के घर तो कई बार जलाए तूने।।

जुल्म करते ही रहे खोफे खुदा खाया नहीं।
मुफ्लिसों पर तो सदा फतने गिराए तूने।।

एक झोंके से गिरे इनको तो गिरना ही था।
रेत के महल जो हर बार बनाए तूने।।

गलतियाँ कर के भी तुमने तो बरी होना ही था।
गैरों पर अपने जो इल्जाम लगाए तूने।।

तुमने तो कितने सवालों के चुराए हैं जवाब।
जब भी 'अंजुम' से सुने सच थे, दबाए तूने।।

सुरेन्द्र भसीन

'रुपये कहाँ से लिए' - कहानी

काली ने जैसे ही अपना हाथ बर्तन में मारा, गोंद खत्म थी।वह उसी समय गोंद लेने चल दिया। काली सोचने लगता है -'ये लाला भी बहुत चोर है। जब जाओ काम नहीं है। उसका एक-सा जवाब होता है। कभी मिन्नत-खुशामद करने से काम देता भी है तो मजदूरी कम। ऊपर से मंहगाई इतनी है कि कुछ मत पूछो ! पहले दो-ढाई रुपए बच जाया करते थे। अब मारा-मारी करने पर भी डेढ़-दो रुपए ही बचते हैं।'

इन्हीं विचारों में गुम काली लाला की दुकान पर पहुँच जाता है। लाला ने उसे आड़े हाथों लिया - 'क्या है?'

संक्षिप्त उत्तर - 'गोंद।'

अभी कल ही तो ले गया था न ! फिर खत्म कैसे हो गई? अच्छा देता हूँ।

काली फिर विचारों में गुम हो जाता है- ये लाला क्या समझता है। गोंद मैं पीता हूँ। हर समय लाला का दिमाग चढ़ा ही रहता है। दिनोंदिन लाला कई तोंद बढ़ती ही जा रही है।

ये ले गोंद! अब दो दिन से पहले नहीं मिलेगी, कहे देता हूँ। लाला का कर्कश स्वर काली को दुकान पर खींच लाता है।

खत्म हो गई तो ?

कम लगाया कर न! जबान चलाता है। अजीब छोकरा है। काम दो तो मुसीबत, न दो तो मुसीबत। आकर खड़े हो जायेंगे भिखमंगों की तरह।

लाला का चुभता स्वर, जाते-जाते भी काली के कानों में पड़ कर उसे भेद ही गया। काली चुप। अनसुना करते हुए। अपने कदम घर की ओर बढ़ा देता है।

घर आकर काली लिफाफे बनाना शुरू कर देता है। विचारों के बादल फिर घुमड़ने लगे हैं- ये माँ भी क्या चीज है। जब से बापू घर छोड़कर गया है, माँ तो मानों पत्थर ही हो गई है। आज छः महीने होने को हुए। मैंने उसके मुँह पर मुस्कान तक नहीं देखी। अंदर ही अंदर घुलती जाएगी, पर बताएगी कुछ नहीं। कमजोर इतनी हो गयी है कि कभी-कभी तो उसे चक्कर भी आ जाते हैं। चेहरे पर मुर्दनी ही जमी रहती है हर वक्त। मुझे अब वह प्यार भी नहीं करती पहले जैसा और न गुस्सा ही। उसकी चुप्पी ही पूरी सजा है मेरे लिए। काम छोड़ने को कहूँ तो कोई जवाब नहीं देती। कई बार कहा मैं बड़ा हो गया हूँ। तुम आराम करो, मैं काम करूँगा। सुनती ही नहीं। जो मिलता है महीने भर में खत्म हो जाता है। कभी उसने यह नहीं सोचा कि कभी वह या मैं बीमार ही हो जाएं तो दवा कहाँ से आएगी! आजकल तो बिना पैसे के मिट्टी भी नहीं मिलती।

माँ के बीमार होने की कल्पना ही काली को काम करने की शक्ति प्रदान करने के लिए काफी है। उसके हाथ और तेज चलने लगते हैं। विचारों की कड़ियाँ फिर जुड़ीं - माँ को नहीं मालूम कि मैं यह काम करता हूँ। अगर पता चल जाए, तो पता नहीं उसे कैसा लगे? यह जानकर वह दुखी होगी या खुश यह पता लगाना भी तो मुश्किल है। इसलिए तो डरता हूँ, बताता नहीं। हर समय मन अनहोनी शंका से कांपता रहता है। मन में न जाने क्यों डर बैठ गया है।

दरवाजे की खडखड़ाहट से काली की तंद्रा भंग हो गई। माँ आ गई। वह बौखला गया। जल्दी-जल्दी सामान छुपा कर दरवाजा खोलता है। माँ थकी-हारी अंदर आई। चेहरे पर मुर्दनी अधिक गहरी है। आते ही रोटी बनाना शुरू। काली चुपचाप रोटी बनाती माँ को देखे जा रहा है। धीरे-धीरे चलते हाथ। निराशा व थकान से टूटा मन व तन। रोटी बन गई। माँ की उदास आँखों के मौन निमंत्रण को काली ने समझा। वह माँ के पास आ बैठता है। माँ ने रोटी परोसी। काली रोटी खाने लगा। सब कुछ धीरे-धीरे यन्त्रवत निस्तब्धता में खोता जा रहा था। न खाने वाले को खुशी या खाने की इच्छा और न खिलाने वाले में चाव या उमंग। सब कुछ मानो जबरदस्ती हो रहा हो। काली दो कौर खाकर ही उठ गया, क्योंकि मन की रुलाई से आँखों में आने वाले आँसू उठने को मजबूर कर देते हैं।

रात को बिस्तर पर फिर काली के मस्तिष्क में विचार श्रंखलाबद्ध होकर आने लगे - माँ ने आज रोटी नहीं खाई। ज्यादा चिंता में लगती है। वह माँ से पूछे भी तो क्या? उत्तर की आशा नहीं की जा सकती। एक बारगी वह माँ को नजदीक सोए हुए महसूसने की चेष्टा करता है। कुछ बात है जरूर जो माँ को खाए जा रही है। मगर बताती नहीं। कई बार पूछा। उसके आगे रोया भी। हर बार की तरह चुप्पी ही उसका उत्तर, वही मुर्दनी चेहरा, सूनी आंखें।

अब तो उसे भी अधिक बोलना अच्छा नहीं लगता। कोई फालतू प्रश्न करे। वह झुँझला उठता है। उसकी आँखों में नापसंदगी की झलक साफ सामने वाला देख लेता है।

सुबह का समय। माँ अभी सोई है। सिर पर कपड़ा बंधा है। काली हैरान, आज पहली बार माँ से पहले उठा है। वह सामने पड़े ड्रम पर बैठ गया। इस समय उसकी आंखों के आगे सोई हुई माँ है, जो नींद में भी परेशान लगती है। बार-बार अपना सिर दबाती, हाथ-पाँव पटकती हुई। काली सोचता है- थक भी तो बहुत जाती होगी। सुबह से छः-सात घरों के काम करना आसान बात नहीं।

लगभग दस-बीस मिनट यूँ ही बीत गए। माँ जाग गयी। काली ड्रम से उठकर माँ के पास आ बैठा।

क्या बात है माँ? क्या तबीयत खराब है?

माँ पूर्ववत मौन है।

काली माँ की बाजू छूकर देखता है।

तुझे तो बुखार है। आज काम पर नहीं जाना। मैं चाय बना दूँ?

काली चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ाकर माँ के पास आ बैठा। माँ की आँख के कोर उसे भीगे-भीगे से जान पड़े। वह सिर झुका लेता है।

काली लगातार जमीन कुरेदे जा रहा है। माँ उसे बिना पलक झपके देखे जा रही है। वह नजर उठा कर देखता है। माँ ने आँखें चुरा लीं। दोनों के बीच बनी लगातार चुप्पी दोनों के दिलों में अपराध भावना का विकास कर रही है।

चाय भी बन गई, टूटे कपों में काली चाय डालकर, एक कप माँ की ओर बढ़ा देता है। अपनी चाय जल्दी-जल्दी सुड़क कर माँ की जगह काम पर निकल पड़ा।

काली यह सोचकर दुखी है कि माँ ने चाय नहीं पी। काली की आँखों में अनायास ही आँसू आ गए। इस तरह माँ ज्यादा दिन चलने की नहीं, यह काली अच्छी तरह जानता है। लेकिन वह क्या करे यह उसे समझ नहीं आता। दिनोंदिन अंधेरी गुफा में दोनों धंसते ही जा रहे हैं। कहीं भी रोशनी की कोई किरण नहीं। क्या यह रास्ता किसी की मौत पर खत्म होगा, यह भी काली नहीं जानता।

रात को काली घर पहुँचा। माँ बेसुध पड़ी है। बुखार काफी तेज। काली घबरा जाता है। आज फिर माँ ने सारा दिन कुछ नहीं खाया। वह अपने लिए भी कुछ नहीं बनाता। जमीन पर ही टूटी चटाई बिछाकर पसर जाता है।

आज काली भी उदास है।

वह सोचने लगता है - क्या करे वह! कहाँ जाए? कभी तो दिल करता है कि अपना सिर पीट ले या जोर-जोर से रोए। उसकी बड़ी बेबसी है।

इसी तरह सोचते-विचारते घंटा बीत गया। काली की तन्द्रा माँ की क्षण-प्रतिक्षण तेज होती कराहटों से भंग हुई। बुखार बढ़ता ही जा रहा है। काली की चिंता भी बढ़ रही है। वह माँ की बीमारी का जिम्मेवार भी अब खुद को समझने लगा है क्योंकि न वह बीमारी के बारे में सोचता और न माँ बीमार ही होती। माँ की कराहटें अब ओर तेज हो चुकी हैं। वह जल्दी से अपना खजाना निकालकर गिनता है। लगभग साठ रुपए। काली फुर्ती से जाकर डॉक्टर बुला लाया। डॉक्टर ने आकर दवा दी। अपनी फीस पच्चीस रुपए लेकर चला गया। काली की सोच में एक क्षेत्र की वृद्धि हुई। पहले सोचने का केंद्र माँ थी। अब माँ, बीमारी और अपनी महीने भर की कमाई की काली को चिंता हो आई है। शरीर से चाहे उसने पच्चीस रुपए अपने से अलग कर लिए हों लेकिन मन ने फीस अदा मजबूरी में ही की।

काली सारी रात जागता रहा। घंटे-घंटे बाद माँ को छूकर बुखार का अंदाज लगाता रहा।

अब सुबह हो चुकी है। माँ को आराम है। बुखार के साथ काली की चिंता भी कम है। नींद खुलते ही माँ पूछती है- रुपए कहाँ से लिए?

काली थोड़ा मुस्कुराता है। सोचता है - माँ बोली तो सही।

काली को चुप देखकर माँ के चेहरे के भाव बदलने लगे हैं। काली यह देखकर घबरा जाता है। वह माँ को लिफाफे बनाने की बात कहता है।

काली, माँ के चेहरे के भाव पढ़ने की चेष्टा करता है। माँ की आँखें बंद हैं। दोनों आँखों से एक-एक आंसू गालों पर ढुलक चुका है। होंठ इस अंदाज से फैले हैं मानों मुस्कुरा रहे हैं।

काली हर बार की तरह इस बार भी नहीं समझ पाता कि माँ को इससे प्रसन्नता पहुँची है या दुख हुआ है।

सुरेन्द्र भसीन

बचत

मुद्रा गुस्से में कोचिंग की तरफ बढ़ रही थी देर से उठने पर माँ ने कितना लम्बा भाषण दे डाला था, भला समय को भी कोई बचाता है क्या? माँ भी न नजाने क्या क्या उपदेश देती रहती है। समय बचाओ पैसे बचाओ रिश्ते बचाओ, सिर्फ बचत और बचत। इसी सोच के साथ मुद्रा अपनी कोचिंग में।

क्या करती निशा भी, नीरज एक सड़क हादसें में अपनी दोनों टाँगे गँवा चुका था, मुद्रा तब महज पन्द्रह साल की थी नीरज एक मल्टीनेशनल कम्पनी में सीनियर मैनेजर था, सब बढ़िया चल रहा था कि अचानक एक दिन लोन की किश्त भरने बैंक जा रहा था तब वह सड़क हादसे का शिकार हो गया, हादसे में अपने दोनों पैर गवाँ चुका नीरज बात बात पर परेशान करता, बहुत समझाया था निशा ने अपनी हैसियत से बड़ा मकान और लोन न लेने के लिए पर नीरज ने उसकी एक नही सुनी। निशा ने कहा भी था बेटी की फीस और बाकी खर्चे में बचत नही हो पाती, और नीरज उसे सांत्वना देता की जब तक हाथ पाँव सलामत है चिंता की कोई बात नही और निशा उसके आगे कुछ नही कह पाती, इस हादसे ने दोनों को तोड़ दिया था, किसी तरह ऑफिस के काम निपटा दो-चार घरो में बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती वह देर रात घर पहुँचती फिर घर के काम और नीरज की बड़-बड़ क्या करता वह खुद भी उकता गया था।

घर बैठे वह निशा के लिए परेशान होता था जानता था वह सब की वह चाहकर भी कुछ नही कर सकता था। निशा लोन और मुद्रा की पढ़ाई अपनी तनख्वाह से चलाती पर ट्यूशन के पैसो को हाथ नही लगाती। मुद्रा की आगे की पढाई के लिए बचत बहुत जरूरी थी और बचत नही करने का हश्र वह सामने देख रही थी। मुद्रा की कई ख्वाहिशों पर पाबंदिया थी जानती थी आज की पाबन्दियाँ उसके कल को सुनहरा रूप देंगी। उसे बेटी का गुस्सा होना मंजूर था पर कल का भविष्य उसका अँधेरे में देखने में राजी नही थी।

आज अगर नीरज बचत करता तो यह हालात नही होते कोचिंग में पढ़ाई के साथ हर तरह की बचत करना सिखना भी मुद्रा के लिए बेहद जरूरी था। शायद यही सतर्कता उसके आने वाले भविष्य की बचत करने में सक्षम भी था..!

सुरेखा 'स्वरा'

विक्षिप्त की व्यथा!

माधवी उपाध्याय

मेरे मुहल्ले में एक विक्षिप्त रहता है। वो दिन-रात घूम घूम कर पास में पड़े कचड़े से खाना खोजकर खाया करता, साथ में दो कुत्ते भी हमेशा उसके संग रहा करते थे, दूसरे शब्दों में, उसके दुख-सुख के साथी, साथ में घूमना, खाना और सोना यानी उस पागल की सुरक्षा का पुर्ण दायित्व उन कुत्तों ने सम्भाल रखा था। हम मनुष्यों से ज्यादा समझदार और वफादार ये कुत्ते होते हैं ।

आस-पास से जानकारी हासिल करने से मुझे पता चला कि, वो पागल व्यक्ति पास ही के एक अच्छे घर से है, किन्तु उसकी विक्षिप्तता की वजह से उसके परिवार वालों ने उसे त्याग दिया है, और वो दर-दर की ठोकरे खाने के लिए मजबूर है। वो पागल राह चलते किसी पर भी इटा पत्थर चला दिया करता था। जो व्यक्ति उसकी स्थिति से वाकिफ थे, और जिनमे थोड़ी सी मानवीयता शेष थी, वे उसे कुछ भी नहीं बोलते थे, और उसे कुछ खाने-पीने के लिए भी दे दिया करते थे। बहुत तकलीफ होती थी, उसकी ऐसी स्थिति देखकर! एक दिन की घटना ने मुझे हतप्रभ कर दिया। उस पागल ने रोज की भांति, एक राहगीर पर पत्थर फेंक दिया, अब क्या था, उस राहगीर को बहुत गुस्सा आया, उसने आव देखा न ताव, वो भी उसके सिर पर पत्थरों से मारने लगा, तमाशा देखने के लिए भीड़ जुट गई। उसके सिर में बहुत गहरी चोट लगी थी, खून निकल रहा था। कुछ लोगों ने मिलकर उसे किसी तरह से बचाया और छोड़ दिया उसे वैसी ही हालत में। वह पागल उसी अवस्था में चल पड़ा अपने गन्तव्य की ओर न उसे किसी प्रकार की दर्द की अनुभुति, ना ही कोई पीड़ा!

उसके सिर में गहरी चोट के कारण भयानक घाव बन गए बन रिस रहे थे। ऐसा लग रहा था, मानो उसके सर में कीड़े पड़ गए हों। मुझे आश्चर्य तब हुआ जब वफादार कुत्तों ने उसके घाव को चाट-चाट कर उसे धीरे-धीरे ठीक कर दिया, और वो स्वस्थ हो गया। मुझे खुशी हुई उसे स्वस्थ देखकर, किन्तु मैं यह सोचने को विवश हो गई की, ईश्वर की लीला भी विचित्र है। जिसके जीने की कोई सार्थकता नहीं, वो नाली के कीड़े की भांति इस सँसार में जीवित रहने को मजबूर है। आश्चर्य तो यह है कि, इस घटना के पांच वर्ष गुजर गए, वो पागल आज भी वैसे ही अवस्था में है। कुदरत और समय सबके घाव भर देता है। उसका जीना भी हम सबके लिए एक प्रेरणा देती है, वरना पागल तो हम सभी हैं, फर्क इतना है कि, हमारे पास लक्ष्य है और वो लक्ष्य विहीन, क्योंकि उसे सही गलत की समझ नहीं है।

माधवी उपाध्याय

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

प्रज्ञा सुमेध जायसवाल

फिक्र से क्या डरना

अपनी तकदीर से लड़ता,
आज का इंसा,
कहि कैद है आज का इंसा,
जो कभी उड़ते पंछी की तरह,
सैर पर निकल पड़ता था,
आज वो कैद है इंसा।
खामोश गलिया है,
वो रास्ते भी मदहोश है,
दहशत में दुनिया है,
मिला नही वो घर से,
नजाने किस हाल में,
मेरी गुड़िया है।
भूखा हू मैं तो क्या,
उन भूखो का निवाला,
बन जाता हूं,
अपने देशवासियों की मदद में,
मैं जीजान से जुट जाता हूं।
फिक्र मुझे न जिंदगी की है,
कुर्बानी अपनी दे जाता हूं,
मेरे मुल्क में अमन चैन रहे,
बस यही दुआ में कर जाता हूं।
मैं पुलिस प्रशास, डॉक्टर,
सफसी कर्मी हूं,
मुझे फिक्र नही अपनी,
मैं अपने वतन की,
फिक्र कर जाता हूं।
आज नही तो क्या,
कल घर आँगन में खेलूंगा,
अपनी बेटी के साथ,
मैं भी फिर सैर करुगा,
हालातो ने घेरा है,
उस की झलक नही देखी मैं ने।
आज हालातो से लड़ना है,
मुझे देश रक्षा करना है,
जिन घरों के बुझे चिराग।
उनको मुझे रोशन करना है,
तकदीरों से लड़ते इंसा को,
आजाद मुझे भी करना है,
अपनो की फिक्र सता रही,
मुझे अपनी फिक्र से क्या डरना है।

ईला सागर रस्तोगी

वायरस की फैक्ट्री

चीन से चलके धीमे धीमे,
आया वायरस एक भारत में।
विदेशों में मचाके तबाही,
जड़ें जमा ली यहां भी इसने।
शाणा बहुत वायरस है यह,
लेता कब्जे में चुपके चुपके।
न कोई लक्षण, न कोई बुखार,
चौदह दिन में फैक्टरी तैयार।
शरीर भले ही रहे हमारा,
पर नियंत्रण कोरोना का सारा।
कोशिकाएं भी शरीर की अपनी,
बनाएं प्रतियां इसी की ही निरी।
बढ़ता रहता वायरस भीतर,
नुकसान पहुंचाकर, जीव को भरसक।
शरीर भी करता कोशिश बचाव की,
होता असफल कोरोना वार के समक्ष।
न कोई दवा, न कोई उपचार,
एक उपाय सोशल डिस्टेंसिंग मात्र।
महामारी से ग्रस्त जब होता,
रोग की फैक्ट्री तब बन जाता जीव।
बीमारी फैलाता एक से सौ तक,
खांसते छींकते, हर शारीरिक द्रव्य से।
सामाजिक दूरी यूं ही बनाए रखें,
कुछ दिन घर में ही विश्राम करें ।
ये क्षण भी गुजर जाएंगे आखिर,
जीत जाएंगे युद्ध कोरोना से।
सिद्ध करने को सामर्थ्य भारतवर्ष का,
लड़े देशवासी समस्त, होकर एकजुट।

देवयानी नायक

गौमाता कहलाती गाय है

बछड़े को ही नहीं हमें भी अपना दूध पिलाती गाय
इसलिए तो सारे जगत में गौमाता कहलाती गाय
सीधी-सादी प्यारी-प्यारी सबसे न्यारी उपयोगी
और पशु हैं कई जगत में किंतु मन को भाती गाय
स्नेह सूत्र से बंधी हुई है नहीं भूलती अपना घर
चाहे कितनी दूर हो गई हो लौट शाम को आती गाय
जन्मदायिनी हैं बैलों की हम पर करती है उपकार
इस धरती पर कृषि जगत को कितना लाभ दिलाती गाय
दूध, दही, तक्रम,पनीर, मक्खन, चक्का, मावा घी से
मानव जीवन में स्वादों के अनगिनत रंग जमाती गाय
सरल सहज प्रवृत्ति इसकी सादाभोजनउच्च प्रदाय
गौ पालक ही नहीं सभी से जग में आदर पाती गाय
कृष्ण-कन्हैया स्वयं चरैय्या थे कानन में गैय्या के
आज तलक अपनी भाषा में कान्हा के गुण गाते गाय
लापरवाही अपनी है कि बना टाइगर राष्ट्रपशु
अगर चाहते हिंदुस्तानी यह पदवी पा जाती गाय
श्यामा, श्वेता, कबरी, भूरी अथवा हो रक्ताभ रशीद
गैय्या, धेनु, सुरभी, गौ, भद्रा गौरी कहलाती गाय।

उक्त गौ माता की स्तुति इंदौर के रशीद अहमद शेख द्वारा लिखी गई है। इनकी रचना में गौमाता को राष्ट्र पशु घोषित करने की जो पैरवी की गई है इससे मुझे इनके रचना बहुत पसंद आई, क्योंकि गाय से हमें वह सब प्राकृतिक चीजें प्राप्त हैं जो हमें कहीं से भी उपलब्ध नहीं है ।इस हमारी माता ने ईश्वर से लेकर मनुष्य तक सभी की सेवा कि है और करती ही आ रही हैं,पर हमने क्या किया? अतः आज भी हम गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित होने के लिए एक अभियान चला सकते हैं, जिस तरह से हम हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक अपना अभियान चला रहे हैं। उसी के साथ-साथ इस अभियान को भी चला कर गाय को उसके वास्तविक अधिकार 'राष्ट्रपशु' बनने का दे सकते हैं।

अदिति रूसिया

नजारा

कितना मनोहारी दृश्य है
चारों ओर शांति ही शांति है
न मोटर गाड़ी का कोलाहल
न है कोई प्रदूषण
दिखाई देती है तो सिर्फ
प्रकृति की अद्भुत छटा
पक्षियों का कलरव
जो मन को आनंदित करता है
नदियों का कलकल बहता पानी
मंत्र मुग्ध करती
कोयल की कूँ कूँ
पेड़ों पे बैठे तोतों का झुंड
जो हवा का झोंका आते ही
आसमान की ऊँचाइयाँ छूने
होता है आतुर
वो तालाब में बगुलों का उड़ना
मन आनंदित हो उठता है
जब घर की छत पर बैठ
देखतीं हूँ इस मनोरम दृश्य को
ये प्रकृति का अद्भुत नजारा
मंत्रमुग्ध कर जाता है

बनो! मददगार

सीता गुप्ता

जब फल लदते हैं डाली पर,
वह नितदिन झुकती जाती है।
औरों को देने की खातिर,
वह खुशी से शीश झुकाती है।

तुम भी! यदि फली डाली हो,
तो सबसे किस्मत वाले हो।
जो इस महामारी के दौर में,
तुम चैन से घर में बैठे हो।

पर अब मुसीबत आगे है,
जो बैठे भूखे-प्यासे हैं।
उन तक भी भोजन पहुँचे अब,
जो राह हमारी तकते हैं।

और.. चिंता तो अब बढ़ रही,
जो भूखे पेट भी सोते थे।
जब किसी दिन मजबूरी में,
धर्मस्थल जा न पाते थे।

अब तो देवालय मंदिर बंद,
इस कोरोना में सब बंद।
जहाँ लंगर रोज ही बटते थे,
ऐसे गुरुद्वारे भी हैं बंद।

वे भी बेबस लाचार खड़े,
जो रोज कमाते खाते थे।
वो असहाय और गरीब हुए,
जो कहीं फुटपाथ पर सोते थे।

सरकार सभी को देख रही,
पल-पल आगे की सोच रही।
कैसे सबको संभालेगी,
नए-नए कदम वह उठा रही।

लेकिन ये दौर अब संकट का,
वो तुमसे भी कुछ माँग रहा।
जो लदी फलों की डाली हो,
आगे आओ वह कह रहा।

वो बंद तिजोरी खोलो अब,
तुम मदद को हाथ बढ़ाओ अब।
इस देश की अर्थ-व्यवस्था संग,
तुम मानव धर्म निभाओ अब।

जो भी कर सकते हो कर दो,
इंसानी रिश्तों के नाते।
इस महामारी से निपटने में,
जीवन को देने के नाते।

ये ऐसी विपदा आई है,
जो घनी रात सी छाई है,
पर ईमानदारी जो निभ गई,
तो आगे फिर अरुणाई है।

बाल्यकाल में आत्मनियंत्रण/सेल्फ कंट्रोल क्यों जरुरी?

डॉक्टर वासिफ काजी

बाल्यावस्था जीवन की वह महत्वपूर्ण अवस्था होती है जिसमें किसी बच्चे के पूर्णरूपेण विकास का श्रीगणेश होता है इस अवस्था में प्रदत्त संस्कार, आजीवन उसका मार्ग प्रशस्त कर उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। आत्मनियंत्रण का शाब्दिक अर्थ है स्वयं की इंद्रियों पर काबू एवं स्वविवेक से कार्यों का संपादन एवं प्रबंधन।

आत्मनियंत्रण का अप्रत्यक्ष रूप से अर्थ यह भी है कि बिना किसी निर्देश के बच्चों द्वारा स्वयं उचित एवं त्वरित निर्णय लेना । आत्मनियंत्रण से ही आत्मविश्वास का संचार होता है। उसके लिये अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को स्वयं गृहकार्य करने के लिए, अपने छोटे छोटे कार्य स्वयं करने के लिए प्रेरित करें ।

प्रातःकाल जल्दी उठने के लिये भी प्रेरित करें, छोटी प्रतियोगिताएं आयोजित करें एवं उन्हें कुछ उपहार दे ताकि उनका उत्साहवर्धन हो।

आत्मनियंत्रण से सृजनात्मकता भी बढ़ती है ,आलस्य भी दूर भागता है। हो सकता है शुरुआत में बच्चा घबरा जाये परंतु आप उसको कविता बोलने, किताब पढ़ने और स्वयं तैयार होने के लिए प्रेरित कर यह कहें कि वो सब कुछ खुद कर सकता है खुद के बलबूते पर।

उसे भावनाओं पर नियंत्रण भी रखना आ जायेगा यदि वह सेल्फ कंट्रोल सीख जाये। मेहनती हाथों से भाग्य लिखा जा सकता है परंतु आलसी हाथों से स्वयं के भाग्य को दुर्भाग्य मे बदलने में देर नहीं लगती, उसे इस बात का अहसास कराया जाये ।

निष्कर्ष यह है कि आत्मनियंत्रण से स्वावलंबन का द्वार खुलता है जहां से सफलता के मार्ग पर पहुंचा जा सकता है बच्चों पर किसी कार्य को करने के लिए दबाव न बनाते हुए उन्हें खुद निर्णय करने का अवसर दे ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके हां यदि कुछ गलत लग रहा हो तो उसका मार्गदर्शन करे । आत्मनियंत्रण, समय नियोजन भी सिखाता है ।

हेमन्त बोर्डिया

गज़ल

खिजां की राह में जैसे बहार आ जाये
यूँ जिन्दगी में कोई, गमगुसार आ जाये

हर इक तरफ हैं खड़े मौत बांटने वाले
खुदा करे कि कोई जां निसार आ जाये

उचट गया है मेरा दिल सफर के मेलों से
कि अब सुकून जो दे, वो दयार आ जाये

अभी है वक्त, ये सैलाब रोक सकते हो
न जद में इसकी तुम्हारा हिसार आ जाये

नये से रिश्ते का तकरार ने ये हाल किया
नये से पुल में ही जैसे दरार आ जाये

तुम्हारे लहजे की अय्यारियाँ हैं कुछ ऐसी
तुम्हारे झूठ पे भी एतबार आ जाये

उमाकान्त दीक्षित

कविता की मौत

बहुत ढूंढा, पता नहीं
किधर गई कविता...
सड़क पर दम घुटकर
मर गई कविता...

बहुत ढूंढा, पता नहीं
किधर गई कविता ...

कल तक घर के
मुक्त आंगन में
नमस्ते नमस्ते
खेल गई कविता...

उन्मुक्त, निश्चिन्त, बिंदास
किंतु अनायास
पा प्रेतछाया का आभास
सहम गई कविता...

पांच दिन दुबक कर
दिहाड़ी भी भूल कर
ताला बंदी की आहट सुन
सिहर गई कविता...

मरकज का अचरज देख
साद का जिहाद देख
नफरत के समंदर में
उतर गई कविता...

मालिक का व्यवहार देख
बिगड़े आसार देख
रक्षक का प्यार देख
डर गई कविता...

सिर पर गठरी राख
पैदल ही पटरी माग
भूखे पेट घर को ताक
दौड़ गई कविता...

राह में रोक रोक
डंडों से ठोक ठोक
चने की गांठों सी
ठोंकी गई कविता...

मंजिल से पहले ही
कोरोना के मरीज सी
सड़क पर लुट पिटकर
मर गई कविता...

पुस्तक समीक्षा- पवन अरोरा

काव्य संग्रह- निबौरी
कवियत्री- डॉ मीनाक्षी सुकुमारन, नोएडा
समीक्षक- पवन अरोरा, दिल्ली

शरीर मे लहू दौड़ता है
सांसे चलती है
दिल धड़कता है
वैसे ही लिखना हमारे रोम रोम में बसता है।

अहा क्या बात लिखी है कवियत्री डॉ मीनाक्षी सुकुमारन जी ने

अपने लिखित काव्य संग्रह जिसका नाम 'निबौरी' है

मुझे क्या कभी आप को भी अपने माननीय प्रधानमंत्री जी की मन की बात इतनी पसन्द न आई होगी कैसे भूल सकते है

मगर डॉ मीनाक्षी जी ने अपनी मन की बात इतनी सुंदरता से कहीं की पाठक को अपने संग जोड़ लिया

कभी भली लगे
कभी ठगी लगे
कभी हँसती
कभी रुलाती
कभी रूठी
कभी मानी सी
कभी अपनी सी
कभी परायी सी
लगे है यह पल पल
रंग बदलती
तीखी फीकी मीठी कड़वी
'निबौरी' सी है जिन्दगी

कमाल है न!

इस काव्य संग्रह का विमोचन भव्य स्तर पर दिल्ली में चन्द महीने पहले सम्पन्न हुआ जिसमे हम मित्र शामिल हुए

मित्रो हमारी डॉ मीनाक्षी जी बहुत अच्छी लेखिका तो है ही उस से अच्छी वह सीरत की हसीन मल्लिका है मगर यहां भी एक बात कहूँगा डॉ मीनाक्षी जी व निरिजा मेहता जी जिनके प्रति मेरे दिल मे हमेशा आदर रहा सरलता, कोमलता, अपनापन, स्नेह, बड़पन कवियत्री ही नही हर अजीज इनसे मिल सीखे कमाल है नमन है मेरा इन दोनों मित्रो को..

तो यह थी मेरे भी मन की बात

अब मन की बात से आगे बढ़े तो आते है रचनाओं पर जो पाठक को पढ़ने को मिलेंगी वह क्या कहती बोलती है से पहले बता दूँ...

मित्रो इस काव्य संग्रह में कुल बासहट रचनाये है व पुस्तक का मूल्य दो सौ पचास रुपये रखा गया है

रचनाओं के सफर को पूरा करने में

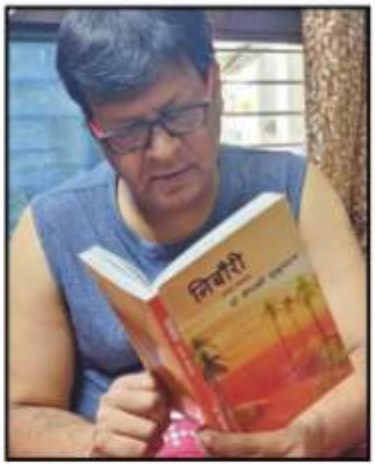

बाहस्ठ कदम चलना पड़ा

आगाज हुआ 'मानव बनाम आदिमानव' से जहाँ एक कटुसत्य मिला सच मे मानव भागम भाग में सब भूल किन विषम परिस्थितियों में आज खुद को खड़ा कर लिया सोचनीय है

दूसरा कदम 'शब्द' से परिचय करवाता है जिसमे लेखक पूर्ण एक बार सच का आईना दिखाता है

चलो अब 'ये उन दिनों की बात है' में कदम रखता हूँ आप चलो साथ मेरे साथ लिए चलता हूँ

ये उन दिनों की बात है
जब घर से लगते थे
अपनेपन, स्नेह, आदर से
महकती थी रसोई
और पकवान
खिलखिलाता था मन आँगन!
पढ़ वहाँ से लौट आने का मन न था
मगर कहते है जीवन बढ़ने का काम

'यादों के सिक्के' उठा में आगे बढ़ा कदम डर कदम चलता रहा

सफर सुहाना बनता जा रहा था

'कड़वा सच' यही है रिश्तो को जीना कहाँ आसान रहा हमारा कभी किसी को मंजिल मिली कभी मिल सका न किनारा
अंत में मिला तो क्या मिला तन्हाइयां

कहते है किसी को जानने व पढ़ने के लिए एक सप्ताह मिले तो हम उन्हें काफी हद तक जान लेते है ऐसे ही पहले सात कदमो के इस सफर में मुझे लगा सफर अच्छा कटेगा
जो सच भी रहा इस सफर में मुझे

जीवन के हर रंग के रंगों से अवगत करवाया कवियत्री ने

कहाँ है भगवान, जिन्दगी कुछ इस तरह जीती हूँ, नारी हूँ मैं, अनकही टीस, सरहद, तिरंगा, चाय की प्याली, मिट्टी के दीये, यादे, मंझधार, कहर,
मगर साहब

'शादी के लड्डू' जो खाये वह पछताए जो न खाए वह पछताए के बारे में गर हम न बताये यह सही न रहेगा कवियत्री ने बड़ी चतुरता से घूम घुमा वही ला खड़ा कर दिया सवाल को जवाब

जवाब को सवाल बना लड्डू को उठा वैसे ही प्लेट में धर दिया बताया नही स्वाद कैसा रहा मगर सच कहूँ अपना तो लड्डू पाचक स्वाद मीठा है जी

अच्छा यह भी एक बात खूब हुई लड्डू खाने के बाद 'सच्चा प्यार' मिल जाये तो जीवन की बगिया खिल जाये

जीवन रूपी इस गाड़ी के दो पहिए नर, नारी की प्रेम गाथा का सुंदर वर्णन है इश्क की सोंधी सोंधी महक ने महका दिया मुझे

जब प्यार की बात हो रही हो तो अचानक ष्बैरी पीरष् का दर्द कहाँ देखने को जी चाहता मगर जीवन की बेला में यही तो होता आया

कभी मीठा कभी कसैला स्वाद जो हमे मजबूर करता सोचने को जीवन क्या रिश्ते क्या यही रुकते ठहरते है हम पढ़ने को जीवन को वक्त को

तब सवाल खड़ा होता 'आखिर कौन हूँ मैं' क्या अस्तित्व है मेरा मैं किस लिए कौन कहाँ मेरा

एक बेटी
एक बहन
एक पत्नी
एक बहू
एक माँ
एक औरत में रूप अनेक लिए
.....आखिर कौन हूँ मैं!!

सुनो जवाब है जग जननि तुम हो पूज्नीय हर रूप में लाजवाब जिसका कोई नही जवाब तेरा हर किरदार गजब है करुणाजनक हृदय, प्यार का आँचल, सीरत की पाक कोई न तुझसा मिल सका ढूंढे चाहे हम धरती पर या ढूंढे आकाश

अंत मे यही कहूँगा

'शब्दो के बाण' खूब सुंदरता से चलाए 'मन' चाहता पढ़ता रहूँ
'प्यास ये कैसी' जो बढ़ती जाए

ष्निबौरीष् का यह सफर शानदार रहा मैं दिली बधाई देता हूँ डॉ मीनाक्षी सुकुमारन जी को इस काव्य संग्रह को सुंदरता से कागज की देह पर गढ़ने के लिये।

पवन अरोरा

नई कविता

उमाकान्त दीक्षित

बहुत ढूंढा, पता नहीं
किधर गई कविता ...

कल तक घर के
मुक्त आंगन में
नमस्ते नमस्ते
खेल गई कविता ...

उन्मुक्त, निश्चिन्त, बिंदास
किंतु अनायास
पा प्रेतछाया का आभास
सहम गई कविता...

पांच दिन दुबक कर
दिहाड़ी भी भूल कर
ताला बंदी की आहट सुन
सिहर गई कविता ...

मरकज का अचरज देख
साद का जिहाद देख
नफरत के समंदर में
उतर गई कविता ...

मालिक का व्यवहार देख
बिगड़े आसार देख
रक्षक का प्यार देख
डर गई कविता ...

सिर पर गठरी राख
पैदल ही पटरी माग
भूखे पेट घर को ताक
दौड़ गई कविता ...

राह में रोक रोक
डंडों से ठोक ठोक
चने की गांठों सी
ठोंकी गई कविता ...

मंजिल से पहले ही
कोरोना के मरीज सी
सड़क पर लुट पिटकर
मर गई कविता...

बहुत ढूंढा, पता नहीं
किधर गई कविता...
सड़क पर दम घुटकर
मर गई कविता...

कन्या पूजन

मान सिंह मनहर

आज शारदा के पैर जमीं पर न थे, वह बहुत ही व्यस्त थी। घर में कन्या पूजन जो रखा था। शारदा 'रामू काका भोज तैयार है क्या? कोई कमी नहीं रहनी चाहिए।आज माताराणी हमारे घर पधारी हैं।'

रामू काका- 'जी मालकिन भोज तैयार है, बस माता रानी का प्रसाद बन रहा है'।

शारदा-'अरे ! भाई जल्दी करो। कन्याओं के रूप में माँ आ गईं हैं, कहीं रूठ कर चलीं न जाएँ'!

तभी पीछे से आवाज आती है,

'नमस्ते जीजी' शारदा पलटते हुए, 'अरे ! सुमित्रा तू आ गई, और सब कुशल हैं'।

सुमित्रा- 'हाँ जीजी सब कुशल मंगल हैं, आप कैसी हो और बहूरानी कहाँ है? दिख नहीं रही'

शारदा- 'उसकी तबियत ठीक नहीं थी । हॉस्पिटल गई है, तू तो जानती है कि उसका कई बार.....!

'पता नहीं सुमित्रा माँ हमारी मनोकामना कब पूर्ण करेंगीं, कब हमारे कुल में उजियारा होगा'।

सुमित्रा- 'हताश न हो जीजी, माँ की कृपा से अबकी बार सब ठीक होगा'।

तभी फोन की घन्टी बजती है।

शारदा- 'अच्छा तू बैठ मैं देखती हूँ किसका फोन है'।

शारदा- 'हेलो! हाँ बेटा, कैसी तबियत है बहू की, और क्या कहा डाक्टर साहब ने'

उधर से आई आवाज ने उसके चेहरे के भाव बदल दिए ।

शारदा-'फिर..है, सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कर दो दीपक, इस बार भी मेरी न है...!

राजेश श्रीवास्तव 'प्रखर'

गज़ल

कुछ अलग अपना भी तेवर है तो है।
दिल हमारा भी सिकंदर है तो है।

ग्रन्थ कितनें मजहबी लिख्खे गए,
उनपे भारी ढाई अक्षर है तो है।

ढूंढता हूँ इश्क मिल जाये कहीं,
दिल तुम्हारा पर ये पत्थर है तो है।

खत्म लगती बारहा होती कहाँ,
जिंदगी भी एक अवसर है तो है।

बस कसीदे ही लिखूँ मुमकिन नहीं,
आग दिल मे एक भीतर है तो है।

हमनें फूलों की उसे सौगात दी,
हाथ मे उसके ये खंजर है तो है।

मीठी नदियाँ पी गया कितनी मगर,
फिर भी ये खारा समंदर है तो है।

गुनगुना उठता है वो अक्सर प्रखर,
इक छुपा दिल मे कलन्दर है तो है।

भवानी शंकर खत्री

दिल की पुकार

खबर मेरी ना लीनी रे बहुत दिन बीते
सूनी पडी है कुंज गोलियां सूनी पडी है अटारी
बैरन हो गयी ये रात इस अभागन की
बीते रे बहुत दिन बीते
पहले मिलन की रात सुहानी दे जाती
मीठा दिलासा इस दिल को
जो अब बन गयी विछोह की व्यथा
बुरा हो इस बैरी कोरनवा का
बीते रे बहुत दिन बीते
अब इक सांस चल रही है
तुम बिन इस विरहिणी की
इस आस में कि इक दिन ये
कारी अंधियारी रात के बादल छंटेगे
बागों में कोयल फिर मधुर गीत गायेंगी
जब फिर सखियां हास परिहास संग
झूला झलायेंगी बीते रे बहुत दिन बीते।

जीवनशैली

शिखर चंद जैन

थोड़े की जरूरत में बहुत सारा खोजते हम

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां सब कुछ बहुतायत में उपलब्ध है। सुविधाएं अंतहीन हैं और बाजार ढेर सारे विकल्पों से भरे पड़े हैं। क्या आप जानते हैं कि यही अधिकता हमारी मानसिक अशांति, चिंता, दुख, बेचैनी और अवसाद की सबसे बड़ी वजह है। असल में आज की तारीख में हमें सबसे ज्यादा परेशान वह चीज करती है जिसे हम खरीद नहीं पाए। इंटरनेट पर सर्चिंग हो, आइसक्रीम पार्लर हो, अस्पताल हो, मूवी थिएटर हो, साड़ी की दुकान हो या टूथब्रश और साबुन शैंपू जैसी रोजमर्रा की छोटी-छोटी चीजें, हमारे सामने इतने विकल्प होते हैं कि हम कंफ्यूज और बेचैन हो जाते हैं कि आखिर इनमें से कौन सा चुनें। हालत ये है कि जो टीवी हमने लिया उससे अलग दूसरे के पास है और उसमें कोई एकाध फीचर अलग है जो भले ही काम का नहीं है तो भी हम दुखी हो जाते हैं।

ज्यादा नहीं, आज से कोई १५-२० साल पहले जाकर देखिए। हर चीज के सीमित विकल्प होते थे। शादी में खाने के आइटम गिनती के होते थे, फिल्में थोक भाव से नहीं आती थी बल्कि महीने में जो एक आध फिल्म आती थी वही थोक भाव में चलती थी। सामाजिक स्तर पर दिखावा आज जैसा नहीं था। तब हम एक उपभोक्ता के रूप में इतने बेचैन, दुखी और कंफ्यूज बिल्कुल नहीं रहते थे। कमरे में फर्नीचर के नाम पर एक गद्दा और अलमारी होती थी, जिसमें पूरा परिवार अपने कपड़े रखता था। आइसक्रीम या चॉकलेट की कुछ लोकप्रिय वैराइटीज होती थीं। कभी-कभी उन्हें खाकर ही बड़ा आत्म संतोष होता था। लेकिन अब इन चीजों को चुनने के लिए भी काफी माथापच्ची करनी पड़ती है।

ज्यादा चॉइस यानी ज्यादा टेंशन

'एज ऑफ अबेंडन्स' यानी 'बहुतायत के युग का जीवन पर प्रभाव' पर अध्ययन करने वाले सोशल साइंटिस्ट कहते हैं कि विकल्पों की यह बहुतायत सुखी और खुशहाल करने के लिए बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। जरूरत से ज्यादा विकल्पों की उपलब्धता इंसानी दिमाग को पैरालाइज कर सकती है। जिससे अंत में हम वह खरीद लेते हैं जो हमारे लिए ठीक नहीं। अपनी पुस्तक 'पैराडॉक्स ऑफ चॉइस' में अमेरिकी मनोविज्ञान और सोशल थ्योरी के प्रोफेसर बेरी श्वार्टज ने कुछ ऐसा ही लिखा है।

हार्वर्ड लॉ स्टूडेंट पेटे डेविस ने 'व्हाट नेटफ्लिक्स टॉट मी अबाउट लाइफ' इस विषय पर अपने स्पीच में कहा कि ब्राउजिंग की स्वतंत्रता ने यूथ का चैन छीन लिया है ।आधे घंटे तक विभिन्न फिल्मों की सर्फिंग और सर्चिंग करने के बाद वे कोई फिल्म नहीं देखते और कंफ्यूज व परेशान होकर बैठ जाते हैं।

आपने देखा होगा कि जिन रेस्टोरेंट में आपको सब्जियों, रोटियों व अन्य डिशेज के बहुत सारे विकल्प मिल जाते हैं वहां निर्णय लेने में काफी देर लग जाती है और तब तक आप की भूख मर जाती है। जबकि थाली सिस्टम या सीमित विकल्पों वाली जगह आप ज्यादा अच्छी तरह संतुष्ट होकर भोजन कर सकते हैं। कहीं जाने के लिए पहले एक-दो विकल्प होते थे या तो टैक्सी ले लें या बस से चले जाएं लेकिन अब आपके पास ओला, उबर, मोटो राइडर, प्राइवेट कार जैसे कई ऑप्शन हैं। स्मार्टफोन के दर्जनों ऑप्शन है। एप्स के ५० ऑप्शन है। शॉपिंग के अनगिनत विकल्प हैं। किसी मॉल से ले लें, मोहल्ले की दुकान से लें, बड़े बाजार से ले या ऑनलाइन शॉपिंग करें। ऑनलाइन शॉपिंग के भी कई विकल्प हैं।

कम रखें विकल्प ---

मनोचिकित्सक संजय गर्ग कहते हैं, इतने सारे विकल्प आपको मानसिक रूप से थकाने के साथ-साथ आपके मन में चिड़चिड़ापन और बेचैनी का भी सबब बन जाते हैं। इससे समय नष्ट होने के साथ-साथ आपकी प्रोडक्टिविटी भी कम होती है और अक्सर निर्णय गलत होने पर चॉइस भी गलत हो जाती है। जिससे पश्चाताप की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इंसानी दिमाग दुविधा और संदेह की स्थिति से ज्यादा देर तक नहीं जूझ पाता।

न लें दिल पर बोझ -

क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट दीपिका चोपड़ा ने माइंडबॉडीग्रीन डॉट कॉम में लिखा है, सबसे पहले तो हमें यह समझना चाहिए कि निर्णय कभी-कभी ही परफेक्ट होते हैं ।इसलिए हमें खुद पर 'ऐसा करना था' या 'वैसा करना था' का प्रेशर नहीं डालना चाहिए। कोई भी चॉइस अंतिम नहीं होती और ना ऐसी होती है जिसे हम बाद में भी कभी अजमा ना सकें। इसलिए जो अभी नहीं हुआ वह आगे फिर कभी आजमा लें और मन को शांत रखें ।कभी ज्यादा विकल्पों में से चुनना हो तो अधिकतम छह विकल्प सामने रखकर धीरे-धीरे अपनी जरूरत और बजट के मुताबिक शॉर्टलिस्ट कर लें।

करियर और रिलेशनशिप जैसे बड़े निर्णय के लिये हमेशा अपनी जरूरत, प्रतिभा और दिल की मांग पर फोकस करें।

BOX--- रिसर्च

कोलंबिया एंड स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानियों शीना अयंगर और मार्क लेपर ने 'व्हेन चॉइस इस डीमोटीवेटिंग रूकैन वन डिजायर टू मच ऑफ अ गुड थिंग' शीर्षक से एक दिलचस्प रिसर्च किया। इसमें १ दिन किसी फूड मार्केट में जैम की २४ किस्में रखी गई। किसी दूसरे दिन उसी सेल्फ में सिर्फ ६ किस्में जैम की रखी गई। मजे की बात यह है कि जिस दिन जैम की २४ किस्में रखी गई उस दिन सेल्फ के सामने काफी लोग आए ।उन्होंने जैम को देखा भी लेकिन खरीद बहुत कम हुई ।लेकिन जिस दिन सिर्फ ६ किस्में केस में रखी गई उस दिन सेल्फ के सामने तुलनात्मक रूप से कम लोग गए। लेकिन जैम की बिक्री काफी अच्छी हुई।

नतीजा-- ज्यादा विकल्पों की वजह से २४ किस्मों में से कौन सा लिया जाए यह निर्णय ज्यादातर ग्राहक नहीं ले पाए। जबकि छह किस्में मौजूद होने पर उनके लिए निर्णय लेना आसान हो गया और उन्होंने आसानी से इसकी खरीद कर ली। यानी ज्यादा विकल्पों से सिर्फ माथापच्ची होती है और निर्णय लेना मुश्किल हो जाता है।

मोटिवेशनल लेखक- शिखर चंद जैन

लॉकडाउन पीरियड में करें आयकर रिटर्न की तैयारी

प्रिय पाठकों, वित्तीय वर्ष २०१९-२० समाप्त हो गया है और जो आय आपने पिछले साल कमाई है उसका निर्धारण करके आयकर रिटर्न भरने का समय भी धीरे-धीरे नजदीक आ रहा है। सरकार ने रिटर्न भरने के लिए कुछ फॉर्म भी जारी कर दिए हैं परंतु कमाई का निर्धारण जरूरी दस्तावेजों के बिना हो पाना मुश्किल है इसलिये इस लॉक डाउन के समय में हम ये महत्व पूर्ण काम कर सकते हैं कि जो भी दस्तावेज रिटर्न भरने के लिए आवश्यक है उनको एक जगह तैयार करके रख लिया जाए ताकि जब भी आपके कर सलाहकार ये दस्तावेज मांगे तो उस समय आपका कीमती समय नष्ट ना हो और आयकर रिटर्न भी जल्दी से समय पर फाइल हो जाये। उन्हीं में से कुछ दस्तावेज यहां निम्न है -

१- अगर आप नौकरी पेशा व्यक्ति है तो सबसे पहले अपने नियोक्ता से फॉर्म १६ ले। इसमे आपका पूरे साल का सैलरी ब्रेक अप मिल जाएगा जो कि रिटर्न भरने के फॉर्म मे अनिवार्य है। यदि फॉर्म १६ ना उपलब्ध हो तो सैलरी स्लिप भी ले सकते हैं।

२- बैंक से संबंधित दस्तावेज- सबसे पहले अपने सभी बचत खातों और चालू खातों का स्टेटमेंट ३१ मार्च तक का अपडेट करवा ले क्योंकि सभी बैंक अकाउंट का विवरण देना अनिवार्य है।

इसमे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले साल कुछ बैंक आपस मे मर्ज हुई थी जिससे उनका **IFSC** बदल गया होगा, अतः आप बैंक से पूछ कर सही ध्ैद्ध अपने रिटर्न मे डाले ताकि इंकम टैक्स रिफंड आने मे तकलीफ का सामना ना करना पडे।

यदि अपने फिक्स डिपोजिट करवाया हुआ है तो उसका **INTEREST CERTIFICATE** बैंक से लेकर रखे।

होम लोन लिया हुआ है तो लोन अकाउंट का स्टेटमेंट और **INTEREST CERTIFICATE** अपने बैंक या **NBFC** से लेकर रखे।

३ - **TDS** सर्टिफिकेट- यदि आपने ब्याज, कमिशन, किराये की आय की है इत्यादि जिसमें **TDS** काटने का दायित्व है और अगर भुगतान करने वाले ने ज्ैै काटा है तो आप उनसे **TDS** सर्टिफिकेट कलेक्ट कर ले।

४- निवेश से संबंधित दस्तावेज- जैसे जीवन बीमा प्रीमियम की रसीद, **PPF, NSC** की रसीद, शेयर बाजार और **MUTUAL** फंड में निवेश किया है तो उसका स्टेटमेंट तैयार करके रखे।

इसके अलावा स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम की रसीद और बच्चों के स्कूल फीस की रसीदें भी एक जगह संग्रहित करके रखे।

कोई **MOVABLE** या **IMMOVABLE** ऐसेट आपने खरीदा है तो उसके खरीद के बिल भी एक साथ रखे ।

५-) अगर पिछले साल में अपने कोई प्रॉपर्टी बेची हैं या शेयर या **MUTUAL** फंड बेचे है तो उसकी डिटेल्स भी तैयार करके रखे और अपने कर सलाहकार को दे क्योंकि इसका विवरण आपकी इंकम टैक्स की रिटर्न में देना अनिवार्य है।

सी ए, जितेंद्र कुमार मित्तल

अनुराधा कुमारी सिंह 'अनु'

जरूरी है सावधानी संयम बरतने की
जन जन में सही संदेश पहुँचाइये

लड़ना हो जंग गर जीतना हों कोरोना से
रहें दूर-दूर,भीड़-भाड़ न बढाइये।

पूरी दुनिया में आज त्राहि त्राहि मची है जी
एकजुट होके नेक कदम उठाइये।

बचना हो गर इस जानलेवा संक्रमण से
घर में ही रहना है कसम ये खाइये।

राजेश्वर दयाल वत्स

क्वॉरेंटाइन

डॉक्टर साहब। मुझे, मेरी पत्नी को और दोनों बच्चों को करोना है। हमें १४ दिन के लिए क्वॉरेंटाइन में भर्ती करवा दीजिए।

डॉक्टर और उसका स्टाफ चौक कर इनकी तरफ देखते हैं। सावधान होकर उन्हें अलग-अलग बैठने की हिदायत देते हुए इन सभी को तुरंत मास्क पहनने के लिए दिया जाता है और जांच शुरू होती है।

कोई ट्रेवल्स हिस्ट्री नहीं, कोई लक्षण नहीं, कोई जमाती चक्कर नहीं। डॉक्टर खुश होकर मुस्कुराते हुए कहता है- नहीं तुम्हें करोना नहीं है, जाओ आराम से घर जाओ।

लेकिन वह उदास और परेशान होकर कहता है- नहीं सर प्लीज हमें एडमिट कर लीजिए। डॉक्टर आश्चर्य से उसकी ओर घूरता है लेकिन उसकी सूरत देखकर सोच में पड़ जाता है, डॉक्टर समझाने के लिए उसे साथ वाले कमरे में ले जाता है।

वहां जाते ही वह आदमी हाथ जोड़कर रोने लगता है।

वह कहता है- डॉक्टर साहब मुझे पता है कि हमें करोना नहीं है, परंतु बच्चों को भूखा रहते नहीं सहा जाता। वहां कम से कम सरकार खाना तो देगी।

अब डॉक्टर खुद हैरान परेशान है, वह उसको सलाह देने के लिए कुछ बोलने की हिम्मत जुटाता है तो उससे पहले ही वह गर्दन झुका कर फिर बोल उठता है- सर सात महीने पहले तक सब ठीक था मेरी नौकरी भी थी, बाइक भी थी और एक छोटा सा फ्लैट भी लोन लेकर ले लिया था।

लेकिन अब मेरे पास ना नौकरी है, ना हाथ में पैसे हैं, ना मेरे पास बीपीएल कार्ड है, सरकारी कागजों में मैं अमीर हूं...। पड़ोसियों से रिश्तेदारों से कितना और कब तक उधार लेता रहूं। बच्चों के सामने भीख कैसे मांगू... बस इसलिए ही...। अब इज्जत कैसे बचाऊं और जिंदगी कैसे...?

बाबासाहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के जन्मदिन पर विशेष

शरद कोकास

संविधान गढ़कर हम सबको मार्ग दिया अनुशासन का,
वही संविधान रक्षक बना है भारत देश के शासन का,
अन्तरा शब्दशक्ति देता है अम्बेडकर जयंति की शुभकामनाएँ
आज जन्मदिन है उसी संविधान निर्माता का।

डॉ प्रीति समकित सुराना
संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति

आज आम्बेडकर जयंती पर हम 'पुरातत्ववेत्ता' व 'देह' जैसी लम्बी कविताओं के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कार्यकर्ता शरद कोकास का यह व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे हैं। यह व्याख्यान उन्होंने गोंदिया महाराष्ट्र की एक जनसभा में आम्बेडकर जयंती के अवसर पर दिया था।

बाबासाहेब आंबेडकर का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

मित्रों, आज बाबासाहेब आंबेडकर की जयंती है। मैं आप को आम्बेडकर जयंती की बधाई देता हूं। दरअसल हम लोग उस परंपरा के वाहक हैं जो बुद्ध और चार्वाक ने प्रारंभ की थी और महात्मा फुले जैसे संतों से होते हुए जो परंपरा बाबासाहेब आंबेडकर और फिर हम जैसे वैज्ञानिक चेतना सम्पन्न मनुष्यों तक आई। यह परंपरा है वैज्ञानिक दृष्टिकोण की, चीजों को उनकी वास्तविकता में समझने की और यथार्थ को भली-भांति समझ कर अपनी स्थितियों की पड़ताल करके सत्य की तह तक जाने की। आज मैं बाबासाहेब आंबेडकर के इतिहास बोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बातचीत करने के लिए आप लोगों के बीच उपस्थित हुआ हूं।

सामान्यतः धर्म और विज्ञान को एक दूसरे के विरोध में खड़ा कर दिया जाता है। जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। धर्म का क्षेत्र अलग है और विज्ञान का अलग। इसमें मुख्य अंतर यह है कि विज्ञान कार्य कारण और परिणाम के सिद्धांत पर आधारित है वहीं धर्म निजी विश्वास, आस्था और मानवता के सिद्धांत पर।

आप लोगों के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब बाबासाहेब आम्बेडकर एक विशेष धर्म का पालन करते हैं तो वह विज्ञानवादी कैसे हो सकते हैं? आपका प्रश्न सही है । लेकिन यहाँ हमें यह देखना भी जरूरी है कि वे किस धर्म का पालन करते हैं और उस धर्म का विज्ञान से क्या संबंध है? है अथवा नहीं है? यह सब हम आगे विस्तार से देखेंगे।

बाबासाहेब का जीवन वृतांत प्रस्तुत करने का मेरा यहां कोई उद्देश्य नहीं है। मुझे पता है यहां उपस्थित हरेक व्यक्ति इस महान व्यक्ति के जीवन, उसकी उपलब्धियाँ तथा विश्व को दिए उनके योगदान से अवश्य परिचित होगा। केवल पुराने लोग ही नहीं बल्कि यह नई पीढ़ी भी इस बात को भलीभाँति जान रही है कि बाबासाहब कौन थे।

बाबासाहेब 'अंधेरे समय में विचार की एक मशाल' की तरह थे। जिस समय बाबासाहब का अविर्भाव हुआ वह समय एक ऐसे अंधकार का समय था जहां दमन अपनी पराकाष्ठा पर था। दमन की एक चक्की चल रही थी जिसमे भारत की तथाकथित वर्ण व्यवस्था में सबसे निचली पायदान पर रहने वाला यह मनुष्य पिस रहा था। जाति के नाम पर मनुष्य को मनुष्य मानने से भी इनकार किया जाता था। ऐसे समय भीमराव रामजी आंबेडकर जैसे व्यक्ति का अविर्भाव हुआ जिसने स्वयं के प्राणों की चिंता ना करते हुए भी उस बहिष्कृत पीड़ित शोषित जनता के मानस में क्रांति के बीज बोने का काम किया। सामाजिक न्याय के लिए जो एक योद्धा की तरह लड़ा और एक पल भी विश्राम ना करते हुए जिसने समाज में अस्पृश्यता मानने वाली और अपनी ताकत के बल पर मनुष्य का उत्पीड़न करने वाली व्यवस्था से लोहा लिया। ऐसे हमारे प्रिय बाबासाहब आंबेडकर का आज स्मरण करते हुए हम गौरवान्वित हैं।

मित्रों, मैं हिंदी का एक मामूली सा लेखक हूँ और मराठी की तुलना में हिंदी में बेहतर ढंग से अपनी बात रख सकता हूँ इसलिए अपनी बात हिंदी में आपके सामने रख रहा हूँ। यद्यपि मुझे मराठी आती है लेकिन शायद धारा प्रवाह बोलने में कठिनाई है। फिर भी मुझे ज्ञात है कि मेरी हिंदी जो महाराष्ट्र के इसी भंडारा जिले की ही हिंदी है आपकी समझ में अवश्य आ जाएगी।

बाबा साहब की वैज्ञानिक चेतना के विषय मे बात करने से पूर्व में उनकी संवेदना के बारे में बात करना उचित समझता हूँ। उनकी संवेदना के विषय में क्या कहा जाए। बाबा साहब गरीबों का, पीड़ितों का और अन्य समाज द्वारा अस्पृश्य घोषित किए गए लोगों का दुख देकर सहज ही विचलित हो जाते थे।

बाबासाहब के विषय मे मराठी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉक्टर यशवंत मनोहर अपने एक लेख में लिखते हैं कि - 'गोर गरिबांची आणि अस्पृश्यांची दुःखे पाहून डॉक्टर आंबेडकर संतापाने पेटून उठत आणि या दुखा मधून या लोकांना मी बाहेर काढू शकलो नाही तर स्वतः ला विजेच्या खांबा वर लटकवून जीव देईन असे म्हणत असत। भोवतीच्या लोकांमधील दैन्य, अज्ञान, लाचारी, आणि अनाथ पण पाहून डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकर ढसा ढसा रडत असत आणि असे मेलेले जीवन जगण्या पेक्षा तुम्ही आईच्या पोटातच मरून का गेला नाहीत असे म्हणत।'

अर्थात गरीबों, शोषितों का दुख देखकर बाबासाहब संताप से भर जाते थे और कहते थे कि 'यदि मैं इन गरीबों को इनके कष्ट से उबार नहीं सकता तो मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं है। यदि ऐसा हुआ तो मैं बिजली के खम्भे से लटककर अपने प्राण दे दूँगा।'

अपने आसपास के लोगों की गरीबी, दीनता, लाचारी और विवशता देखकर बाबासाहब फूट फूट कर रोते थे और पीड़ा में भरकर उन लोगों से कहते थे ऐसा मृतप्रायः जीवन जीने की अपेक्षा तुम लोग मां के गर्भ में ही क्यों नहीं मर गये।

दोस्तों, इन शब्दों में उनकी कमजोरी देखकर आपको क्या लगता है बाबासाहब इतने कमजोर आदमी थे?

ऐसा बिलकुल नहीं था। उनके जैसा दृढ़ व्यक्तित्व किसी का नहीं हो सकता। उन्हें दुखों ने इतना सताया था कि वे मजबूत हो गए थे। दुख द्वारा मनुष्य को सताए जाने की यह कहानी नई नहीं है।

एक कविता है...

हजार हात होते सुखाचे/त्या हातांनी तो हजारो लोकांना कुरवाळ शकत होता/दुखा जवळ होते फक्त दोन डोळे/त्या डोळ्यांनी तो कोटयवधी लोकांना बघायचा आणि दुखी करायचा

शरद कोकास

हजार हाथ थे सुख के/ जिनसे वह एक साथ/हजारों को दुलार सकता था/दुख के पास थी/फकत दो आंखें/जिनसे वह करोड़ों को देखता/और दुखी कर देता।

शरद कोकास

लेकिन आप लोग इस बात पर जरा सोचिये कि बाबासाहेब जैसे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति यदि इस दुख से विचलित हो कर खुद की जान देने की बात कहता है अथवा दूसरों के दुख देखकर दुखी होता है तो हमें यह सोचना चाहिए कि वह ऐसा क्यों कहते थे। इसके लिए हमें थोड़ा इतिहास में जाना होगा।

आपको पता है हमारी आज की सबसे बड़ी समस्या क्या है? वह समस्या है विस्मरण बोध, यानि कि बीता हुआ सब भूल जाना। हम अपने अतीत को भूलते जा रहे हैं।

आप को तो कल की भी बात याद नहीं होगी, कल आपने कौनसे कपड़े पहने थे आपको याद है? कल आपने कौनसी भाजी खाई थी आपको याद है? क्षमा करें,... लेकिन पडोसी से कल आपकी किस बात पर लड़ाई हुई थी वह आपको जरूर याद होगा? लेकिन केवल इतनी सी बात नहीं है, हम सचमुच बहुत कुछ भूल चुके हैं।

हम भूल चुके हैं कि बाबासाहब और हमारे अनेक पूर्वजों ने शासकों और शोषकों के कितने अत्याचार सहे हैं, उत्पीडन का कितना दुःख भोगा है। वे दिन हमें याद नहीं हैं जब उन के लिए सुबह और शाम घर से बाहर निकलना भी मना था इसलिए कि उनकी परछाई से ऊंची जाति के लोग दूषित हो जाते थे वे उनकी बनाई चमड़े की मशक से छागल से पानी पी सकते थे लेकिन उसका बनाने वाला उन्हें जरा सा भी छू दे तो वे उसकी जान ले लेते थे।

अतीत से हमें क्या लेना देना?

आप कहेंगे कि अतीत से हमें कोई मतलब नहीं है। इतिहास में जो हुआ सो हुआ होगा, हमको क्या करना है? हम आज सुखी हैं इतना काफी है। लेकिन यह तो स्वार्थ हुआ ना? ध्यान रखिये यदि आप आज अपना सही इतिहास उनके सामने नहीं रखेंगे तो वे लोग आपका झूठा इतिहास आपके सामने रख देंगे और सम्भव है

जाति और वर्ण के नाम पर पुनः उन बातों की पुनरावृत्ति हो?

प्रश्न यह है कि **हम सही इतिहास और झूठे इतिहास में अंतर कैसे करेंगे?**

मित्रों, मानव जाति का इतिहास सिर्फ अभी कल तक का इतिहास नहीं है। हम यह सोचकर भी सुखी नहीं हो सकते कि हमारे पूर्वज तो सवर्ण थे और उन्होंने दुःख नहीं भोगे थे, बाबासाहब ने अपनी पुस्तक शूद्र कौन में इस विषय पर साफ साफ कहा है। 'भारतीय आर्य समाज में शूद्र' इस विषय पर ग्रन्थ लिखते हुए बाबासाहब के सामने बहुत कठिनाइयाँ आईं। वे स्वयं कहते हैं कि मुझे चेतावनी दी गई कि मुझे राजनीति पर तो बोलने का अधिकार है किन्तु धर्म और भारतीय धर्म का इतिहास मेरा कार्यक्षेत्र नहीं है अस्तु मैं कारण मेरे आलोचकों को मुझे ऐसी चेतावनी या धमकी देने की आवश्यकता पड़ी। मैं उसमे प्रवेश न करूँ।

बाबासाहब कहते हैं कि 'मैं इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं समझ पाता जिसके और लेखक होने के नाते इसे व्यर्थ मानता हूँ।'

(शुद्र कौन रू डॉ. बी.आर.आंबेडकर- अनुवाद आर. एन.सागर, कंचन प्रकाशन)

बाबासाहब ने इस सम्पूर्ण भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण किया, वैदिक ग्रंथों का ही नहीं बल्कि संसार के सभी धर्मों के साहित्य का अध्ययन किया और जो बातें सदियों से समाज से छुपाई गईं थीं उन्हें सबके सामने खोलकर रख दिया। अपनी पुस्तक 'शूद्र कौन' में उन्होंने अपने मौलिक मत दिए हैं जिनके अनुसार-

१. शूद्र आर्यों की जातियों में सूर्यवंशीय हैं।
२. एक समय था जब आर्यों में केवल तीन ही वर्ण थे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य।
३. शूद्रों का पृथक वर्ण नहीं था और वे आर्यों के द्वितीय वर्ण क्षत्रिय वर्ण का ही एक अंग थे।
४. शूद्र राजाओं और ब्राह्मणों में निरंतर संघर्ष चला और जिसमे ब्राह्मणों को शूद्रों का उत्पीडन और अत्याचार सहना पड़ा।
५. शूद्रों के दमन से आक्रांत ब्राह्मणों ने घृणावश शूद्रों का उपनयन बंद कर दिया।
६. उपनयन विरोध से शूद्रों का सामाजिक पराभव हुआ वे सामाजिक स्तर पर इतने पतित हुए कि उन्हें विषयों से भी नीचे एक चौथा वर्ण बनना पड़ा।

बाबासाहेब ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जो सिद्धांत दिए स्वयं उनका परीक्षण भी किया है।

मित्रों, इतिहासकारों के बीच इस बात पर मतभेद हो सकते हैं लेकिन समाज में जाति व्यवस्था के बनने तक बहुत कुछ घटित हुआ। मनुष्य ने ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया फिर उनकी आराधना करने के लिए अपने धर्म का निर्माण किया। यह भी मनुष्य के मस्तिष्क का ही कमाल था कि जिस तरह सुख के भौतिक संसाधन उसने जुटाए उसी तरह मनुष्य की सेवा करने के लिए अपने ही बीच से कुछ मनुष्य भी जुटाए, जैसे एक आदमी जमींदार बन गया और बाकी के किसान। एक आदमी गन्दगी फैलाने वाला बन गया और दूसरा उसे उठाने वाला बन गया। समाज में कामों का बंटवारा हुआ और श्रेष्ठ काम कुछ लोगों के हिस्से में आये और निम्न काम कुछ अन्य लोगों के।

आइये हम देखते हैं कि अतीत के रंगमंच पर यह प्रहसन किस तरह घटित हुआ?

इस तरह समाज मे शोषक और शोषित इन दो वर्गों में बंटवारा अवश्य हुआ हालाँकि बाकी मनुष्यों के पास भी दिमाग था और वे अपने शोषण का विरोध भी करते थे लेकिन फिर स्वयं को चालाक समझने वाले मनुष्य ने धर्म का सहारा लिया और अपने गुलाम मनुष्य से कहा कि यह तो ईश्वर की बनाई व्यवस्था है कि एक व्यक्ति सेवा का उपभोग करेगा दूसरा सेवक होगा, एक मालिक होगा तो दूसरा नौकर होगा, एक अमीर होगा तो दूसरा गरीब होगा, एक ऊँची जाति का होगा तो दूसरा नीची जाति का होगा और फिर उसने इसे ब्रह्मा के मुख से कहलवाया,..

ब्रह्मनोस्य,.. मुख मासीद बहु राजन्य कृत उरु तदस्य तद वैश्यः, शुद्रो पदाभ्याम जायते,..

उसने इसे वर्ण व्यवस्था नाम दिया। आखिर 'व्यवस्था' शब्द से किसे इंकार हो सकता है फिर यह तो ईश्वरीय व्यवस्था थी। फिर इसी वर्ण व्यवस्था से आगे चलकर जातियां बनी और यह जाति भेद ही अस्पृश्यता का जनक बना। इस व्यवस्था को धर्मग्रंथों में स्थान मिला। कई बड़े बड़े सुधारक आज भी इस काल्पनिक प्रणाली को सत्य मानते हैं।

मित्रों बाबासाहब ने इन धर्मग्रंथों में लिखे इसी झूठ का पर्दा फाश किया। उन्होंने 'शूद्र कौन' जैसे लेख के अलावा 'रिडल्स इन हिन्दुइज्म', 'भारत में जाति व्यवस्था' जैसी अनेक पुस्तकों की रचना की और इन धर्मग्रंथों में वर्णित इन कल्पनाओं और झूठ का भंडा फोड़ किया,.. बाबासाहेब की वैज्ञानिक दृष्टि पर मेरी एक छोटी सी कविता है,

सुनिए ,..
न ब्राम्हण पैदा हुआ मुख से
न पैदा हुआ शूद्र पाँवों से
क्षत्रिय और वैश्य के
भुजाओं और जंघाओं से पैदा होने का
तो सवाल ही पैदा नहीं होता
अब हम इतने अज्ञानी भी नहीं
कि न जान सकें
कोई कहाँ से पैदा होता है।

(शरद कोकास)

लेकिन जैसा कि मैंने कहा इतिहास सिर्फ कल या परसों तक का इतिहास नहीं है मनुष्य के शोषण की पड़ताल करने हेतु इतिहास में हमें थोड़ा और पीछे जाना होगा। आइए एक नजर हम मनुष्य के दमन के इस इतिहास पर डालते हैं।

यह संसार आदिम साम्यवाद से लेकर दास प्रथा, सामंतवाद, पूंजीवाद से लेकर साम्यवाद आदि विभिन्न स्तरों से गुजर चुका है। आपको याद दिलाना चाहता हूँ उस समय की जब प्राचीन मिस्त्र और प्राचीन रोम में जब दास प्रथा थी। युद्ध हुआ करते थे और युद्ध में बंदी मनुष्यों को दास के रूप में खरीद लिया जाता था। यह दास वे दास थे जिन्हें जिंदा रहने के लिए बस थोड़ा सा खाना दिया जाता था ताकि वह जीवित रहें और अपने मालिकों की सेवा कर सकें।

दर्शन के अनेक पुरोधाओं की भाँति बाबासाहेब आम्बेडकर ने इस बात का पर्याप्त विश्लेषण किया है कि लोगों के बीच असमानता की स्थिति कैसे आई?

पृथ्वी पर इस तरह जब धीरे धीरे विभिन्न सभ्यताओं का निर्माण होता गया मिस्त्र, मेसोपोटामिया, यूनान, चीन, रोम, भारत आदि-आदि। समस्या तब तक नही थी जब तक मनुष्य केवल अपने लिए अनाज पैदा करता था, अथवा शिकार करता था। समस्या तब पैदा हुई जब उसने अपनी मेहनत से शिकार के मुकाबले ज्यादा खाद्य पदार्थ पैदा करने की शुरुआत की।

जब आदमी जरुरत से ज्यादा अनाज पैदा करने लगा तो वह मवेशी भी रखने लगा, उसका दूध और अनाज बेचने लगा, सामान्यतः यह बेचना विनिमय था, मतलब एक ने मरे जानवर की खाल से जूते बनाये, अब एक जोड़ जूते तो वह बनाएगा नहीं सो ज्यादा बनाये और उसे उस मवेशी या गाय ढोर वाले को देकर उससे दूध ले लिया, उसका जानवर मरा तो उसने इसे ले लिया। इस तरह विनिमय चलता रहा।

अब बताइए दुध पैदा करने वाला बड़ा कैसे हो गया और जूते बनाने वाला छोटा कैसे हो गया? मतलब गाय के मरने पर जिसने उसे कचरा होने गन्दगी फैलने से बचाया वह छोटा हो गया जो जीवित गाय रखता था उसका दूध पीता था वह बड़ा हो गया और वह व्यक्ति जो न गाय रखता था बल्कि फोकट में गाय का दूध पीता था, उसके चमड़े से बने जूते पहनता था, उसके गोबर से घर लीपता था और सिर्फ यह कहता था कि गाय तुम्हारी माता है उसकी पूजा करो वह सबसे बड़ा हो गया?

अब इसके अलावा और एक बात हुई। जरुरत से ज्यादा अनाज पैदा करने वाला अकेले तो पैदा नहीं कर सकता सो उसने अपने लिय कुछ आदमी रखे। शुरू में तो यह पैदावार सबमे बराबर बाँट दी जाती थी लेकिन बाद में इसे निजी संपत्ति माना जाने लगा और फिर निजी संपत्ति हुई तो कुछ लोग उसके मालिक बन गए और कुछ नौकर। फिर इस निजी संपत्ति या प्राइवेट प्रॉपर्टी को हड़पने के लिए युद्ध भी होने लगे, फिर युद्ध हुए तो उसमे लोगों को मारा जाने लगा, बाद में जब सबको मारना संभव नहीं हुआ तो लोग पकडे जाने लगे और उनसे दासों की तरह काम लिया जाने लगा। ये दास कहलाये।

इन दासों कि स्थिति बहुत खराब होती थी ये सुबह से रात तक ढेकलियों से या रहट से पानी खींचकर खेत सींचते थे, नहरें खोदते थे, बांध बनाते थे, इमारतें बनाने के लिए पत्थर तोड़ते थे उनके पास खुद का कुछ नहीं होता था सब मालिक का होता था। उन्हें खाना भी इतना ही दिया जाता कि वे काम करने के लिए जिंदा रह सकें। इस तरह वे जल्दी ही मर जाते थे।

अब हम इतिहास में थोड़ा और पीछे चलते हैं। भारत में प्रागैतिहासिक मानव के अवशेष पाए जाते हैं लेकिन जो सबसे प्राचीन ज्ञात सभ्यता है वह मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की है यह अपने आप में एक उन्नत व्यवस्था थी जहाँ के नगरों में सड़कें थीं पक्के मकान थे ईंटों के बने हुए दो तीन मंजिले और भीतर से खूब सजे थे, घरों में नहाने के लिए स्नानागार भी थे लेकिन यहाँ भी गरीब और अमीर थे, गरीबों के मकान कच्ची ईंटों के थे वहीं अमीरों के मकान पक्की ईंटों के। नगर के छोर पर टीले पर किला बना होता था और

उससे कुछ दुरी पर अनाज रखने के लिए टीले पर गोदाम बनाये जाते थे।

सिन्धु घाटी के निवासी अनाज के अलावा कपास की खेती भी करते थे। लेकिन फिर इस सभ्यता के नगर उजड़ गए, इन मूल निवासियों को उनकी ही जमीन से बेदखल कर दिया गया और इनकी जगह समानांतर पनपती एक ऐसी सभ्यता ने ले ली जो आज की हमारी इस स्थिति का कारण बनी। कृषि एवं पशुपालन की वह सभ्यता थी आर्य सभ्यता। सिन्धु सभ्यता की लिपि आज भी नहीं पढ़ी जा सकी है वर्ना हमें यह रहस्य ज्ञात हो सकता था कि वे लोग कैसे समाप्त हुए।

बाबासाहेब ने अनेक दृष्टान्तों के साथ विगत में प्रचलित प्राचीन वर्ण व्यवस्था का जिक्र किया है। उनका यह दृष्टिकोण इतिहास को पढ़ने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो इतिहास को देखने के धर्म आधारित दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न है।

यह बात भी नहीं है कि इससे पूर्व जब धर्म सर्वोपरि था अतीत और वर्तमान को देखने का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं था। हमारे यहाँ चार्वाक जैसे नास्तिक दर्शन की परंपरा रही है। इसी तरह हम देखते हैं कि वैदिक हिंसा, जन्मना वर्ण व्यवस्था, और जाति भेद पर पहला आघात गौतम बुद्ध ने किया। उसी समय चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ने भी इसके खिलाफ आवाज उठाई।

फिर एक समय आया कि यह देश बौद्धमय हो गया लेकिन बौद्ध सम्राट अशोक के उत्तराधिकारी ब्रह्दृथ की हत्या उसके ब्राह्मण सेनापति ने की, बौद्ध भिक्षुओं का वध किया, बौद्ध विहारों को जलाया। इन अत्याचारों का रोमांचक वर्णन यदि आप पढना चाहते हैं तो बौद्धग्रन्थ 'दिव्यावदान' में पढ़ सकते हैं। वैसे भी आप सब यह इतिहास बेहतर जानते हैं इसलिए मुझे विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।

उसके बाद तो देश की नदियों में जाने कितना पानी बह गया। ब्राह्मण ग्रंथों को पुनः जीवित करने का काम किया गया। स्मृति ग्रंथों की रचना की गई। अर्थात सनातन धर्म को तथा उसके आधार पर निर्मित वर्ण व्यवस्था को स्थापित करने के अनेक प्रयास किये गये।

जवाहर लाल नेहरू अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखते हैं कि 'आचार-विचार सम्बन्धी शुद्धता का बुरा परिणाम यह हुआ कि अलग रहने की प्रवृत्ति और छुआ छूत ने उन्नति की। कुछ खास जाति वाले इसलिए अछूत कहे जाने लगे कि उन्हें ऐसे काम में लगाना पड़ा जो गंदे समझे जाते थे।'

मित्रों, संक्षेप में यह कि आज भी विभिन्न धर्मों में जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था मानी जाती है। करोड़ों लोग ऐसे हैं जिन्हें अछूत, अवर्ण, अतिशूद्र , अन्त्यज आदि कहा जाता है, उन्हें अपने ही धर्म की ऊँची जाति के घरों में प्रवेश नहीं मिलता, मंदिरों में प्रवेश नहीं मिलता।

यहाँ से पास में ही भंडारा शहर है वहाँ देशबंधु वार्ड में एक शनि मंदिर है जिसकी सीढ़ियों पर लिखा है

स्त्रियांकरिता आणि मुलिंकरिता प्रवेश निषेध। यानि इस मंदिर में स्त्रियों और लड़कियों को प्रवेश की मनाही है, चाहे वे किसी भी धर्म की हों। देखिये यह आज के आधुनिक समय की बात है जब हम खुद को बहुत पढ़ा लिखा मानते हैं।

बाबासाहेब ने ऐसे ही लोगों के लिए मंदिर प्रवेश आन्दोलन किया था। उन पर आज भी जाने कितनी पाबंदियां हैं अच्छे कपडे पहनने की पाबन्दी है, धातु के बर्तन रखने की पाबन्दी है, चाँदी सोने के जेवर पहनने की पाबन्दी है, पाठशाला जाने की पाबन्दी है यहाँ तक की सड़क पर चलने पर भी पाबन्दी है। यह इतिहास आप भली भांति जानते हैं कि मुसलमानों के आगमन पर क्या हुआ, संतों ने क्या क्या प्रयास किया और अंग्रेजों के आगमन पर क्या हुआ। जाति व्यवस्था कायम रखने में इन मुगल शासकों और अंग्रेज शासकों के क्या स्वार्थ थे। मानते हैं कि अंग्रेजों के आगमन के साथ ही आधुनिकता का जन्म हुआ, उनकी एक संगठित शासन व्यवस्था थी, रेल डाक तार जैसी सुविधाएँ थीं जो सबके लिए थीं व्यवस्थित न्याय प्रणाली थी, प्रेस, समाचार पत्र, पुस्तकालय थे। और यहाँ जाति के आधार पर किसी के लिए प्रवेश निषेध नहीं था।

हालाँकि यह उनके व्यापार और निजी स्वार्थ की दृष्टि से था फिर भी इन बातों ने हिन्दू समाज के मूल ढांचे को हिला दिया और उनके द्वारा दी गई इसी अंग्रेजी शिक्षा के फलस्वरूप हिन्दू समाज में रूढ़ीवाद के खिलाफ संघर्ष प्रारंभ हुआ।

मित्रों, मैं आपसे यह प्रश्न करना चाहता हूँ कि बाबासाहब को भी यदि अंग्रेजी शिक्षा नहीं मिलती तो क्या वे जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष कर सकते थे?

यही बात गाँधी जी, नेहरू जी और उस समय के अन्य नेताओं के लिए भी मैं कह सकता हूँ। क्या शिक्षा के बगैर बाबासाहेब में वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो सकता था जिसने उन्हें दलितों के उत्थान के लिए प्रेरित किया और एक अन्धविश्वास से भरे धर्म को छोड़कर उस समय के एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले धर्म में या प्रगतिशील समझे जाने वाले धर्म में जाने की इच्छा उनके भीतर पैदा की।

बाबासाहब के साथ अनेक लोगों ने जाति उन्मूलन के प्रयास किये लेकिन बाबासाहब का उद्देश्य उन सबमे स्पष्ट था और किसी धर्म में जब उन्हें दलितों का उत्थान नहीं दिखाई दिया तो उन्होंने तत्कालीन बौद्ध धर्म अपनाया जो उस समय तक का सबसे अधिक वैज्ञानिक सोच वाला धर्म था। यह सब इतिहास में किस तरह घटित हुआ यह आप बेहतर जानते ही हैं।

कुछ कड़वी बातें

अब अंत में कुछ बातें बाबासाहब के सिद्धांतों को लेकर मैं आज के परिप्रेक्ष्य में करना चाहता हूँ। मित्रों बाबासाहब के संघर्ष से लेकर आज तक की स्थिति में बहुत कुछ बदल चुका है। उस ऐतिहासिक समय के बाद देश में बहुत उथल पुथल हुई समाज का यह वर्ग एक समय में शूद्र, अतिशूद्र, अछूत, अन्त्यज और गांधीवादी परिभाषा के अंतर्गत दिए गए शब्द हरिजन से होते हुए दलित शब्द तक जा पहुंचा, आज तो उससे भी आगे हम मूल निवासी शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं।

संक्षेप में इस 'हरिजन' शब्द के इतिहास को भी जान लीजिये। उस दौर के श्रमजीवी वर्ग को दलित के रूप में मान्यता मिली। बाबासाहेब के अथक प्रयासों से ही यह संभव हुआ। किन्तु बहुसंख्य आबादी ने गाँधी जी के मोह में आकर 'हरिजन' शब्द भी स्वीकार किया। हरि अर्थात वह ईश्वर जिसका वर्णन हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों में है दूसरी ओर यह नामकरण भी प्रशासनिक था जबकि दलित समस्या मूलतः एक सामाजिक राजनैतिक समस्या थी और कानून के द्वारा इसे हल नही किया जा सकता था। सामाजिक परिवर्तन के लिए जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी वह तत्कालीन जन नेताओं और समाज सुधारकों में नहीं थी जो राजनेता थे उनका लक्ष्य भी स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समाज परिवर्तन नहीं बल्कि सत्ता प्राप्ति था।

गांधीजी इसे एक धार्मिक समस्या के रूप में ले रहे थे और बाबासाहेब इसे विशुद्ध आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक समस्या कह रहे थे। लगभग तीस के दशक के बाद यानि १९३० के बाद यह हुआ कि दोनों ने मिलकर इस जाति समस्या के मूल कारणों पर एक होकर विचार किया, बाबासाहब ने इसमें शामिल धर्म के तत्व को जाना। वे जिन त्रासदियों से गुजर चुके थे नहीं चाहते थे कि उनकी आनेवाली पीढ़ियाँ भी अस्पृश्यता और भेदभाव की उस पीड़ा को भोगे और तभी उन्होंने वह ऐतिहासिक घोषणा की कि मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूँ लेकिन हिन्दू धर्म में मरूँगा नहीं। निश्चित रूप से हिन्दू धर्म और अन्य धर्मों को अस्वीकार करने की वजह धर्मों के अंतर्गत जाति और वर्ण विभाजन ही नहीं बल्कि इसमें निहित अवैज्ञानिक चेतना भी थी।

यह अच्छी बात हुई कि इसके पश्चात गाँधी जी ने भी बाबासाहब के कहने पर धर्म आधारित जाति समस्या के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक पक्ष को जानने की कोशिश की।

हाँ! उस दौर की जनता अवश्य जागरूक थी लेकिन सामाजिक परिवर्तन के लिए जिस संवेदनशीलता, साहस और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है उसका उसमे अभाव था और इस में सबसे बड़ी बाधा थी अशिक्षा।

अब आप सोच सकते हैं कि बाबासाहब ने 'शिक्षित व्हा संगठित व्हा' जैसा नारा क्यों दिया। इसलिए कि जब तक आप शिक्षित नहीं होंगे और अंधश्रद्धा व स्वयं के शोषण के विरुद्ध संगठित नहीं होंगे आप के भीतर वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न नहीं होगा।

धर्म परिवर्तन कर लेने के बावजूद आपमें वह साहस उत्पन्न नहीं होगा कि धर्म के नाम पर ठगी और शोषण करने वाले तथाकथित चमत्कार करने वालों का आप विरोध कर सकें

आप अपने ही धर्म के पुरोहितों से डरते रहेंगे, और न अपने आप को इतिहास बोध से लैस कर पाएंगे, न इतिहास में अपने दुःख देख पायेंगे, न दुःख के कारण जान पाएंगे और जब तक दुखों के कारण ही नहीं जान पाएंगे तब उन्हें दूर कैसे करेंगे?
(बुद्ध इन्ही कारणों की खोज करते हैं शायद इसीलिए उन्हें इस धर्म में रुचि रही)

हालाँकि शिक्षा भी इसका एकमात्र उपाय नहीं है। न उस समय था न आज है। आज भी अनेक शिक्षित लोग धर्म भीरु हैं, अन्धविश्वासी हैं और कर्मकांडी हैं । सामान्यतः एक शिक्षित आदमी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह जन्म के आधार पर या जाति के आधार पर मनुष्य मनुष्य में भेदभाव नहीं करेगा लेकिन शिक्षा के साथ साथ जिस सामाजिक चेतना और

दृष्टि की उम्मीद की जाती है वह केवल शिक्षा से उत्पन्न नहीं हो सकती। हम देखते आ रहे हैं कि यह समाज जैसे जैसे शिक्षित होता गया वह धार्मिक आडम्बर और कर्मकांड से जुड़ता गया।

यह छपे हुए शब्दों पर अथवा मीडिया के शब्दों पर आँखे बंद कर विश्वास करने वाले शिक्षित अन्धविश्वासी लोगों का समय है।

व्हाट्स एप पर भी ये लोग लिखते हैं भगवान का एक फोटो लगाकर कि फॉरवर्ड करो और चमत्कार देखो, यह लोग विज्ञान का सहारा लेकर छद्म विज्ञान या नकली विज्ञान को आपके ऊपर थोपना चाहते हैं, उबाले हुए गेहूँ को अंकुरित करो और उसे खाओ तो डायबिटिज दूर हो जाएगी ऐसा बोलते हैं।

हमारे चिकित्सक, लेखक व विज्ञानवादी मित्र डॉ दिनेश मिश्र द्वारा गठित अंद्धश्रद्धा निर्मूलन समिति के सक्रिय सदस्य डॉ क्रांतिभूषण बनसोडे जो रायपुर में रहते हैं अपने विभिन्न लेखों के माध्यम से आजकल लोगों की इस स्वास्थ्य सम्बन्धी निरक्षरता को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं।

सबसे दुखद बात यह है कि यही शिक्षित वर्ग आज हमारे विरूद्ध विज्ञान का सहारा लेकर हमें फुसलाने का बहकाने का प्रयास कर रहा है। जिन ग्रंथों को बाबासाहब ने जला दिया था उसे इस भद्रवर्ग ने संविधान के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। आधुनिकता और प्रगतिशीलता जैसे शब्द सिर्फ डिक्शनरी की शोभा बढ़ाने के लिए रह गए हैं। हम आज भी सिद्धांत में आधुनिक हैं लेकिन भूत-प्रेत, आत्मा-परमात्मा, जादू-टोना, चमत्कार जैसे अन्द्ध विश्वासों को मानते हैं, जाति और गोत्र का विरोध करते हैं लेकिन अपनी बेटी का विवाह अपने गोत्र में नहीं करते।

इस पर मत भिन्नता हो सकती है। आपको पता ही होगा हम लोग एक गोत्र में शादी नहीं करते। यद्यपि आनुवंशिकता की दृष्टि से यह कुछ हद तक सही है। वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि एक गोत्र में शादी करने से बीमारियाँ होंगी। लेकिन विडम्बना यह है कि अब तक इतिहास में इतना रक्त सम्मिश्रण हो चुका है कि न कोई शुद्ध है न अशुद्ध। इस रक्त सम्मिश्रण के प्रमाण आपको पौराणिक ग्रंथों और जातियों के समाज शास्त्रीय अध्ययन से मिल जायेंगे।

अब कुछ बातें धार्मिक कर्मकांडों पर। मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि मेरा किसी धर्म से कोई विरोध नहीं है। किसी की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाना भी मेरा उद्देश्य नहीं है। मैं केवल यह चाहता हूँ कि धार्मिक आडम्बर और अंद्धविश्वास के कारण हम में से कोई भी चालाक मनुष्यों द्वारा ठगा न जाये।

उदाहरण के लिए हमने अपने ही बीच ऊँच-नीच के ढेर सारे नियम बना लिए हैं। हमने अपने घर में महात्मा बुद्ध की तस्वीर की बगल में बाबासाहब की एक तस्वीर रख ली है और मोमबत्ती जलाकर उनकी पूजा करने लगे हैं। यह कोई बुरी बात नहीं है लेकिन हम में से कितने लोगों ने उनके दर्शन को पढ़ा गया? लेकिन पढ़ना तो दूर हमने आस्था प्रदर्शित करने के लिए जाने कितने कर्मकांड जीवन पद्धति के नाम पर अपने धर्म में जोड़ लिए हैं आज की शादियाँ देखिये उनमें कितने कर्मकांड होते हैं? अभी हमारे मित्र बिलासपुर के प्रसिद्ध मराठी कवि एवम विचारक कपूर वासनिक जी ने बताया कि एक जगह तो उन्होंने बौद्ध धर्म से होने वाली विवाह पद्धति में बाकायदा कन्यादान होते हुए देखा, नाम उसका कन्यादान नहीं था लेकिन उसकी प्रोसेस पूरी वैदिक पद्धति के कन्यादान की ही थी। अब बताइये?

मुझे पता है कि कर्मकाण्ड से पीछा छुड़ाना इतना आसान नहीं है लेकिन यदि हम चाहें तो बिना धर्म की अवहेलना किये बगैर भी वैवाहिक कार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। बुद्ध की प्रतिमा या चित्र के सामने एक दूसरे के गले में माला पहनाकर जीवन भर साथ रहने की शपथ लीजिये धर्म का सम्मान हो गया। फिर बाबासाहब भारत के कानून मंत्री थे उनकी बात मानते हुए उनका सम्मान करते हुए कोर्ट में जाइये वहाँ से मैरिज सर्टिफिकेट लीजिये बस हो गया बाबासाहब का सम्मान, कानून का सम्मान और संविधान का सम्मान। इस वैज्ञानिक पद्धति से हर धर्म वाले विवाह कर सकते हैं।

अभी कल मैंने एक अखबार की कटिंग देखी मेरे मित्र ने मुझे भेजी है जिसमे लिखा गया है कि भीलवाड़ा में कांग्रेस पार्टी के एस सी विभाग द्वारा बाबासाहब के १२६ वें जन्मदिन पर उनका १२६ किलो दूध से अभिषेक किया जा रहा है। यह कोई बुरी बात नहीं है लेकिन जहाँ अभिषेक जैसा कर्मकांड होगा तो वहाँ पूजा-पाठ, मंत्रोच्चारण, पंचामृत, प्रसाद यह सब आएगा। दूध की बर्बादी होगी सो अलग।

आप सोच सकते हैं व्यक्ति पूजा से लेकर धार्मिक कर्मकांड यथा अभिषेक, मंत्र पाठ, आडम्बर इन सबका बाबासाहब ने हमेशा विरोध किया, वे न ग्रहों पर विश्वास करते थे न राशियों पर फिर भी हम देखते हैं कि बहुत से आम्बेडकर वादी अपने हाथ में ग्रहों और राशियों के नाम की अंगूठियाँ पहने घूम रहे हैं, गले में तावीज लटकाए घूम रहे हैं, तकलीफ होती है तो किसी न किसी बाबा की शरण में चले जाते हैं। नया घर बनाते हैं तो वास्तु शांति करवाते हैं,.. पीलिया हो जाता है तो डॉक्टर की पास जाने की बजाय झाडफूंक करवाते हैं, टोना-टोटका मानते हैं, नजर उतारते हैं, मत्था टेकते हैं भानामती मानते हैं आदि आदि।

देखियेगा, एक न एक दिन यह अंद्धश्रद्धा आपको ले डूबेगी।

बहुत सम्भव है कल को लोग बाबासाहब के प्रति आस्था के नाम के मंदिर बनवा देंगे उनकी मूर्तियाँ बनवाकर उन्हें मंदिरों में स्थापित कर देंगे, उनकी स्तुति में भीम चालिसा भी लिखी जा चुकी है। सम्भव है लाउडस्पीकर लगाकर उसका पाठ हो, फिर धर्म के पुरोहितों को बुलाकर उनसे मंदिरों में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करवाएं, और इस तरह धीरे धीरे फिर एक बार उस अंद्धश्रद्धा के गुलाम हो जायेंगे जिस से बाहर निकलने के लिए जिससे मुक्त होने के लिए, जिससे आजाद होने के लिए बाबा साहब ने अपने प्राण त्याग दिए थे।

मुझे जवाब दीजिये क्या बाबासाहब ने यही दिन देखने के लिए संघर्ष किया था और अपनी जान दी थी?

हमें दया नहीं हमारा हक चाहिए

मित्रों, सोचिएगा कि तत्कालीन समाज मे बाबासाहब के चाहने के बावजूद वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव किसलिए हुआ? क्या यह इस वजह से हुआ कि यहाँ शिक्षा की कमी थी? या यह इस वजह से हुआ कि इस भद्र समाज में दलितों के प्रति उचित संवेदना का अभाव था और उसे बढ़ाये जाने की सबसे पहले आवश्यकता थी।

ऐसा भी नहीं है कि विगत में देश के तमाम लोगों की संवेदना के इस स्तर को बढ़ाने के प्रयास नहीं हुए लेकिन उसका वह स्वरूप नहीं था जो हमें अपेक्षित था। हमारा यह स्पष्ट कहना है कि हमें आपकी दया नहीं चाहिए बल्कि बराबरी का हक चाहिए।

जाति को भारतीय राजनीति में विमर्श का केंद्र बनाने वाले डॉ आम्बेडकर के अलावा एक नेता और हुए हैं और वे हैं समाजवादी नेता डॉ.लोहिया। लोहिया जी ने साठ के दशक में कहा था कि सफाई कर्मचारियों का वेतन एक हजार कर देना चाहिए उस समय एक हजार बहुत बड़ी रकम थी, आज के पचास हजार के लगभग हालाँकि बाद के दशकों में ऐसा हुआ। आज भी वेतन का आधार आपका पद है न कि आपकी जाति। लेकिन सच सच बताइए क्या आर्थिक स्तर मं वृद्धि हो जाने के बाद भी इस तथाकथित भद्र समाज के व्यवहार में कुछ परिवर्तन आया है? क्या उनके सामाजिक तिरस्कार की दबी छुपी भावना में कोई कमी आई है?

आज भी अगर सड़क पर झाड़ू लगाने वाले एक सफाई कर्मचारी का वेतन एक डॉक्टर या इंजीनियर के बराबर कर दिया जाए तो क्या उसे वह मान सम्मान प्राप्त हो सकेगा जो एक डॉक्टर को या इंजीनियर को प्राप्त है?

दूसरों की बात तो जाने दीजिये हम में से ही कई सफेदपोश बाबू वर्ग के लोग कहेंगे कि उसकी हमारी क्या बराबरी, हम ऑफिस में काम करते हैं वह सड़क पर झाड़ू लगाता है, उसका काम हमारे काम से बड़ा नहीं है उसे ज्यादा पगार क्यों दोगे? मित्रों जिस अवैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात मैं कर रहा था वह यही है अगर यह दृष्टिकोण बाबासाहब के भीतर होता तो वे तो बहुत पढ़े लिखे थे, पचीसों डिग्रियां उनके पास थी, उस समय क्या आज भी उनके बराबर का पढ़ा लिखा मिलना मुश्किल है, वे अगर चाहते तो अकेले के दम पर देश के प्रधान मंत्री बन जाते लेकिन वे सबको साथ लेकर चले।

पूंजीवाद से लड़ाई

हम समानता की बात कर रहे थे। लेकिन समानता लाने के लिए कुछ लोगों की आय बढ़ा देना भी काफी नहीं है दलितों की बहुसंख्य आबादी छोटे-मोटे काम करने वालों की है, खेतिहर मजदूरों और किसानों की है और उनका आर्थिक स्तर ही नहीं सामाजिक स्तर भी बढ़ाया जाना जरूरी है व्यवस्था से अगर हम यह सवाल करें तो जवाब मिलेगा कि हम भूमिसुधार ग्रामीण औद्योगिकीकरण जैसे कार्य कर रहे तो रहे हैं लेकिन इस बात को सभी जानते हैं कि यह किस आधार पर हो रहा है, जंगल में आदिवासियों से उनके जंगल छीने जा रहे हैं, नदियाँ छिनी जा रही हैं और मल्टी नेशनल्स को दी जा रही हैं कारखाने बनाने के लिए।

आज दलितों के उत्थान से ज्यादा पूँजी पतियों के उत्थान की चिंता की जा रही है किस तरह उनके मुनाफे में वृद्धि हो इस बात की सरकार को चिंता है, कितने लोग उनके कारखानों में बने माल खरीदें, कितने लोग उनकी कंपनियों के मोबाइल खरीदें और सिम खरीदें इस बात की उन्हें चिंता है, लेकिन उन्हें इस बात की चिंता नहीं है कि उनके माल का खरीदार यही

दलित वर्ग है, यह मध्य वर्ग है, निम्न वर्ग है जिसकी क्रयशक्ति आज खत्म हो गई है, सच्चाई यह है दोस्तों कि बाजारों में माल तो बहुत है लेकिन उसे खरीदने वाले नहीं हैं।

अकबर इलाहाबादी का प्रसिद्ध शेर है

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाजार से गुजरा हूँ खरीदार नहीं हूँ।

राष्ट्रवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जाति व्यवस्था पर प्रहार करना और इस ढाँचे को तोड़ना आसान काम नहीं है। हालाँकि दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति से यह संभव हो सकता है लेकिन विगत से लेकर वर्तमान तक व्यवस्था की स्थितियाँ आप देख ही रहे हैं। उनका उद्देश्य जाति उन्मूलन अवश्य रहा किन्तु उसमें दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव रहा। अनेक लोगों का उद्देश्य येन केन प्रकार जातिगत समीकरण बिठाकर चुनावों में वोट प्राप्त करना ही रह गया था और अब तो केवल वोट प्राप्त करना भी इस जनतंत्र के लिए आवश्यक नहीं रह गया है।

जाति वादी व्यवस्था को तोड़ने हेतु बाबासाहब के बाद से लेकर अब तक प्रयास किये गए। यह भी हुआ कि कुछ लोगों को जाति की बात करने पर जातिवादी करार दिया गया।

राष्ट्रवादी होने का अर्थ यह नहीं है कि हम किसी जाति या किसी धर्म का ही वर्चस्व स्वीकार करें और अन्य जातियों या धर्म की उपेक्षा करें। यह विडम्बना ही होगी अगर कोई जातिवादी व्यवस्था को तोड़ने की बात करें वे जातिवादी कहलायें और जो समाज में आर्थिक अथवा अवैज्ञानिक वर्चस्व को अथवा जाति व वर्ण व्यवस्था को कायम रखना चाहें वे राष्ट्रवादी कहलायें? दोस्तों आप भी ऐसे छद्म राष्ट्रवादियों के बहकावे में न आयें तो बेहतर हैं। कुछ लोग चाहते हैं कि लोग अपने ही वर्ण का पालन करें अपने ही दायरे में सीमित रहें, सवर्ण हमेशा सवर्ण रहें और अछूत उनकी सेवा करते रहें। तो आप ही बताइये क्या इस तरह से राष्ट्रवादी होकर इस सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सकता है? जबकि राष्ट्र के प्रति प्रेम तो उसी का माना जायेगा जो अपनी कूप मंडूकता के दायरे से बाहर निकल कर समस्त मानवता के कल्याण की कामना करेगा।

तो इसका उपाय क्या है

क्या इसका उपाय मात्र राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना है? आइये इस मुद्दे पर भी विचार कर लेते हैं यह वही मुद्दा है जिसके लिए बाबासाहब ने बहुत संघर्ष किया। बाबासाहब को इसके लिए श्रेय दिया ही जाना चाहिए कि दलितों की सत्ता में भागीदारी के स्वप्न की शुरुआत भी उन्ही ने की। १९३२ के पूना पैक्ट के बारे में आप लोग जानते ही हैं जिसके आधार पर आगे चलकर चुनाव में और सरकारी नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान किया गया। किन्तु राजनीति में आरक्षण का क्या हश्र हुआ यह स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से लेकर अब तक के इतिहास में हम देख ही सकते हैं। पचास या साठ के दशक में यह स्थितियाँ नहीं थीं लेकिन उसके बाद ऐसी स्थितियाँ बनीं की राजनीतिक फलक पर कांशीराम जैसे नेता का अविर्भाव हुआ जो बाबासाहब के कदमों पर चलने वाले थे। बहुजन समाज पार्टी उसी आर्थिक संघर्ष का विस्तार ही है लेकिन प्रश्न यह भी है कि क्या राजनैतिक सत्ता में आंशिक भागीदारी दलितों का भविष्य सुधार सकी? बहरहाल इतना तो तय है कि अब कोई भी राजनैतिक पार्टी हो जाति के प्रश्न से मुँह मोड़कर राजनीति नहीं कर सकती। जाति व्यवस्था को हमें अब फिर नए सिरे से समझना होगा।

तो क्या इसका समाधान धार्मिक है?

अब कुछ बात इस समस्या के धार्मिक समाधान की भी कर ली जाए। बाबासाहेब ने धर्म परिवर्तन करते हुए बौद्ध धर्म को चुना था इसलिए कि वह उस समय का सबसे अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला धर्म था, एक ऐसा धर्म जिसमे ईश्वर के लिए और अंधश्रद्धा के लिए और व्यक्तिपूजा के लिए नकार था हालाँकि उनके सामने अन्य धर्मों का भी विकल्प था लेकिन उन्हें अनुभव हुआ कि वहाँ भी जातियों के बीच भेदभाव और स्त्रियों के प्रति सम्मानजनक स्थिति को लेकर विशेष अंतर नहीं है इसलिए उन्होंने वहाँ जाना उचित नहीं समझा। बौद्ध धर्म का चयन उन्होंने क्यों किया वह एक लम्बी कहानी है और आज का हमारा वह विषय भी नहीं है।

बाबासाहब ने इस बात को भलीभाँति जान लिया था कि यदि हमें जाति व्यवस्था को समझना है तो धर्म के चश्मे से बाहर निकलकर ही देखना होगा। इसे केवल हिन्दू या किसी अन्य धर्म के समाज की एक बुराई मानना ऐतिहासिक और राजनीतिक दृष्टि से गलत होगा। उस दौर में जब अन्य धर्मों के अंतर्गत भी जाति व्यवस्था के सामाजिक अध्ययन किये जा रहे हैं। इस बात को हमें अच्छी तरह से समझ लेना होगा कि जातिव्यवस्था भारतीय समाज की केवल सामाजिक नहीं अपितु एक राजनैतिक समस्या है और जिसकी तह में मूलतः आर्थिक कारण हैं और धर्म इसका एकमात्र समाधान नहीं है।

मित्रों प्रश्न तो हमारे सामने बहुत सारे हैं लेकिन आज इस मंच से उन सभी प्रश्नों पर बातचीत करने का समय नहीं है। मैंने बाबासाहब के इतिहास बोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को लेकर अपनी बात शुरू की थी। आप स्वयं ढूंढ-ढूंढ कर बाबासाहब का लिखा साहित्य पढ़िए यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विश्व की आर्थिक आधार पर समीक्षा करने की समझ आप में भी उत्पन्न होगी।

हो सकता है आज आर्थिक और सामाजिक स्तर पर पहले जैसी स्थितियाँ आपके साथ न हों। आप अपने पूर्वजों से अधिक सम्पन्न हों, आर्थिक व सामाजिक, राजनैतिक दृष्टि से सुदृढ हों। आपकी प्रतिष्ठा सर्वव्यापी हो लेकिन इतना ध्यान रखिये कि सम्भव है इसी देश के किसी कोने में आपके ही नाम और जाति का कोई गरीब किसान इस समय आत्महत्या कर रहा हो, वह जो दिल्ली में संसद भवन के सामने कपड़े उतारकर गर्म दहकती हुई सड़क पर लोट रहा है, अकाल से पीड़ित वह तमिलनाडु का किसान आप ही का भाई है।

हो सकता है आपके ही जैसा काम करने वाले किसी व्यक्ति को दुत्कार कर उसके घर से बेदखल किया जा रहा हो, आपके ही नाम की कोई बहन किसी अपने की ही कोठी में या किसी बंगले में किसी की हवस का शिकार बन रही हो, आपकी बेटी की उम्र की कोई बच्ची अपने घर से मीलों दूर किसी ईट भट्ठे पर किसी मालिक के शोषण का शिकार हो रही हो, आपके युवा बेटे की उम्र का कोई बेटा, नशे की लगाई हुई लत का शिकार होकर कहीं बंधुआ मजदूरी कर रहा हो।

मित्रों सिर्फ देश मे ही नहीं सम्पूर्ण विश्व मे आज वह बुरा समय आ गया है जब शोषण, दमन व अत्याचार सिर्फ जाति, धर्म अथवा आर्थिक स्थिति देखकर नहीं किये जा रहे हैं।

हो सकता है आज भी कहीं कोई हमारा ही भाई, अपने अतीत की धार्मिक बेड़ियों में और अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ हो, बाबाओं, बैगाओं, ओझाओं, सिद्धों और मांत्रिकों की शरण में पड़ा हुआ हो। किसी नीम हकीम से अपना इलाज करवा रहा हो। किसी तोता छाप ज्योतिषी से पूछ रहा हो महाराज मेरे अच्छे दिन कब आयेंगे?

उठिए और आलस्य छोडिये, बाबा साहब ने यह दिन देखने के लिए संघर्ष नहीं किया था। आप भले ही उनकी पूजा न करें, और करें भी क्यों वे तो स्वयं ही पूजा के खिलाफ थे, लेकिन आप कम से कम उनकी और अन्य सामाजिक विचारकों की किताबें पढ़िए। वे क्या सोचते थे और क्यों सोचते थे, उनके विचार की मशाल हाथ में नहीं बल्कि अपने दिमागों में जलाए रखिये और मरने से पहले आनेवाली पीढ़ी को सौंपते रहिये। इस काली रात के बाद सुबह का सवेरा बहुत दूर नहीं है,.. आज बाबासाहब के आम्बेडकर को पढ़िये, गांधी, विवेकानन्द, भगतसिंह को पढ़िये।

आज बाबासाहेब डॉ भीमराव आंबेडकर के जन्मदिवस पर उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जय भीम, जय हिन्द, जयभारत।

शरद कोकास

जय भारत भाग्य विधाता

बाबा साहब को पैदा कर ये वसुंधरा गुमान करें
अपने इस पुण्य कर्म पर माटी सदा अभिमान करें।

सदियों से शोषित भारत में समता के सुमन खिले
गौतम आये ज्यों धरती पर जग सारा गुणगान करें।

मुट्ठी भींच तनी भुजाये और गगन में शोर हुआ
गूंगे बोल उठे जय भीम वाणी में उनके जोर हुआ।

बहरे कानों में गूंजी आवाजें लगंडे लगे दौडने
क्रांतिसूर्य के ज्ञान का प्रकाश चारों ओर हुआ।

इतिहासो को मिला नही जिनकी पीडा का गायक
सविंधान निर्माता बनकर आये तुम सबके नायक।

बोधिसत्व कहा विश्व ने सम्राट अशोका सत्य हुये
जय भारत भाग्य विधाता विकसित मानव परिचायक।

लोक डोगरे स्वप्निल
कवि अधिवक्ता

कुँ. नरपतसिंह 'नादान'

ना बरसियो अब रे मेघा, बिन ऋतू बिन बात।
मोती वरगा धान खेत में, बहुत जगायी रात।।
मेहनत पर न फेर तूँ पानी, बुझा ना मन की आस
जे तू ऐसो कर गयो बदरा, दिल पर लगे आघात।।

भूमि सींची है रे बदरवा, माह पोष की रातों में।
हड्डियां कांप उठी थी तन की, सर्दी के जगरातों में।।
खेतों में ही मनी बदरवा,अपनी तो सक्रांत।
ना बरसियो अब रे मेघा.....२

बीज बिजाया है रे बदरवा, सेठ से ले के उधार।
एक बून्द से डूबे बदरवा, नाव मेरी मझधार।।
कर्ज के हँसिये टेंग हुए है, अपने तो दिन रात।
ना बरसियो अब रे मेघा....

कर्ज का दर्द ना तोहे पता, बस भाये पपीहा राग।
बिन रोटी के बता मिटेगी, कैसे पेट की आग।।
करूँ विनती हाथ जोड़ के, दे मोहलत री सौगात।
ना बरसियो अब रे मेघा....

बर्बादी के मंजर देख के,आँखे अब पथराई है।
टूटे छप्पर फटी जूतियां,देते मेरी गवाही है।।
अखियन दरिया मत बना ,ना बना तू काली रात।
ना बरसियो अब रे मेघा....

जल, प्रकृति और पर्यावरण

तपती भूमि झूम उठती हैं
जल जो कुछ बूंदें गिराता हैं।
खुश होकर बनती धरा उपजाऊ
किसान अन्नन उगाता हैं।

अन्नन से बनते हैं तंदरूस्तं
पशु-पक्षी व सारे जीव।
जीवों को संतुष्टी देख
पर्यावरण संतुलित हो जाता हैं।

शुरूआत जल से ही तो होती हैं
धरा बिन जल के बंजर होती हैं।
ज्यों लगा दिये कुछ पेड़ हमने
प्रकृति खुश होती हैं।

वर्षा श्रीवास्तव

देखो! कैसे सूना पड़ा है
पानी का मटका।
तड़प रहे हम, तड़प रहे तुम
बीज भूमि में ही हैं अटका।

अब तो बचा लो थोड़ा पानी
भूमि को भी नहाने दो।
प्रकृति रहेगी हरी-भरी
पर्यावरण को मुस्कुराने दो।
पर्यावरण को मुस्कुराने दो।

विजय कुमार अग्रहरि 'आलोक'

मै हूँ।

गहराती रात की
एकान्त खामोशी है
और
कमरे में
नंगी पीठ सी सपाट
तेज रोशनी है।
रात जवान हो
तो रोशनी भरी पूरी
और भड़कीली दीखती है।
आधी रात गये
सन्नाटे की सीSS-सीSS सी
मादक आवाज
दूर बहुत दूर तक
गूंजती है।
दरअसल ये रोशनी
ये खामोशी
ये रात भी
सब मै ही हूँ।
सो रही सहचरी को नहीं पता
आधी रात की रोशनी का सच,
फैलते इस सन्नाटे का मादक शोर।
नींद को क्या पता
रात कैसे जवाँ होती है?
रोशनी आधी रात
किस कदर रोशन होती है?
रात भर सन्नाटा
कितना कुछ बोलता है?
दुनिया जब बेहोश होती है
बादलों के घने खेत में
छुपता-छुपाता
दीवाना चाँद
किससे मिलने निकलता है?
आसमान का पूरा चाँद
धरती पर पूरा जगा मै
दोनों दरअसल जम गये हैं।
नहीं मिली चाँद को
कभी उसकी मासूका।
अलबत्ता नजर गड़ाये
सूरज ने हमेशा ग्रहण लगाया है।
चाँद, मै और मुझ से कुछ लोग
कहीं न कहीं जग रहे होगें
यह कविता केवल उन्हीं के लिए है।

गज़ल

कहाँ पे जाके रूकेगा ऐ गम!बता तो जरा?
जमीं पे डाले रहेगा तू कब तलक डेरा..

महकते फूल न हों कांटों पे हम तो चल लेंगे-
खुशी की खुशबू से कह दो लगाए अब फेरा..

जिसे भी देखिये वो अपने आपमें गुम है-
कोई पुकार तो गूंजे,कोई रूके तो जरा..

अंजुलता सिंह

शब ए गम पूछती रहती है सहर से अक्सर-
समां क्या यूँ ही रहेगा ये सिसकियों से भरा?

ये सब परिंदे भी उन्मन उड़ान भरते हैं
सहमके डाल पे बैठे हैं, दे रहे पहरा..

ये लंबी रात तो सोने भी नहीं देती है
सहर बताके रहेगी चमकने दो तो जरा..

मौत बांट रहे हैवान

शिवनंदन सिंह

विश्व कोरोना संकट में
सूरसा जैसा फैल रहा
मौत का प्रलय हर पल
मानव जाति झेल रहा
कोई नहीं अछुता इससे
डरा राजा-रंक हर कोई
न जाने किन गलियों से
मौत का कहर आ टपके
समझाने से समझता नहीं
जाहिल हैवानों की टोली
शहर-शहर मौत बांट रहा
डरा-सहमा हर कोई।

नीना सिन्हा

यह एक ऐसा मौसम था
सुबह सुकूँ लेकर नहीं आती थी
बस इक रात और गुजर जानें का
इत्मिनान लिऐ निःश्वाँस छोड़ती!
तुम कहाँ थे...राम

किताबों, लोक कथाओं से उतर कर
मन में, स्वेद ग्रंथियो में प्रवेश कर गये!
सीता अब सिर्फ विवश हो वन में रोती नहीं
उन निर्विघ्न बहे आँसुओं नें अब
सारा ब्रहांड डूबा लिया है!

अन्याय का प्रतिकार या प्रतिफल इक छोटा सबक
बस भूल जानें को नहीं रहा!
पूरी पृथ्वी अपनें उत्खनन,
विनाश का हिसाब माँग रही
और मनुष्य स्तब्ध है
अपनें दिऐ गये जख्मों का अंजाम देख कर!

दूनिया अब सप्ताह के सात मनोरंजक दिनों में
नही बँटी!
उस परमपिता नें दिखा दिया कि
सभी दिन एक जैसे है
और सभी रातें अनवरत, असीमित!
उसनें बताया कि उपादानों का मोल समझना था
वों अनमोल थी...
उसको व्यर्थ नहीं करना था!

लेकिन कितना मुश्किल है
जब तक लोगों ने समझा
झंझावात आ चुका था।
लहरें हिलोर कर रही थी
मन की भी....
उस विष्णु की शैय्या की भी!

तुम आँख खूली रखना और
अपनें सबक याद रखना!
समय ने सब के
अनुक्रमण तैयार कर लिऐ हैं...!

वहाँ सिर्फ आत्मा ही इकमात्र गवाह
और ऑथेन्टिक दस्तावेज मानी जाऐगी!

प्रदीप पुष्पेन्द्रे

किसी हादसे ने लिख डाला
मेरा नाम तुम्हारे घर में।
प्रश्न पूछता दरवाजे से
खिड़की हिलती है उत्तर में।

दरवाजे पर लटका ताला
पर अंदर शायद कुछ हलचल।
नहीं दिखाई देता फिर भी
पड़े सुनाई कुछ कोलाहल।

जैसे अक्सर उठती गिरती
हो लहरें गहरे सागर में।

संकेतों की भाषा से जो
खिड़की ने मंजर गढ़ डाला।
गली गली चौराहे ने वो
उससे पहले ही पढ़ डाला।

हम अनजान रहे पर चर्चा
फैली है धरती अम्बर में।

वक्त थपेड़ा मिटा न जाये
लिखा हुआ पैगाम रेत पर।
कहीं हादसा कोई आकर
गिरा न दे अपना घर सुन्दर।

वातावरण तभी ठहरा है
मुरझाया उपवन इस डर में।

कभी भूल से रोपा तुमने
तुलसी का बिरवा बचपन में।
वही भूल अब श्रद्धा होकर
बनी हुई शोभा आँगन में।

इसी आस्था की श्रद्धा ने
बसा दिया ईश्वर पत्थर में।

अंधकार देखते हैं

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

किरण मोर

अवकाश

जितने दिन अवकाश मनाएं
छिपे हुनर को बाहर लाएं
सुप्त कहीं था व्यस्तताओं में
एक बार फिर उसे जगाएं।

अपने को पहचान नई दें
सोये स्वप्न को उड़ान नई दें
जिम्मेदारी में रह गई अधूरी,उस
चाहत को सोपान नई दें।

कोई तुममें कलाकारी थी
अपनी धाक जमा रखी थी
नून,तेल, लकड़ी के चक्कर में
ताक रख बंद कर अलमारी थी।

फुरसत में आओ उसे निकालें
कितनी है बाकी मन को खंगालें
अपने उन्ही दिनों में जाकर
वापस फिर अतीत को पा लें।

बच्चों संग बच्चे बन जाएं
कैनवास पर यादें सजाएं
रंग ब्रशों से नये रंग भर
छुट्टियों को रंगीन बनाएं।

आँखों में आँसुओं की धार देखते हैं
आदमी को बेबस , लाचार देखतें हैं

कैद होकर रह गया चारदीवारी में
उजड़ा हुआ अब तो बाजार देखते हैं

कैसा है ये कुदरत का कहर देख लो
बन्द पड़ा सारा कारोबार देखते हैं

वीरान है गांव शहर और सारा जहां
उजड़ी हुई बस्ती खोई बहार देखते है

रोशनी छीन गई उजाले दूर हुए
होता हुआ अब तो अंधकार देखते हैं

अजय कुमार झा

अनचाहा प्रश्न!

मृत्युपीड़ा की संवेदना में,
वेदना बेरोजगारी की,
सर चढ़ा है महंगाई की मार,
सन्निहित भ्रष्टाचार का व्यभिचार,
व्यथा आयातित आपदा का,
लाकडाउनी आपातकाल!

संक्रमित दरवाजे के पीछे कैद,
है सहमी-सी जिंदगी।
मातमी सन्नाटे में,
सूखी अतड़ियों की चीखें,
बजता सायरन सा,
बेदखल रोजगार से,
बेघर दिहारी मजदूरों के।

बेरोजगारी के अलाव में,
दहकते हड्डियों के अंगार से,
आश्रय ओ' भविष्य की तलाश में,
सड़कों को नापते जन सैलाब,
लक्ष्यहीन कतारबद्ध गतिमान लोग,
और हम गिन रहे मौतें,
संक्रमित-असंक्रमित आहतों की।

बेबसी के आलम में,
दोराहे पर खड़े मानव को,
पढ़ाया जा रहा है पाठ,
विषाणुओं से संक्रमण का,
उलझाकर परिभाषित मृत्यु में,
'मरना तुम्हारी नियति है',
विषाणु ओ' व्यवस्था की मार से।

जीवन के दलदल में,
धँसती जिंदगी का, कैसा यह उपचार?
शंखनाद कैसा?
घड़ीघंट के नाद से,
उतारी आरती किसकी?
तालियों की गड़गड़ाहट,
करता किसका अभिनंदन?
बुझाओ बिजली, मनाओ दिवाली,
है यह शासनादेश!

लाकडाउन पर पड़ा भारी,
बढ़ चले अनगिनत पग, हो लहुलुहान,
अभिसारित छाले के जखमों से,
कंधे पर उठाये संतापों के बोझ,
उंगली थामें नौनिहालों का,
साथ है गर्भस्थ भविष्य, सहगामिनी की!

है दृश्य दुर्धर्ष, सहता हृदयाघात!
आशंकित क्वारिंटाइन से,
मानवीय जिजीविषा की चाह में,
धता बताते डिसैसटर को,
संक्रमण ओ' सोसल डिसटेंस को!

है मची होड़, अकबकाए जीवन में,
टूटे सपने को जोड़ने की,
खोये भविष्य को तलाशने की।

परोस रहा है मिडिया,
प्रायोजित अर्नगल प्रवंचना प्रलाप,
मचा है शोर,
अनुकंपा और दान महादानियों का!

सवाल दर सवाल है,
हमें जबाब चाहिए,
मानव ओ' राष्ट्र द्रोही का यक्ष प्रश्न,
संताप और संकट का,
आखिर अपराधी कौन?

अमित के किशोर

सुना था कि
खून के रिश्ते बहुत
मजबूत हुआ करते हैं,
लेकिन अब ऐसा नहीं है।।
सुना था
कच्चे धागे भी रिश्तों को
मजबूती से जोड़ा करते हैं,
लेकिन अब ऐसा नहीं है।।
सुना था
शब्दों से लोग बसा लेते हैं अपनी दुनिया,
अब तो लोग शबदों को अपने हिसाब से रखते हैं,
अब कहाँ अपनो की बसती है दुनिया,
बसा लेते हैं अपने मतलब की दुनिया,
आजकल ऐसा ही है।।
रखे जो बात अपनी कोई,
कहाँ समझती है ये दुनिया।।
अपने ही जीने के हिसाब से
औरों को समझती है ये दुनिया।।
उममीदों के दामन में क्या रखा है,
कौन किसी से क्यूँ बंधा है,
पता नहीं।।
लेकिन इतना तो है कि,
आज के वक्त में खून से बढ़कर,
रिश्ते निभा रही है ये दुनिया।।
कोई नहीं, कोई खास नहीं,
वक्त के हिसाब से रिश्ते भी
रिश्तेदारीयाँ निभा रही है ये दुनिया!

वेदप्रकाश लाम्बा

हम यह लंका भी जीतेंगे

पथ चतुष्पथ लुटे पिटे
वैधव्य भोगती वीथियां
लौटा बचपन वनों का
गिरिकंदरा खिलती सीपियां

औसान झेलती दीवारें
आंगन खोजते किलकारी
कर आनन से दूर हुए
मति की गति हुई बेचारी

मंदिर की देहली हुई अवाक
घंटा निद्रालीन हुआ
लोभ मोह और काम क्रोध
सब अहंकार अधीन हुआ

हे मात इस कलिकाल में
मार्कंडेयवचन प्रमाण हुआ
सांस लीलती इक योगिनी
वुहनिया जिसका नाम हुआ

औंधा कपाल मिचती आँखें
जीवनरथ विपदा भारी
दीपों की अवलियां सजा रहा
उजड़े बागों का पटवारी

पृथुसुता फिर हांफती
अभय मांगती संतानों से
दानव मानव के भेस में
झांक रहा है वुहानों से

पलों विपलों की एक चूक
सदियां चुगती पलकों से
नदियां जैसे हों थक गईं
मीन हीन ज्यों शल्कों से

नुकीला कंटीला एकांतवास
दिवस बरस से बीतेंगे
रामाश्रय अमोघ अस्त्र
हम यह लंका भी जीतेंगे

धर्मध्वजा के हम वाहक
सनातन संस्कृति अखंड सधवा
दुपहरी होवे कैसी कैसी
दोनों छोर सदा भगवा

युगबीच चमकती बिजलियां
नभ खिला खिला आभास
प्राची से उठेंगे फिर दिनकर
मन में है विश्वास ...!

बृजनाथ श्रीवास्तव

अन्नदाता किसान

उस समय जब
मद्य के नशे में डूबे
एअरकंडीशंड कमरों में सोये रहते हैं
राजा महराजे और युवराज
धूप के आँगन में पर फैलाने तक

किंतु शुरू हो जाता है मेरा दिन
सूरज निकलने से बहुत पहले
मुर्गे की पहली बाँग के साथ ही
परिंदे भी चहचहाने लगते हैं
कोटरों और घोंसलों से
बाहर निकल कर

बाड़े में बँधी हुई गायें
देने लगती हैं आवाज
मैं करने लगता हूँ सानी पानी
माँ के स्तनों से दूध चूसने के लिए
मचलने लगते हैं बछड़े
मैं खोल देता हूँ उन्हें
बछड़े लगा देते हैं अपने मुँह थनों से
और चाटने लगती हैं उन्हें उनकी माताएं

हहराने लगते हैं
विशाल पीपलों के अनगिनत पत्ते
पुजारी करने लगता है आरती
और बज उठती हैं मंदिर की घंटियां

चना चबेना करके
मैं पहुँच जाता हूँ अपने खेतों
और उनमें खड़ी लहराती
बालियों के दाने दाने से
बतियाने के लिए
और इसी तरह गुजरते रहते हैं
मेरी उम्र के दिन पर दिन
घर-परिवार, पशु-पक्षी, फसलों और
नदी तालों से बतियाते हुए

किंतु ठगा जाता हूँ रोज रोज ही
शहर की मंडियों
और उनके दलालों द्वारा
क्योंकि मैं अन्नदाता किसान हूँ

प्रदीप सोनी 'शून्य'

अँधियारा सा
लगने लगा,
अब तो प्रकाश भी।
मुँह चिढ़ाने लगा है,
बेवजह अवकाश भी।

बेसुध से पड़े हैं,
शहर के आज चौराहे।
देवालय की दिव्यता को
दृष्टि कौन निहारे।
ठगे से हैं धैर्य पल,
हुई घायल आस भी।
मुँह चिढ़ाने लगा है,
बेवजह अवकाश भी।

समझ से है परे,
यह जय है कि पराजय।
मंथन करो स्वयं समझो,
प्रकृति का आशय।
प्रार्थना भी होगी सिद्ध,
और सफल प्रयास भी।
मुँह चिढ़ाने लगा है,
बेवजह अवकाश भी।

विन्ध्यप्रकाश मिश्र

गांव की मिट्टी में शोधी महक है।
पेड के है छांव चिडियो की चहक है।
संस्कारो से अभिसिंचित लोग है।
कार्य मे मिश्रित यहां पर योग है।
सादगी है मूलता है न बनावट,
मिल रहे है प्रेम से न है अदावत।
बोलियो मे अजब सा मिठास है,
गांव की मिट्टी जरा कुछ खास है।
प्राकृतिक हवा पानी शुद्ध है
कम है कीमत वस्तु की दर हाफ है।
मिलकर रहते कुटुम इकसाथ है
मेहनत होती है यहां दिन रात है
कदम दर कदम बडो की सलाह
काश मिल जाता पुराना गांव नीम की छांह
शोधी महक मिट्टी की गांव मे बुलाती है
याद आती गांव की आंखे भर आती है
समाज है मिलकर मदद करता यहां
ढूंढता गांव सा मिलता कहां है।
आम पीपल नीम की घनी छांव मे
खेलते थे दिन दिन कई जब गांव मे
टूटे खिलौने से ही मिल जाती खुशी थी
आज वैसी खुशी मिलती नही है।
धन तो मिलजाता कृत्रिमता नगर मे
जहर है प्रदूषण बचकर रहो शहर मे।

एक चेहरा यादों मे बसता..!

राजू उपाध्याय

प्रीत राग की रच दी गाथा, उसमे है कोई बात नई।
एक चेहरा यादो में बसता, उसमे है कोई बात नई।

आँखों में है मौन निमंत्रण, अधरों पर मनुहार लिये,
भूले बिसरे वो मिल जाता, उसमे है कोई बात नई।

मन के अन्तःपुर में उसने प्रेम बाण से बार किये है,
हृदय स्पंदित हुआ है मेरा, उसमे है कोई बात नई।

गीत छंद की पाती लिख कर, उसे सदा पुकारा है,
सुनकर वो थोड़ा मुस्काता, उसमे है कोई बात नई।

मन की सांकल खटका के लौटा करता ड्योढ़ी से,
जोगी सा वो बनके आता, उसमे है कोई बात नई।

प्रीती अमित गुप्ता

देखादूनी करते हैं, अजीब है लोग
सादगी और त्याग नहीं कर पाते
आलोचक तो बहुत है, यहाँ
समीक्षा कर सहायता नहीं कर पाते
लोग फुरसत में हैं, परेशान भी है
देश के हालात पर हैरान भी है
जप-तप की भूमि में हम
बस दिखावे में घिर गए हैं
स्वयं के अनुसार जीवन नहीं जीते
हालांकि,अनुसरण अच्छा हो
तो फिर कोई बात नहीं
ये क्या देखादूनी के फेर में तो
चिंता ही चौगुनी कर रखी है
ये बात तो जरा भी ठीक नहीं।

लॉक डाउन-बेनकाब रिश्ते

डॉ.पायल राय

कोई किसी का नहीं... नाते हैं नातों का क्या?

सचिन! ओ सचिन क्या कर रहे हो? कब से देख रही हूं मोबाइल और टीवी में ही नजरें गड़ाए हो। सामने खाना रखा है अभी नहीं खाया तुमने।

ऐसा क्या जरूरी आ रहा है जरा मैं भी तो देखूं।

सचिन झुंझलाते हुए बोला- क्या देख रहा हूं? लो आप भी देखो पहले ३१ मार्च तक ही रहना था अब तो पूरे २१ दिन का लॉक डाउन कर दिया। ओफ्फ! रहो घर में।

क्या? २१ दिनों तक घर पर ही रहना पड़ेगा। मां के स्वर में आश्चर्य था सच में- मां टीवी की ओर देखे जा रही थी। घर पर रहने का कारण तो बहुत गंभीर था परंतु अनामिका देवी का मन इस बात से प्रसन्न था १ दिन से ज्यादा घर पर ना रुकने वाला उनका बेटा अब पूरे २१ दिन उनकी आंखों के सामने उनके साथ रहेगा वह खुश थी कि उनका एकाकी मन और सूना घर दोनों सचिन के रहने से खिल उठेंगे ।जब से पढ़ाई के लिए घर से निकला तब से घर पर रुकना तो भूल गया शुरू-शुरू में तो २ महीने पर दो-तीन दिनों के लिए घर आ जाता था मगर धीरे-धीरे पढ़ाई का बोझ बताते हुए ६ महीने बाद आने लगा। मोबाइल पर भी बहुत कम बात करता था १ दिन रुक कर वापस चला जाता था जब से नौकरी लग गई तब से तो साल में एक बार आता है। मां पिताजी की खबर फोन से ही लेता रहता है।

पिछले वर्ष पिताजी के देहांत पर आया था और ३ दिन में ही सब कुछ निपटा कर चला गया था १ वर्ष बाद पिता की बरसी के लिए आया था सुबह की फ्लाइट से वापस बैंगलोर जाना था मगर रात १२:०० बजे से ही संपूर्ण लॉक डाउन की वजह से सचिन का प्रोग्राम कैंसिल हो गया अब वह सभी दोस्तों से संपर्क कर रहा था कि कोई व्यवस्था हो तो वह वापस अपनी कंपनी में पहुंच जाए मगर कोई रास्ता नहीं निकल रहा था लॉक डाउन का एक दिन सचिन को एक १ साल के बराबर लग रहा था अनामिका देवी सचिन की बेचैनी देख रही थीं वे उसे समझाने का प्रयास करती तो सचिन चिढ़ जाता था। कहता- तुम्हें क्या पता बड़े शहर की जीवन शैली इस छोटे से शहर और इस छोटे से घर में तुम्हारी जिंदगी गुजर गई घर में बंद बंद रहकर मेरा तो दम घुटने लगा है ।

सचिन की ऐसी हालत देखकर मां को लगा कि बचपन की तरह उसे फिर से मना लेंगी। बचपन की याद आते ही उन्हें याद आने लगा कि गर्मी में स्कूल की छुट्टियां होने पर जब भी उसे धूप में खेलने नहीं जाने देती थी तब भी वह ऐसे ही झुंझलाता थाऔर तब वे उसकी पसंद के पकवान बनाकर उसे खिलाती और सचिन खुश हो जाता था। बेटे के प्रेम में डूबी मां ने बचपन वाला तरीका आजमाने का सोचा और रसोई घर की तरफ मुस्कुराते हुए सचिन की मनपसंद कचौड़ी और खीर बनाने के लिए चल पड़ी। कचौड़ी बनाते बनाते हैं सचिन की बचपन की शैतानियां भी याद आने लगीं कि कैसे सचिन चुपके से गरम गरम कचौड़ी हाथ में उठा कर भागता और पीछे पीछे प्लेट लेकर यह कहते हुए दौड़ती थी- प्लेट में रखकर खाले बेटा हाथ जल जाएंगे।

बड़े ही मन से उन्होंने कचौड़ियाँ बनायी और खीर को पकने के लिए चढ़ाकर सचिन के कमरे की ओर बढ़ी, बाहर से ही उन्हें सचिन की आवाज सुनाई देने लगी सचिन कह रहा था- मेरी जान तुम्हें क्या पता तुम्हारे बिना मैं एक पल कैसे काट रहा हूं एक तो तुमसे दूर हूं ऊपर से मां के लेक्चर सुनने पड़ते हैं, मैं बेकार में ही आ गया इस छोटे से घर में मेरा दम घुटता है कैसे काटूंगा मैं २१ दिन इस घर में। देखता हूं, कोई ना कोई व्यवस्था करता हूं, तुम्हारे साथ तो २१ दिन क्या २१ साल भी घर में बिता सकता हूं मगर मां के साथ पागल हो जाऊंगा। जब देखो तब कुछ खा ले बेटा देख तेरी पसंद का बनाया है, जब देखो तब पुरानी बातें सुना कर मेरा दिमाग खराब कर देती है मुझे पता होता कि पापा की बरसी के चक्कर में मुझे इस घर में २१ दिन रहना पड़ जाएगा तो मैं कभी ना आता ।मां को जो करना होता खुद ही कर लेती। मैं जल्दी ही कोई जुगाड़ लगाता हूं यहां से निकलने का। अनामिका देवी स्तब्ध होकर बाहर खड़ी सब कुछ सुन रही थीं, उनकी आंखों से अविरल अश्रु धारा बह रही थी उन्होंने सोचा भी नहीं था कि १८ वर्षों तक अपने माता-पिता के साथ इसी घर में रहने वाले सचिन के लिए एक दिन यह घर छोटा और माता-पिता बेगाने हो जाएंगे। उन्हें सचिन के पिता का प्रिय गीत में याद आने लगा.

....

कसमे वादे प्यार वफा सब बातें हैं बातों का क्या...

कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं नातों का क्या...

मरुस्थल सा मैं

नीरज त्यागी

मरुस्थल सा जीवन है मेरा पूर्णतया निराशा भरा,
फिर भी कभी-कभी कुछ ओश की बूंदों से मिलता हूँ।

सोचता हूँ, समेट लू सबको अपनी आगोश में,
मेरे गर्म एहसास से मिलकर बूंदे भाँप बन उड़ जाती है।

गर्म रेतीले मरुस्थल सा मौन जीवन के साथ चल रहा है।
कभी-कभी शाम की ठंडी हवा के मुखर झोंके से मिलता हूँ।

सोचता हूँ, तोड़ दू सारी बंदिशे अपने मरुस्थल होने की,
बस इन गुदगुदाती ठंडी मुखर हवाओ में अविरल बहता जाओं।

**खुशियाँ ही खुशियाँ मिले, दुआ है
जीवन फूल सा महकें ये, दुआ है
सबके दिलों में बसती रहें हमेशा
आप आदर्श बने सबकी, दुआ है।**

संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति
डॉ.प्रीति समकित सुराना
एवं अन्तरा शब्दशक्ति परिवार की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ.प्रीति समकित सुराना

आज से
बाईस साल पहले
हम दो अजनबी
सात वचनों के बंधन में बंधकर
परिवार और समाज की साक्षी से
दाम्पत्य सूत्र में बंधे।

तन्मय
और फिर जुड़वा बच्चों
जयति-जैनम ने
इस रिश्ते को मजबूत करते हुए
मम्मी-पापा होने का गौरव
और दायित्व दिया।

जिसका निर्वहन करते हुए
हर अभाव और प्रभाव में
हर सुख और दुख में
हर कर्तव्य और दायित्व में
हम साथ-साथ चले
लड़े-झगड़े तो भी दाम्पत्य का पुट
जीवन में रचा-बसा कर!

कदम से कदम मिलाकर,
एक दूसरे का हौसला बनकर,
एक दूसरे की प्रतिभाओं और गुणों को
अवसर और सानिध्य देकर,
एक दूसरे की गलतियों को माफ करके,
एक दूसरे की गलतियों को सुधारने में सहायक बनकर!

कहते हैं
जब बच्चे वयस्क हो जाते हैं
तो पति-पत्नी का रिश्ता दोस्ती का हो जाता है,
हम तो वो खुशकिस्मत रहे जो
पहली मुलाकात से ही दोस्त बनकर
एक-दूसरे की ढाल बने, साथ रहे, साथ चले,..!

इसलिए आज जब तनु २१ का
और जैनम-जयति १८ के हो गए
हम वादा करते हैं
कि हमारा रिश्ता और हमारी दोस्ती
और भी गहरी होगी,..।
अब विवाद-संवाद से ज्यादा
साथ होने भर से प्रगाढ़ता का अनुभव करेंगे!
जिस तरह पिछले बाईस सालों में
मेरी सपने तुम्हारे
और तुम्हारी खुशियां मेरी
प्राथमिकता रहे हैं
हमनें जिस तरह एक-दूसरे से ही नहीं
बल्कि एक-दूसरे के रिश्तों,
कर्तव्यों और इच्छाओं का सम्मान किया है,
ठीक वैसे ही जब तक हम हैं
हमारा रिश्ता, हमारी मित्रता अटूट होगी।

आओ! आज फिर
उन सात वचनों को दोहराते है
सुख में, दुख में, धर्म में, कर्म में,
कर्तव्य में, अधिकार में और प्रेम में
इन सात सोपानों में
हम साथ थे, हैं और रहेंगे
जीवनसाथी जीवनभर और जीभर,...!

सुनो!
शादी के बाईस बरस साथ देने
और
सही मायनों में साथ होने के लिए
ढेर सारी बधाई और शुभकामनाएँ और आभार!
तुम्हें भी मुझे भी

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक - अंतरा शब्दशक्ति

विवाह की वर्षगाँठ पर
अंतरा शब्दशक्ति परिवार
की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ

टीना संदीप सोनी

दीप जलाया आस का
भरा तेल विश्वास का
इस अमर ज्योति से आशा करते
जीवन के उत्थान का।

सोच यही थी, चाह यही थी
मगर डर था तूफान का
अगर तूफान आ जाए
तो क्या होगा उत्थान का?

मगर हौसला मिला जुगनू से
जो तूफानों से लड़ता है
तूफानों से लड़कर भी
सदा चमकता रहता है।

पाकर हौसला आया जोश
भरा तेल विश्वास का
फिर गहन अंधियारे को चीरकर
दीप जल गया आस का।

रागिनी त्रिपाठी देवशी

कष्ट सभी मनमाने होंगे
विरहा ने ही ठाने होंगे
आज घिरे हैं बादल काले
तम में दीप जलाने होंगे
धैर्य परीक्षा ले तो रहा है
जीत के शंख बजाने होंगे
सुनो सांस को धरने वालों
फूल नए महकाने होंगे
कब तक देगें राह दूसरे
रस्ते हमें बनाने होंगे
संकट में है देश हमारा
मिलकर हाँथ बढ़ाने होंगे
आओ कुछ दिन सह लें दूरी
प्रेम के बांध लगाने होंगे
देश ना होने देंगे बंजर
हर मुख पे ये तराने होंगे।

सुमन जैन 'सत्यगीता'

कृष्ण

तुम्हारे होने के अहसास मात्र से
जीने लगी हूँ मैं
अपने भीतर की राधा को
आजकल
हर पल,हर क्षण,हर सांस में।
स्वयं के भीतर की राधा को
पहचाने बिना
तुमसे मिलना असम्भव ही था
और इस सत्य को जाना मैंने
केवल तुम्हारी प्रीत में..
तुमसे मिलने की तड़प
में ज्यों-ज्यों
पिघलती चली गई मैं
त्यों-त्यों
आभास होने लगा मुझे मेरे भीतर
की राधा की उपस्थिति का
और जिस दिन
मैं मिल पाई अपने भीतर की राधा को
मैंने एक ही दर्पण में झिलमिलाते हुए देखे दो बिम्ब
जो कभी एक हो जाते
तो कभी दो
और उन दोनों में ही झिलमिलाती यह सम्पूर्ण सृष्टि..
तो कृष्ण !
क्या इस सम्पूर्ण सृष्टि का आधार केवल प्रेम ही है..?

जब जो होना... तब सो होना

संजीव 'शशि'

कोरोना के डर से बोलो,
क्यों छोड़ें हम स्वप्न संजोना।
ईश्वर ने जब तय कर रक्खा,
जब जो होना तब सो होना।।

केवल कर्म हमारे वश में,
फिर क्यों चिंतायें हों मन में।
हर पल साथ रहे अपनों का,
हर पल उत्सव हो जीवन में।

सतत चलें हम जीवन पथ पर,
क्यों सोचें क्या पाना खोना।
ईश्वर ने जब तय कर रक्खा,
जब जो होना तब सो होना।।

आओ करें प्रणाम उन्हें हम,
जिनका जीवन दीपक जैसा।
कभी डाक्टर कभी पुलिस बन,
कठिन समय में रुकना कैसा।

सबकी सेवा की खातिर है,
कांटों को कर लिया बिछौना।
ईश्वर ने जब तय कर रक्खा,
जब जो होना तब सो होना।।

प्रथम सत्य यदि जन्म जगत में,
अंतिम सत्य जगत से जाना।
मन में लगन रहे ईश्वर की,
भौतिक सुख में क्यों भरमाना।

अहंकार मत मन में पालो,
तन माटी का एक खिलौना।
ईश्वर ने जब तय कर रक्खा,
जब जो हो तब सो होना।।

जावेद अकरम

गजल

जायका तल्ख इंतेजार का था
रास्ता दूर तक गुबार का था

दिल में कांटे चुभो रही थी अना
नश्शा आंखों में इक्तेदार का था

लम्हा-लम्हा मिरे बुजुर्गों का
नेकियों का था, इनकेसार का था

गैर मुमकिन नहीं थी सुल्ह, मगर
सब जुनूं खोखले वकार का था

झूठ कहते थे कई चश्मदीद गवाह
खौफ सब को सलीब ओ दार का था

चेहरे सब बावकार थे, लेकिन
सारा मजमून इशतेहार का था

मुत्तहिद हो गये थे सारे हिरन
मसअला शेर के शिकार का था

अब न वो लोग हैं, न वो कदरें
वो जमाना भी क्या बहार का था

लखनऊ रास आता भी कैसे
मीर उजड़े हुए दयार का था

एक उसका वजूद ही जावेद
पैदलों में भी शहसवार का था

जगदीश पंकज

नवगीत

यह किस संकट की आहट है
भीतर बाहर अकुलाहट है
कुंठाग्रस्त मापनी लेकर
वर्तमान को नाप रहे हम

संयोगों ने अवसर देकर
जुटा दिये कुछ करने के क्षण
घर की दीवारों में बंदी
धूप-हवा के सारे लक्षण
आरोपित एकांतवास में
घुटे नहीं कोई स्वर पंचम

सन्नाटा वाचाल हुआ जब
सडकों, चौराहों, गलियों का
घर के कोनों दीवारों पर
राज चल रहा छिपकलियों का
कीट पतंगों की आवाजें
गूंज रही बस्ती में हरदम

अपनी-अपनी हमदर्दी के
अपने-अपने क्षेत्र बँटे हैं
साझे अनुभव के परिसर में
पूजा के अभिप्राय छँटे हैं
अनुशासन को तोड़ इबादत
पूजाघर में करती छमछम

जब पूरा ब्रह्मांड व्यथित है
शवयात्राएं बढ़ जाने से
उत्सवधर्मी सोच विकल है
शोक और भय के छाने से
सुस्त सांत्वना की बस्ती में
आँखें नहीं किसी की हों नम

सामूहिकता के प्रयास से
बच पाएंगे सब जड-जंगम

डॉ. अनिता जैन 'विपुला'

साकार

प्रिय!
तुम मिले
सन्ध्या मेरी
हुई सिंदूरी
क्षण-क्षण
आह्लाद भर देता...
दूर तक
जो थी
प्रतीक्षा फैली
आगमन से तुम्हारे
सिमट गई ...
सांध्य दीप-सा हृदय
रोशनी में
दिप-दिपा रहा...

अनुभूतियों में
जो तुम हुआ करते थे
इस पल
साकार पाकर
एक टक से दृग
निहार रहे तुम्हें
हुआ भान आज
क्या होता है
शब्द साकार होना...
और...और...
प्रेम के सागर में
डूबकर भी
तैर जाना!

मुकेश कुमार सिन्हा

न्यूज एंकर

लॉकडाउन की लीला ऐसी
कि इक्कीस उन्नीस करते हुए
चाहते न चाहते
कुछ घण्टों, मिनटों के दरमियान
पहुंच ही जाता है हाथ
पकड़ लेता हूँ रिमोट
टिपटिपाने लगती है अंगुलियां
कि शायद
कुछ अनचाहे न्यूज मे हो कुछ संवेदना
ऐसी भरी भारी उम्मीद को सुनने के लिए
हर बार उम्मीद का बस्ता उठाये
मन कहता है अबकी आएंगे कुछ अलग से व्यूज
जैसे आखिर हार गया कोरोना
या संवेदनाएं जीतने लगी
या फिर हम भारतीय
सोशल डिस्टेंसिंग की दूरी बनाकर भी
बरकरार रख पाए निकटता
धर्म से इतर रही कोशिश जान को बचाने की
आदि इत्यादि....
पर, इन दिनों
हर बार दरकती हैं उम्मीदें
चीखती हैं टीवी स्क्रीन
हर पल मृतकों की बढ़ती संख्या
विस्थापन का दंश झेलते भागते मजदूर
कोरोना के ऊपर भूख की छटपटाहट
पिज्जा के स्वाद की छटपटाहट
पूरे तब्लीगी समाज या कनिका जैसी की बेवकूफी
या संक्रमित लोगों की संख्या के
बढ़ते ग्राफ के रीयल न्यूज के साथ
दिखता है, चिल्लाता एंकर
जो संवेदनाओं के संवाहक के बदले
होता है चिन्दी उड़ाता हुआ शख्सियत
हर चैनल पर अलग अलग
बेशक भेषभूषा हो अलग पर
पर हरकोई मर चुके दिल के साथ करते हैं
मौत के जलालत पर बात
किसका चैनल कितना तेज
कौन इस कठिन समय में भी
घर पर न रहकर स्टूडियो से
पहुंचते हैं ब्रेक करते हुए कारस्तानियों के साथ
मरती संवेदनाओं के संवाहक के रूप में
अब हर पल मार रहे ये न्यूज एंकर
सूचना के दौर मे
उम्मीदों से इतर डर और घृणा बांटते हुए
बता रहे हैं कि कौन है कितना तेज!

मुकेश मनमौजी

लॉक डाउन

घर में कैद
खत्म सारा
बाहर का मजा
खाना बनाना
पापड़ बेलना
न जाने कैसी
मिली ये सजा
सुबह उठते ही
पत्नी पहले झाड़ू
हाथ थमाती
पूरा घर साफ करो
फिर चाय पिलाती
दिनभर काम करो हुई
कोई कमी जरा सी
देती धमकी मुझे
पुलिस बुला कहूंगी
कि आ रही तुम्हें
दो दिन से छींक
और खांसी
लाक डाउन से
चलते जाने क्या क्या
रहे शेष होना
रावण को तो मार गिराया
भगवान अभी आप ने
अब जल्द मार भगाइये
भयावह कोरोना

केवरा यदु 'मीरा'

आरजू

प्रियतम कितने प्यारे हो, मेरी अँखियों से पूछो।
पढ़ लो इन अँखियों में बस एक नजर देखो।
बसे हो श्वांस श्वांस में न बिछुडे जन्म सात में।
आरजू है मेरी, रखें निज हाथ, हाथ में।

है नेह तुमसे कितना, कैसे तुम्हें बताऊँ।
धड़कन में तुम बसे, दिल चीर कर दिखाऊँ।
मेंहदी से रचो हाथ मे, बिंदिया से सजो माथ में।
बसे हो श्वांस श्वांस में, न बिछुडे जन्म सात में।

मांगा जो मैंने विधि से, वैसा सजना है पाया।
मेरे प्राण मेरे साथी, बस मेरे मन है भाया।
जियेंगे साथ साथ में, लेकर हाथ हाथ में।
बसे हो श्वांस श्वांस में न बिछुडे जनम सात में।

तुम्ही मेरी खुशियाँ हो, तुम्ही मेरी बन्दगी हो।
पलकों में छुपाया है, तुम्ही मेरी जिन्दगी हो।
रहना नैनों के पास में, मिले हो सौगात में।
बसे हो श्वांस श्वांस में न बिछुडे जन्म सात में।

आरजू है दिल की, जब जब जनम मिले।
मेरे मीत संग मुझको सौ सौ जनम मिले।
रहें खुश साथ साथ में, हँसे मेरी बात बात में।
बसे हो श्वांस श्वांस में न बिछुडे जन्म सात में।

रेनु दीपक खर्द

मां सब जान जाती है

ना जताने से ना समझाने से
ना कहने से ना सुनाने से
बच्चे की दिल की हर बात
कैसे मां जान लेती है!

कम नंबर के उदास को,
प्रथम आने के उल्लास को,
मौका दिए बिना ही
मां सब जान लेती है!

बेटी के दिल की तरंगों को,
आसमान छूते बेटे की उमंगों को
कैसे संभालना है
मां सब जान लेती है!

उसूलों और जज्बातों के तूफान में फंसा है,
फर्ज औ कर्ज के भंवर में जकड़ा है!
रुख हवा का किधर है
मां सब जान लेती है!

अरमानों को जगाया नहीं,
भविष्य की आस को बंधाया नहीं,
दिल के मचलते हुए मंथन को
मां सब जान लेती है!

गोद में सर रखने के सुकून को,
वात्सल्य के स्पर्श और जुनून को
अनकहे हर भाव को
मां सब जान लेती हैं!

ममता की इस अदृश्य शक्ति को,
मां और बच्चे के अनमोल रिश्ते को,
ताउम्र रेनु निशब्द महसूस करती है!
क्योंकि मां सब जान लेती है...!

अंतु झकास

मैं सोचता हूँ

शायद!
अर्क मतलब निचोड़ा गया तरल
तरल मतलब समझता हूँ पानी
जहाँ पानी वहाँ उत्पत्ति
उत्पत्ति याने जनम
जनम याने नरक मतलब
जनमे हो तो मरोगे
मैं समझता हूँ नरक के बाद
तरक (तर्क) मतलब अनुमान
अनुमान मतलब विज्ञान
विज्ञान मतलब कई सदियों से
चली आ रही विपदाओं
पर रिसर्च
हमने कई महामारी पर काबू
पाया विज्ञान अब मौजूद है
इस महामारी पर भी काबू
पाएँगे हम बशर्ते शर्त इतनी है
की हम विज्ञान का साथ दें
पाखंड का नहीं।

संदीप कुमार

अगर तुम मेरे होते

हर सुबह शाम, लेता तुम्हारा नाम।
तुमको निहारना, होता मेरा काम।
तुम्हारे हाथकर, माथे को चूमता।
आँखों में डूबकर, नशे में झूमता।

गुलाबी गाल छूं, जुल्फें संवारता।
खुवाबों में भी मैं तुमको पुकारता।
गले लगाकर तुमको प्यार करता।
कानों में इश्क का इजहार करता।

तुमको बसाकर अपनी निगाहों में।
खोए रहता बस तुम्हारी बाहों में।
इन लबों को देख ना उदास रहता।
दुनिया से दूर, तुम्हारे पास रहता।

सारी खुशियां आगे राहों में होती।
सच में गर तुम मेरी बाहों में होती।
अपना हर दिन हर पल प्यारा होता।
तुम मेरी और मैं सिर्फ तुम्हारा होता।
अगर तुम मेरे होते।

ठाकुर दास 'सिद्ध'

गज़ल

थी मालिक की जात अलग, मजदूर अलग थे।
भूख अलग थी, प्यास अलग, नासूर अलग थे।

हमने बाँधी थी उनसे, उम्मीद वफा की,
लेकिन उनकी दुनिया के, दस्तूर अलग थे।

क्या बतलाएँ, मन मिलता तो क्या-क्या मिलता,
अलगोजे की तान अलग, संतूर अलग थे।

पुख्ता नफरत की यारा, दीवार खड़ी थी,
बेचारे बेनूर अलग, बानूर अलग थे।

गोल-गोल था दोनों का आकार एक सा,
था अंतर पर, बेर अलग, अंगूर अलग थे।

'सिद्ध' अगर समझाते तो, क्या-क्या और किसे,
नादान अलग, और यहाँ, मगरूर अलग थे।

ढूंढे कहां?

लीना शर्मा

नील गगन में उड़ते पंछी
नीचे देख यह सोच रहे
रोज हमें देते थे दाना
कहां जाने सब लोग गए?

फूलों पर मंडराती तितली
इधर-उधर यूं ताक रही
कहां गई मालिक उपवन से
बुनती थी नित माला नई?

उचक उचक नन्ही सी मछली
जल से यूं ही निहार रही
शाम को होती थी जो हलचल
पनघट पर वह कहां गई?

गली के नुक्कड़ का डॉगी
बछड़े संग गाय भी होती
कहां गई उनके हिस्से की
सुबह-सुबह मिलती थी जो रोटी?

पंछी, फूल, नभ के तारे
मन में इनके भी हलचल है
सोच सोच यह बात
इतने प्यारे लोग जहान के
छिपे क्यों?
और कहां है आज?

हां तेरी याद

हार्दिक महाजन

हां तेरी याद
आज भी आती हैं...
ना जाने क्यूँ
मुझें सताती हैं,
जब अकेला होता हूँ,
तेरी याद रुलाती हैं,
ना जाने क्यूँ तेरी,
बात मुझें तड़पाती हैं,
दो-पल की तेरी
मेरी दास्ताँ थी,
आज ख़्वाहिश
तेरे मेरी यही हैं,
शायद तू भी करती
तो होगी याद मुझें,
पर हां मुझें तो तेरी,
बात बहुत रुलाती हैं,
बैचेनियाँ लिए बेवक्त,
को सिले हुए रहता हूं,
यादों में भी तेरी हां,
कुछ पल अब भूलकर
भी तुझें नही कटता हैं
हां तेरी याद
आज भी आती हैं।

कैलाश सोनी सार्थक

गज़ल

नियम धरम को नहीं मानते, डूब मरो
अच्छी बातें न स्वीकारते, डूब मरो

हाल हो रहा सुनो आजकल, ऐसा भी
मृत्यु अपनी खुद पुकारते, डूब मरो

भली रीति भव पार करे है, नहीं पता
बुरी नीतियाँ रोज पालते, डूब मरो

मानवता पर वार कर रहे, हैं पापी
पावनता जो नहीं जानते, डूब मरो

अपनापन ये देश माँगता, आज वही
देश भक्ति जो नहीं धारते, डूब मरो

मन की गति ही जीवन रचती, बात सही
समय देख मन नहीं मारते, डूब मरो

सोनी घर बैठे कब जीती, जंग कभी
बिना लड़े जो लोग हारते डूब मरो

गंगा पी.डी.शर्मा

जब भी घर आती है बहिन

पहले
मेरा और मेरी बहिन का घर
एक ही था
एक ही थे माता-पिता
खेत-खलिहान और हरहा, गोरू
सबमें उसका बराबर का हिस्सा था
वह अधिकार जताती थी इन सब पर
कोई भाई हाथ नहीं रख सकता था
उसकी सगुनी पर
पूरी कामधेनु थी सगुनी
सुबह और शाम
पाँच- पाँच सेर देती थी दूध
मजाल था कि
बहिन की इच्छा के विरुद्ध
कोई दुहा ले
उसकी सगुनी
सगुनी भी जैसे रखती थी
उसके कांधे पर
अपना मुख
हम सब तरसते थे
उस सुख (वात्सल्य) के लिए
एक बार घर से क्या गई बहिन
छिन गए उसके सारे अधिकार
अब जब भी घर आती है
बहुत सकुचाती है
भांजे के लिए
दूध भी माँ से नहीं
भाभी से माँगती है
पता नहीं क्यों लगते हैं
सबके सब पराए उसे
दूर-दूर रहती है सबसे
यहाँ तक कि जानवरों से भी
उसे पक्का विश्वास है
वे सारे हरहा गोरू
जिन्हें छोड़ के गई थी
(अभी कल)
दुधारू नहीं मारू हो गए हैं
अब नहीं तब
उठा ही लेंगे उसे अपनी भाले-सी सींगों पर
यहाँ तक कि उसकी सगुनी भी
फुनक देती है बगल से गुजरने पर
आँगन और कोठरी के ताख तक
नहीं मानते उसका अधिकार
इसीलिए गिरा देते हैं
उसका बटुआ जब-तब
घर की दीवारों से भी
लोने के साथ झरा जा रहा है
उनका अपनापन
वह प्रायरू छुट्टियों में ही आती है
(गर्मी के किसी महीने या दिसम्बर में)
खुद ही बरामदे के तखत पर
सो जाती है
और जाड़ों में तो-
रिश्तों की गर्माहट ही खो जाती है
देर रात तक
पगलाई-सी फिरती रहती है
घर भर में
तलाशती रहती है
खोई हुई गर्माहट
माई और भाई-भौजाई की
रजाई में
छत और दीवारों को
टकटकी लगाकर
निहारती है टुकुर-टुकुर
मन ही मन बतियाती,बुदबुदाती है
कभी-कभी लगता है,जैसे-
दीवारों से गुहार लगाती है
जब कभी बहुत देर हो जाती है तो-
उन्हीं में से किसी की रजाई में
या दीवार से सटकर लगे
पुआल पर
गुड़ीमुड़ी होकर
अथवा किसी बच्चे को
अपने से सटाकर
यानी उसकी बगल में
जरा-सी जगह बनाकर
बाईं या दाईं
किसी करवट सो जाती है
और
आँख खुलने से पहले
भोर हो जाती है।

प्रदीप झा

वह शाम है अब तक याद मुझे

जब तुम मेरे पहलू में
चुप चुप आ करके बैठी थी
जब हल्की सी मुस्कान भरी
आंखो से तुमने देखा था
जब धीमें से बांह पकड़
के तुमने मुझको खींचा था

वह शाम है अब तक याद मुझे

जब अंधेरे के साये में
हम तुम साथ में बैठे थे
कुछ हल्की फुल्की बातें थी
कुछ हल्की सी खामोशी थी

वह शाम है अब तक याद मुझे

जब तुमने मेरे हाथो से
वह ठंडा पानी छीना था
और प्यास तुम्हारी बुझी थी
तब चौन मुझे भी आया था

वह शाम है अब तक याद मुझे

जब हम दोंनों साथ चले थे
राह का अंतिम छोड़ वही था
वहीं तुम्हारा घर था शायद
जहां तुम्हें मैं छोड़ गया था

वह शाम है अब तक याद मुझे

क्या फिर से मिल पायेंगे
हम तुम
जहां हमारी राह बंटी थी
फिर से वह मुस्कान खिलेगी
जो दोराहे छुट गयी थी

वह शाम है अब तक याद मुझे
हां, वह शाम है अब तक याद मुझे

राम प्रताप वर्मा
धर्म और विज्ञान

धर्म और विज्ञान!
विषय है बहस का कि कौन है श्रेष्ठ!
इंसान बंट चुका है वैचारिक रूप से,
दो भागों में!
एक धर्म को कहता है श्रेष्ठ!
तो दूसरा कहता है कि विज्ञान ही है,
हमारे जीवन का आधार !
धर्म है जो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
पारसी, बौद्ध और जैन!
सबके हैं अपने एक निश्चित ईश्वर!
उनका नाम लेकर मिलता है सबको चैन!
एक दूसरे से बड़े हैं, एक दूसरे के मालिक,
सब की पूजा पद्धति है नेक पर अनेक,
लेकिन सब लड़ते हैं परस्पर,
कि हम ही हैं सर्वश्रेष्ठ!

धर्म और विज्ञान!
विषय है बहस का कि कौन है श्रेष्ठ!
विज्ञान जो देता है हमें क्रमबद्ध ज्ञान,
परिकल्पना, अवलोकन, अध्ययन,
और प्रयोग से मिलता है,
कुछ धनात्मक परिणाम,
जो होता है मानवता के लिए वरदान,
सूई-दवाई, रेल, साईकिल, रोबोट,
पर जब हम करते हैं शोध का अंत,
और गिरते हैं औंधे मुँह,
नहीं मिलता है अपेक्षित परिणाम!
किसी प्रिय जन का होता है, दुःखद अंत!
नहीं बचा पाता आधुनिक विज्ञान उनका जीवन,
तब! कहते हैं सभी, ईश्वरेच्छा थी यही,
तब भरता है घाव, मिलता है सुकून!
उबर जाते हैं घनघोर निराशा और अवसाद से,
यह धर्म ही है जिसमें,
सन्निहित है सर्वोच्च सत्ता का भाव,
जो घनघोर निराशा और अवसाद में,
जगाता है एक सूक्ष्म आशा का भाव,
मानवता के लिए दोनों ही हैं श्रेष्ठ,
और हमें मानना चाहिए कि,
धर्म और विज्ञान दोनों ही हैं,
हमारे जीवन का आधार,
दोनों में बनाये रखना है संतुलन,
दोनों ही हैं श्रेष्ठ!
धर्म और विज्ञान!
हाँ सच मानें दोनों ही हैं श्रेष्ठ!

तुमेश पटले 'सारथी'

सेल्फी की रश्म

सहयोग मुट्ठी भर का, गाँव भर आवाज है,
सेल्फी की रश्मों पर, चल रहा समाज है!

भूख की है लाचारी जहाँ
चल रही है फनकारी वहाँ,
गरीबों से ठिठोली करने को,
चल रही है दावेदारी यहाँ!
अपने बड़बोलेपन पर, कर रहा नाज है!
सेल्फी की रश्मों पर, चल रहा समाज है!

सहयोग को उपकार बताता,
नेकी का एहसान जताता,
हारे हुए दिल की जमीं पर,
जीत की फहराता पताका!!
फोटो के लिए पुण्य का, चल रहा काज है!
सेल्फी की रश्मों पर, चल रहा समाज है!

करतब है शान की खातिर,
झूठे सब मान की खातिर,
दर्दों पर कोई आह नहीं थी,
दान है यशगान के खातिर!
बस परवाज ही दिखाता, उड़ रहा बाज है!
सेल्फी की रश्मों पर, चल रहा समाज है!

सहयोग मुट्ठी भर का, गाँव भर आवाज है,
सेल्फी की रश्मों पर, चल रहा समाज है!

अर्चना मिश्रा
मेरे दोस्त

हाँ, जब मैं अकेली होती
अकेली बिल्कुल भी नहीं होती
मेरे साथ होते हैं मेरे बहुत सारे मित्र
जो पल-पल मेरे जीवन में फैलाते इत्र
उम्मीदों का दामन थामे हुए
मेरी सबसे अच्छी दोस्त है
मेरी प्यारी कलम
हर वक्त राह दिखाने वाली
एक नया रास्ता सृजन करने वाली
मेरा और एक मित्र है
सूरज दादा
जो साथ ही चलता है सदा
जहाँ मैं जाऊं, संग चलता
जिंदगी में रोशनी भरता
एक और बेहद खास दोस्त है चाँद
जिससे मैं घँटों बाते करती हूँ
आसमान में चंद्रमा और धरती पर मैं
फिर भी चंद्रमा मेरी हर बात
बड़े ध्यान से सुनता है
गजल, गीत, कविता और ना जाने क्या-क्या
हर सुख और दुःख में शामिल है चाँद
बहुत अच्छा लगता है
चाँद आसमान से मुझे देखता
और जमीन पर बैठकर मैं
अपनी हाले दिल चाँद को सुनाती हूँ
वह बहुत ध्यान से सुनता है
मेरे सुख-दुःख का सहभागी बनता है
कहता है अर्चि
मैं तुम्हारा सबसे अच्छा मित्र हूँ
बिल्कुल चंदन जैसा शुद्ध, शीतल।

है अश्क भी, है रश्क भी, तूफान मन मे भरा,
अन्याय पर न्याय का ब्रम्हास्त्र प्रत्यंचा पर चढ़ा,
एक दुष्ट कलंकित देश ने, एक इंसानी वेश कपटी दैत्य ने, जहर जीवन मे भरा,
एक आसुरी अवतार ने, उसके माँस भक्षण संस्कार ने, मानव जाती में विध्वंस भरा,
भौतिकता की छुधा ने, मदमाती साकी की सुधा ने, होश छीन कर मदहोश करा,
कुंठित सोच की फितरत लिये, हमसाया का तमगा लिये,
कई निर्दोषों के प्राण उसने हर लिये,
रावण की परछाई लिये, उसने बहुत छल कर लिये,
मित्र-भाई बन कर खूब छुरे भोक लिये,
ड्रेगन ने खूब पाप कर लिये, कर्मो के महासागर भर लिये,
त्राहिमाम-त्राहिमाम सुन अब सिंहो ने अवतार लिये,
है अश्क भी, है रश्क भी, तुफान मन मे भरा,
अन्याय पर न्याय का ब्रम्हास्त्र प्रत्यंचा पर चढ़ा,

हिमांशु कलन्त्री

भारत कोरणा

बेरोजगारी

चाय की थड़ी पर
बउ चउ की योजनाओं का
अंवेक्षण करता
बैठा है बेरोजगारों का झुंड,
आहार थोड़ा
केवल चाय से
मिटा रहे है भुख,
बस, भर्ती की भूख है इनको,
काश, पा ले पद,
ताकी बढ़ जाये ओहदा
उन बूढ़ी आंखों का,
जो अरसे से आस लगाकर
देख रहे
झुर्रियों की लकीरों से।
लटक कर
लटका कर बस्ता,
पहुंच रहे शाला,
ताकि मिट जाये
पुरानी भर्ती का जख्म,
मिल जाये नई तालीम,
खत्म हो जाये आस सबकी,
बढ़ जाये नूर,
फैल जाए आभा
थरथराते बूढ़े हाथों की।
मिट जाए बोझ
छोटी की शादी का,
पूरा हो जाये सूद,
बिरम बनिये का,
जो पिछली भर्ती को लिया था,
खत्म हो जाये ताने,
गांव के उन मुछदंडो का,
जो अक्सर दिया करते है बापू को,
पूरी हो जाये माँ की मन्दिर की मन्नत,
आ सके घर में गौरी के बिछियो की खनक,
सीख मिल जाये गांव के साथियों को,
जो खफ रहे है,
लड़ रहे है, झुंझ रहे है इस
रोजगारी
बेरोजगारी
विभीषिका त्रासदी के साथ।

व्ही. व्ही. रमणकिरण

आईना

आईना साथ लेके चला मैं
मेरे गिरते ही आईना!
आईनों मे बट जायेगा।
आईना तो आईना होता है टूटकर भी।
तुमने कभी देखा है,
आईना टूटकर भी
चार मंजिला इमारत के
पहरे से बचकर हर रोज
इक धूप का टुकड़ा
मेरे आईने के करीब से गुजरता है
और तड़क जाता है आईना।
कांच की हैं चुड़ियां टूटेगीं ही
रोक नहीं सकते टूट जाने दो।
खेल भी फिर से शुरू हो जायेगा
हाथ थामने का।
टूट गया, पता नहीं चला टूटा है।
देखो सावधान रहों
किसी के भी पैरों में
चुभ सकता है टूटा हुआ टुकड़ा।
'जहाँ भी टुकड़े हो वहाँ सावधान रहो'
अच्छे लगते हैं नारे जैसे वाक्यांश
सुनने सुनाने में।
कुछ लोग ऐसे भी हैं
नारे जैसे वाक्यांश को
रटते-रटते, दोहराते-दोहराते
बन गये सूत्रधार!
अध्यापक! नेता! क्रांतिकारी!
पर जब ये लोग नारेनुमा वक्य को
ढोकर चलते चलते थक जायेंगे
'जहां भी टुकड़े हो, वहाँ सावधान रहो'
कहतें कहतें रुक जायेंगे
तब यह दुनिया उनकी प्रतिमाएं बनाकर
वेश्यागृह के सबसे सुन्दर वेश्या की तरह
किसी चौराहे पर खड़ा कर देती है
और एक विशेष दिन उन प्रतिमाओं को
सुहाग की सेज की तरहसजाकर
ढक देती है मालाओं से प्रतिमा के चेहरे को।
स्खलित होने के कगार तक।
प्रतिमा के नीचें अंकित वाक्य
'जहाँ भी टुकड़े हो, वहाँ सावधान रहों'
श्रध्दा पूर्वक दोहराये जायेंगे
रटे जायेंगे, पढ़ें जायेंगे,
आईना साथ लेके चला मैं
मेरे गिरते ही आईना
आईनों में बट जायेगा।

अंबि सिंह

धरती की पीर पढ़ता हूँ

जगह वहीं लेता हूँ,
जगह जहां देता हूँ।

सपनों की राजकुमारी बनाता नहीं,
राजकुँवर नहीं मैं,
ख्वाबों के राजभवन में रह पाता नहीं।

नभ के तारे
आकर्षित करते नहीं मुझको...
बसंती हवाओं के झोखें
पुलकित करते नहीं मुझको...
ये रंगीन बहारे, ये सुंदर नजारे
हर्षित करते नहीं मुझको.....

मैं धरती की पीर पढ़ता हूँ,
नम आंखों में उभरती
दर्द की लकीर पढ़ता हूँ...

जाता नहीं पाठशाला कभी,
विवशता के धागे में उलझी
वेदनाओं की तस्वीर पढ़ता हूँ।

जगह वहीं लेता हूँ,
जगह जहां देता हूँ।

मर्मज्ञ व विदूषियों से
सजे दरबारों में जाता नहीं।
जीर्ण शीर्ण हैं दीवारें,
धरती पर अपना बिछौना...
तन्हाई के सिवा किसी को बुलाता नहीं।
हृदय से जो निकल जाए, लिख देता हूँ...
जाल शब्दों का कभी बिछाता नहीं।

किसकी सत्ता किसकी सरकार,
किसकी तूती किसकी जयजयकार...

कलम मेरी आराध्या,
मैं इसका आराधक...
सच लिखने के सिवा,
और कुछ लिख पाता नहीं।

जगह वहीं लेता हूँ,
जगह जहां देता हूँ।

डॉ०प्रज्ञा पाण्डेय

भगवान् शिव के श्रीचरणों में कोरोना से मुक्ति हेतु याचना

काल की ज्वाल थामो अब त्रिपुरारी
कालरात्रि घिरी, भूमण्डल सम्पूर्ण है आकुल
अदृश्य विष-व्याप्त सर्वत्र, विश्व व्याकुल।

काँप रहे जड़-चेतन सर्वत्र सभी संकट में
महाशक्तियाँ अचंभित, हृदयविदारक ज्वर,

रोके कैसे? शत्रु का इतना निर्मम व्यवहार
खोल नयन तीसरा करो हे प्रलयंकर! संहार।

सदियों सह यातना प्रकृति ने तोडा अब मौन
पशुपतिनाथ के पाश से बचेगा कब तक कौन?

रचे न पुनः लीला नीलकण्ठ, न कुठाराघात करे
संसाधन न हो बर्बाद, न पर्यावरण आघात सहे।

पत्थर बरसे न फिर,न समस्या हो ऐसी विकराल
कर्मयोद्धाओं के हित त्रिशूल सम्हालो महाकाल...

कर्तव्यों की बलिवेदी पर तज निजता हुँकार भरे
दिनमान सदृश निर्भीक निराडम्बर पुरुषार्थ डटे।

क्षुधा-तृषा सहते धीरों का भी हो वीरोचित सत्कार
असंख्य चुनौतियों से भयभीत न हम हो, हे निरंकार!

सप्तपदी जैसे मंत्र पावन लॉकडाउन के ध्यान धरे
निसर्ग में उमड़ा अनुपम सौंदर्य-बोध,निहारे,निखारे।

हारे कोरोना रण में दो आशीष प्रभु तुम अखण्ड!
शमन हो विध्वंस की विभीषिका भवनाथ प्रचंड।

दूरियाँ दिग्भ्रान्त हो, शीघ्र सुखद हो परिवेश हे जटाधारी!
मौन स्वयं व्यक्त हो, काल की ज्वाल थामो अब त्रिपुरारी।

क्यूँ, कागजों पे घिस रहा

कुँवर उदय

हाथ में पकड़े कलम,
क्यूँ कागजों पे घिस रहा,
ऐ 'उदय', कब जानता तू?
जो यहाँ सच लिख रहा।

तू वहम में है, गुमां तुझको हुआ,
सच जानने का,
आदमी, वैसे का वैसा ही रहा,
जो दिख रहा।

हाथ में पकड़े कलम,
क्यूँ कागजों पे घिस रहा।

सामने जो है, हकीकत है,
मुझे तो यह लगा था ।
ख्वाब का सच जी रहा है,
यह मुझे भी कब? पता था।

जागता सा आदमी भी,
सो रहा है ख्वाब में,
आदमी शायद इसीसे,
जाहिलों सा दिख रहा।

हाथ में पकड़े कलम,
क्यूँ, कागजों पे घिस रहा।

दे रहा आवाज उसको,
जो यहां पे सो रहा है।
ऐ 'उदय', सच मान के वो,
ख्वाब में ही खो रहा है।
ख्वाब में है, आदमी की,
कुछ खबर, उसको नहीं है।
इसलिये, ईमान उसका,
कौड़ीयों में बिक रहा।

हाथ में पकड़े कलम,
क्यूँ, कागजों पे घिस रहा।

वेद-पुराण, उपनिषद सारे,
गीता, बाईबिल और कुरान।
धरे रह गये, पूजाघर में,
अपनी-अपनी खुली दुकान।

तुझसे बेहतर भी लिखा था
वो भी ना जाना गया तो,
ऐ 'उदय' किस आस में तू,
क्या पता?, क्या लिख रहा।

हाथ में पकड़े कलम,
क्यूँ, कागजों पे घीस रहा।।

डा. अनिल भतपहरी

।।मानो या न मानों।।

सुविधाएँ भी
उत्पन्न कराती हैं संकट
इसके पहले तो
थे नही कुछ झंझट
हो गिरफ्त आदमी
पराधीन हो गये
सामर्थ्य होते भी
बलहीन हो गये
आत्मविश्वास भी
छीना गया
ये कैसा डर कर
जीना हुआ
एक पेट दो हाथ
फिर काहे उदास
अभावग्रस्त पुरखे
सौ साल जीते थे

कितने खुशहाल
कष्टों को पीते थे
उनके गीत संगीत
उनकी कथा कहानी
उनके शौर्य पराक्रम
उनकी अमृत वाणी
सोचों क्या जरा सा
हमने ऐसा पाया
संकट में धैर्य खोकर
जार-जार आँसू बहाया
उठो आगे बढ़ो
करो प्रयाण हिम्मत से
नायाब नया गढ़ो किस्मत से
दास न बनो सुविधा के
बल्कि दास रखों सुविधाओं को
मनोरंजन समझना मत प्यारे
मेरी इन कविताओं को...

मोहन श्रीवास्तव

जागो सनातनी तुम आज

भारत मां की रखने लाज।
जागो सनातनी तुम आज।।
बात जचे तो करना गौर।
और कहीं ना जाने ठौर।। जय गंगा...

मुश्किल में है हिंदुस्तान।
खतरे में अपनी पहचान।।
जाये सनातनी गर हार।
तो उसका जीना धिक्कार।। जय गंगा...

मिट जायेगा नाम निशान।
आयेगा ऐसा तूफान।।
वेद शास्त्र को पीछे छोड़।
आकर खड़े हुए किस मोड़।। जय गंगा...

द्रविड़ आर्य कह कह कर काट।
जाति पाति में हमको बाट।।
षड्यंत्रों वाला इतिहास।
पढ़ बन बैठे जिन्दा लाश।। जय गंगा...

था अखंड यह आर्यावर्त।
मुगल किये थे बेड़ा गर्त।।
बाकी बचा खुचा जो काम।
अंग्रेजों ने किया तमाम।। जय गंगा...

जाते-जाते किये विशेष।
बाटे हिंदू मुस्लिम देश।।
अब तो आँखे खोलो यार।
अगर देश से तुमको प्यार।। जय गंगा...

दुष्टों का तुम कर दो त्याग।
अब तो हिंद निवासी जाग।।
देशी सदा खरीदो माल।
अर्थव्यवस्था करो निहाल।। जय गंगा...

मीठी मीठी करते बात।
दुश्मन छलिया करने घात।।
सबक सिखाओ उनको आज।
कर बुलंद अपनी आवाज।। जय गंगा...

मोहन की विनती हर बार।
ऐसों का करना प्रतिकार।।
और बचा लो हिंदुस्तान।।
बाजी आज लगा के प्रान।। जय गंगा...

रुचिका

नारी की व्यथा

कब तक सोचूंगी पर मैं न बोलूंगी
बचपन से जवानी तक चुप हो कर सह लूँगी
पर मैं न बोलूंगी
जिन्दगी के तूफान को हर हाल में झेलूँगी
पर मैं न बोलूंगी आखिर कब तक न बोलूंगी,
बहन बनकर मायके में रहना है
फिर पत्नी, माँ बनकर साथ चलना है
हर रिश्ते को निभाना है
चुप-चाप सब कुछ सहते जाना है
चुप हो कर तूफान से लड़ते जाना है
हिन्दू धर्म को भी चलाना है
शादी के वचन को भी निभाना है
दर्द के मंजर को छिपाना है
इसलिए चुप होकर लूँगी पर मैं न बोलूंगी
जिंदगी के तूफान को हर हाल में झेलूंगी
पर मैं न बोलूंगी
क्या ज्ञानी के पास ही ज्ञान है
जिन्हें अपनी शक्ति पर मान है
अपने अनुभवों से मुझे भी तो ज्ञान है
फिर क्यों न सुनता जमीन आसमान है
कैसे कहूँ अपनी व्यथा
बोलूंगी तो हर रिश्ता खो दूंगी
यह सोचकर खुद ही चुप होकर सह लूँगी
पर मैं न बोलूंगी
जिंदगी के तूफान को हर हाल में झेलूंगी
पर मैं न बोलूंगी
आखिर कब तक न बोलूंगी

श्रीमती प्रेमलता पंथी

वृक्ष बड़े उपकारी

आओ हम सब वृक्ष लगायें
धरती का श्रृंगार करायें।
वृक्ष सदा होते उपकारी,
इनसे ही सांसें हम पायें।।

देखो पीपल के पत्तों को,
मधुर ध्वनि ये करते हैं।
आम और जामुन के पत्तों,
से बन्दनबारे बनते हैं।।

नीम सदा होता सुखदाई,
इससे बनतीं कई दवाई।
बाबा जी सी बड़ी जटाएँ,
यही वृक्ष बरगद कहलायें।।

वृक्ष कदम का कृष्ण को प्यारा
कितना सुंदर कितना न्यारा।
इनसे ही सुंदर है,ये जग सारा,
इनने हम पर सब कुछ बारा।।

सुनलो तुम सब लगा के कान,
वृक्षों में भी होती है जान।
वृक्ष कभी न काटें हम,
इनके दुःख को बाँटें हम।।

अशोक शर्मा वशिष्ठ

गीत

यह है मेरा हिंदोस्तान
मेरा प्यारा हिंदोस्तान
सब को प्यार है इस से
सब को प्यार है इस से

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
सब इसकी संतान
ऊंच नीच से सब ऊपर हैं
सब हैं एक समान

ताज अजंता और एलौरा भारत की पहचान
एकता की प्रतीक प्रतिमा बढाए देश.की शान
शान से लहराए तिरंगा बढाए देश का मान
हम सब मिलजुल कर करते हर संकट का समाधान
मेरा देश मेरा भारत मुझे को इस पर गुमान

विश्वगुरु कहलाता है
जग को राह दिखाता है
नैतिकता का पाठ पढाता है
सबको यह अपनाता है
सबको गले लगाता है

प्रेम का है दिया जलाता
मानवता की राह दिखाता
कठिनाइयों से नहीं घबराता
बढता ही बस बढता जाता
अपने देश को कोटि कोटि प्रणाम

सुरेश नायक 'ॐ'

मन से मन तक

मन से मन तक राह मिले।
प्रीत को नव प्रवाह मिले।
भावों में यदि समता आये,
प्रियतम तेरी मेरी चाह मिले। मन से...
पहले निज मन को बांधो।
शब्द अनुसंधान को साधो।
कटुता का पट जो जाए हट।
मन हो फिर कबीर सा साधो।
जीवन को नव उत्साह मिले।। मन से...
मन विचार हों कोमल, शुद्ध।
प्रेम रूपांतरित हो बने बुद्ध।
कैसे नवल सृजन हो पाएगा,
जब कार्य,विचार हों विरुद्ध।
खोकर पाने में ही, वाह मिले।। मन से...
पर पीड़ा जब तुम समझोगे।
पर दुख में जब तुम पिघलोगे।
फिर नदी वेग से बह निकलेगी।
जो गर्व से तुम बाहर निकलोगे।
सहृदय बनकर, नव राह मिले। मन से...

लीना सुराना

मुझे खुशी होती है,
जब लोग मेरी पीठ पीछे
बात करते हैं,
वह अपनी कायरता और मेरे शौर्य को दर्शाते हैं।

अच्छा लगता है,
जब कोई मुझे नीचा दिखाने की कोशिश करता है,
वह अपनी तुच्छता और मेरी महानता
स्वयं ही दर्शा देता है।

गर्व होता है स्व पर, जब कोई धोखा देता है,
वह अपनी ही मूर्खता से मुझे खो देता है।

चित्त प्रसन्न हो जाता है, जब कोई अपनी ऊर्जा
मुझे मुश्किलो में उलझाने में लगा देता है,
जबकि हर प्रतिकूलता मेरे लिए
अनुकूल अवसर बन जाती है।

बुरा लगता है उनके लिए
जो लोग मुझ पर भार डालना चाहते हैं,
पर अप्रत्यक्ष रुप से मेरे कर्मों को
हल्का करते चले जाते हैं।

रामप्रसाद मीना 'लिल्हारे'

गीत

शब्द सीधा मगर,
अर्थ तो वाम अब।
प्यार कहने महज, लक्ष्य तो काम अब।।

प्यार में अब सभी, देखतें हैसियत।
लाभ होने तलक, पूछतें कैफियत।।
प्यार की बात कर, रूह को फाँसते।
प्यार दिल में जगा, लक्ष्य को साधते।।

जिस्म है खास बस, भावना आम अब।
प्यार कहने महज, लक्ष्य तो काम अब।।

है दिखावा बहुत, अब यहाँ प्यार में।
झूठ ही झूठ है, इश्क इजहार में।।
बात कर लालची, मोह लेते हृदय।
एक ही यह नहीं, यह करे हैं उभय।।

रूप है श्वेत पर, है हृदय श्याम अब।
प्यार कहने महज, लक्ष्य तो काम अब।।

चाँद तारे नहीं, सूर्य की चाह है।
लाख राही मगर, एक ही राह है।।
सिर्फ मन में रखे, लाभ की कामना।
है तनिक भी नहीं, त्याग की भावना।।

सिर्फ पाना हुआ, प्यार का नाम अब।
प्यार कहने महज, लक्ष्य तो काम अब।।

मुकेश सिंह परिहार 'अन्जान'

आज का हासिल

उठा नजरे आसमाँ से कभी भली नाजनीं हमसे न खार कर,
हूं दिवाना तेरा सनम के जुल्म सहे जमाने के जार कर,

जो शफक कही दिखे जिन्दगी बने शगुफ्ता मेरी इल्तिजा,
हो हसीन मेरी भी दुनिया गुल से भरी वहाँ मुझे सँवार कर,

है मलाल हमको फकत खिजा ही नसीब लिखी जो मुराद की,
खुदा इंतिहा हुई दरगुजर की नदामतो की तलाश में यहाँ हार कर,

जो है दूरियां बनी दरमियाँ सदा इश्क में फना आशिकी रिजा हिज्र है,
हो करम रुहानी हयात मेरी हो मिल्कियत वो करार कर,

मैं फिराक में तेरी तड़पता ये गवारा कब रहा फलसफा,
जो हिदायते मिली आसना से वो बेवफाई शुमार कर,

खुदा मुख्तसर सी थी हसरतें जो दिवाने की इसी इश्क में,
वफा प्यार में मिले गुफ्तगु हो जो चाँदनी सी शुमार हो,

बने प्यार जिसका रुहानी रंज न आदमी वही कलन्दर,,
रहे 'अन्जा' गम से दुआएं दिल कहे चोला रंग उतार कर,

खुद को खाली कर के आना..

शेखर अस्तित्व

अहंकार के उच्च शिखर से,
नीचे स्वयं उतर के आना ।
मुझ से मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना ।

अभी तुम्हारे मन के भीतर,
भाव सिंधु में ज्वार उठा है ।
अभी तृप्ति है सिर्फ दिखावा,
तृष्णा का अंबार उठा है ।

सुनो ! जल्दबाजी मत करना,
थोड़ा और ठहर के आना ।
मुझसे मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना ।

मैं जब से जन्मा तब से ही,
ढाई आखर बांच रहा हूं ।
किसी आदिवासी बच्चे सा,
धूल उड़ाते, नाच रहा हूं ।

तुम अपने सब ग्रंथ, पोथियां,
वहीं, ताक पर धर के आना ।
मुझ से मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना ।

डी कुमार.. अजस्र (दुर्गेश मेघवाल)

सब सतर्क रहो ना

डरने-डराने की अब बात करो ना।
भय-आतंक को मन में भरो ना।
वायरस 'कोरोना' नहीं अमर विषाणु,
बरत के एहतियात, सब सतर्क रहो ना।

कोई अफवाहों को अब हवा न देना,
जानबूझ कर न जीवन संकट लेना।
बात बतंगड़ बन भी जाए तो,
अक्ल अपनी इस्तेमाल करो ना।डरने-डराने...

मुँह पर मास्क, हो हाथ सेनेटाइज,
अनजान से भी हो यह समझाइश।
हाथ जोड़कर सब करें अभिवादन।
सामाजिक दूरी में अब स्वयं रहो ना। डरने-डराने...

खाँसते-छींकते इतनी-सी सावधानी बरतें।
बांह मोड़कर, ढाँके मुँह रुमाल की परतें।
भीड़ में भी जब कोई ऐसा करे तो,
दो मीटर फिर उससे दूर रहो ना। डरने-डराने...

मौत और बीमारी से थोड़ी दूरी अच्छी।
साफ-सफाई से रहें ,करें सेनेटाइज बस्ती।
सात्विक भोजन को सब ही अपनाकर,
आमिष से भविष्य में परहेज करो ना। डरने-डराने...

तिमारी में चिकित्साकर्मी दिन-रात लगे हैं।
शासन-प्रशासन एकजुट प्रयत्न करे है।
सुरक्षा-सैनिक सड़कों पर मुस्तैद डटे हैं,
इन सबके लिए तुम 'घर में रहो ना'। डरने-डराने...

आज मन्दिरों की सब घण्टियाँ चुप सी।
अजान-गुरुबानी में बनी है खामोशी।
सब दीन-गरीब का करके सहयोग तुम,
ईश्वर को मन-ही-मन बस याद करो ना। डरने-डराने..

लॉकडाउन में, सारी दुनियां बंद पड़ी है।
सड़कें सुनी, घरों के बाहर कुंडी अड़ी है।
'अजस्र' करे हाथ जोड़ तुमसे बिनती,
खुद बच, भारत को सुरक्षित करो ना। डरने-डराने...

ऋतु कोचर

पीहर बहुत याद आता है

परीक्षाओं के बाद पीहर जाने की आस जगने लगती है,कब कब छुट्टियाँ हो और मायके की तैयारी करें, बच्चे भी नाना नानी के घर जाने को उत्सुक, सुहाने सपने, मम्मी, पापा, भाई, भाभी भतीजे के साथ १५-२० दिन बिताने की खुशी सब बहुत याद आता है।

मन मुताबिक रहने का अरमान, देर तक सोने और बिना जिम्मेदारी बैठे रहने का स्वर्णिम अवसर,बहनो से मिलने का मौका जिसका रास्ता कब से देखा जाता है उनके साथ नई नई चीजों की खरीददारी और घर आकर उन चीजों को देखकर खुश होना सब बहुत याद आता है।

मम्मी का रोज पूछना क्या खाओगे, सबका प्यार दुलार, रोज का नया कार्यक्रम कहा जाना है,आज क्या करना है पतिदेव का फोन पर पूछना कब आओगी, उनके तड़पने के क्या कहने।

फिर आखिरकार बिना मन वापसी की तैयारी, सच पीहर बहुत याद आता है,अब तो बस फोन पर ही बात हो पाती है, इस बार पता नहीं वहाँ जाने का ये शुभ अवसर प्राप्त भी होगा या नहीं, क्युंकि आज कोरोना रूपी महाकाल घर से बाहर निकलने मे बाधक बना हुआ है, पर कोई बात नही सब कुछ जल्दी ठीक हो जायेगा, पीहर तो बाद मे भी जाया जा सकता है। सब पता है मुझे...

पर पीहर तो पीहर है याद बहुत आता है।

रमा-प्रेम-शांति

अनुभव

नीलू एक सामाजिक कार्यक्रम में जाने की तैयारी में वही पश्चिमी ड्रेस पहनने की सोच रही थी, कि उसके पति महेंद्र ने उसे समझाया कि उससे ज्यादा सामाजिक वेशभूषा का प्रभाव पड़ेगा लेकिन आधुनिक युग की महिला होने के नाते उसने कुछ अनसुना कर दिया और अपने पक्ष के लिए बड़ी दीदी रमा से सलाह लेनी चाही ,क्योंकि उसे लगा दीदी उसके पक्ष में बोल देगी तो वो अपने पसंद का ड्रेस पहन लेगी, लेकिन बात जमी नहीं। दीदी ने वही राय दी जो उसके पति महेंद्र ने दी थी।

नीलू अपने पति को भी रूष्ट नहीं करना चाहती थी और दीदी जिसका आदर भी वो दिल से करती उन्हें भी मना नहीं कर सकती थी, तो उसे अपनी जिद्द छोड़नी पड़ी और वही सोचा जो उसके पति महेंद्र और दीदी रमा की राय, इच्छा थी।

कार्यक्रम का दिन आया, वो तैयार होने दीदी के घर आई, जहाँ उसने दीदी और अपनी सहेलियों के साथ तो सामाजिक ड्रेस पहना और जब आभूषण की बात आई तो ड्रेस के अनुसार पहनने के लिए वो आधुनिक गहने निकाली, लेकिन वो उतने जम नहीं रहे थे तभी दीदी ने ड्रेस के अनुसार आभूषण पहन कर बाहर निकली की नीलू और उसकी सहेलियों भी देखते रह गई, तभी नीलू बोली हाँ यही बहुत सुंदर लग रहे है, मेरे पास शादी के ऐसे गहने रखे है, तभी उसने पति को फोन किया, और पति भी बिना देर किए गहने लेकर पहुंच गए और खुद पहनाने भी लगे, आखिर पत्नी की सुंदरता को प्यार से ही संवारना जो था और सात वचनों को भी निभाना।

कार्यक्रम स्थल पर पहुँची जब नीलू अपनी सुंदरता से ही नहीं बल्कि अपने सामाजिक वस्त्र, आभूषण (वेशभूषा) धारण कर बेहद खूबसूरत लग रही थी, कि सबकी केन्द्र बिन्दु भी वो बनी हुई थी, जो भी उसके पास से गुजरता उसे देखे बिना नहीं रहता, और तो और जाने अनजाने सगा भी उसकी तारीफ किए बिना नहीं रह रहे थे, उसके साथ उसकी सहेली तुलसी, प्रिंसी, रानी और खासतौर पर बड़ी दीदी रमा ने भी जब कहा तो वो बेहद खुश हुई, उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

अंत में नीलू मन ही मन अपने पति और पिता जी को बारम्बार धन्यवाद, दिल से आभार व्यक्त कर रही थी कि पिताजी और पति के 'अनुभव' का मोल मैं आधुनिक शिक्षा कितनी भी ग्रहण कर लूँ लेकिन चुका नहीं पाऊंगी, आज वो अपने माता-पिता के दिए संस्कार और पति के निर्णय को सलाम करती है।

डॉ. अनीश गर्ग

सुनो राधे!

क्या मिलना चाहोगी
मेरे भीतर के कृष्ण से
सुनो!
शर्त बस इतनी सी है
तुम राधा बनकर आना.....
और हां ध्यान से!
बहुत फिसलन है
जिस्म की सीढ़ियों पर
तुम आत्मद्वार से
सीधे रूह में उतर जाना.....
तोड़ दूं अगर
तेरी अहंकार की मटकी
तो राधे!
तुम बुरा मत मनाना.....
हां भ्रमित तो करते होंगे
तुम्हें!
तुम्हारा रूप ये सौंदर्य
सुनो!
इस बार आती दफा
किसी
वृद्धा से मिलती आना.....
कितना क्षणिक है
ये नजारा
राधे!
उस अम्मा की
झुर्रियों से समझ जाना.....
फिर कृष्ण!
हो जाएगा सिर्फ तुम्हारा
हां सिर्फ तुम्हारा
हो बंधनों से मुक्त
बांध लोगी
पग में घुंघरू जब
तब और तब!
राधे की ठोकर पे
सारा जमाना.....
तब मैं हो जाऊं राधा
और तुम !
कृष्ण हो जाना.....

अपेक्षा पवन व्यास

गज़ल

खूब प्यार कीजिए,
बेशुमार कीजिए।

खुशनुमा हुआ समा,
बस विहार कीजिए।।

सुरमयी है शाम तो,
इश्क यार कीजिए।

हर घड़ी तलब जगी,
इख्तियार कीजिए।।

हैं नशा सनम चढ़ा,
बस शुमार कीजिए।।

चाँद रात हो गई,
हुस्न वार कीजिए।।

केसुओं की शोखियाँ,
शानदार.... कीजिए।।

और अब नहीं हमें ,
बेकरार..... कीजिए।।

जिंदगी हैं कब तलक,
नाम ....यार कीजिए।।

हम तड़प रहें सनम,
ना यूँ तकरार कीजिए।।

रुत मिलन कि हो रही,
अब करार कीजिए।।

प्राणनाथ तुम जरा,
ऐतबार... कीजिए।।

डॉ अनिता जैन 'विपुला'

बादल बन जा...

खारेपन को भी
लगा लेती
इन सूखे
पपड़ी खाये
होठों से और
पिपासा अपनी
बुझा लेती पर
इतनी भी
बेकरार नहीं
सुन रे जिया...
बस इसलिए
तू समंदर न बन
तेरी आस न रहेगी
तू बादल बन जा
कभी रिमझिम तो
कभी मूसलाधर
बरस जा
मधुर मधुर बरसकर
प्यासे अधरों को
सरस कर
मेरा करार
मेरी प्यास
सब ले जा...

सुखविंद्र सिंह मनसीरत

याद मेरी उसको आती तो होगी

याद मेरी उसको आती तो होगी
रात में उठाकर जगाती तो होगी

यादों का झौंका नोचता तो होगा
रगों में खून उसके खोलता होगा
बाहों में तकिया वो बोचती होगी। याद मेरी....

प्रेम-सौगातें, प्यारी-प्यारी बातें
दिन और रातें वो हसीन मुलाकातें
बाहों में मुझे पलोसती तो होगी। याद मेरी...

आँखें बन्द कर मुझे सोचती होगी
ख्वाब में मुझे वो ढूँढती तो होगी
मेरे माथे को चूमती तो होगी। याद मेरी...

संग संग बीताए वो हसीन नजारे
चोरी चोरी चुपके किए वो इशारें
शीत सी हवाएँ चीरती तो होगी। याद मेरी...

रूठना मनाना और गले से लगाना
हाथों में ले हाथ संग चलते जाना
राहों में पलकें बिछाती तो होगी। याद मेरी...

मंजीत जायसवाल

आवारा पन को थोड़ा कम कीजिये,
झूठा बहाना बना कर नियमों का उलंघन न कीजिये!
देश ओर देशवासियों से प्यार कीजिये,
घर में रहकर कोरोना जाने तक इंतजार कीजिये!
झूठी बातें ओर झूठे अफवाहों पर न आइये,
कोरोना रूपी राक्षस से बचाव कीजिये!
देश हीत के लिए बस इतना कीजिये,
बेवजह के घर से बाहर न निकलिए!
चाइना इटली ब्रिटेन जैसी स्थिति न बनाइये,
सोशल डिस्टेंसिंग की ओर हाथ बढ़ाइए!
प्रशासन को लाचार न कीजिये,
सड़क पर निकल कर अत्याचार न कीजिये!
खांसते और छींकते समय मुँह पर मास्क या रुमाल लीजिये,
खुद जागरूक रहिये और दुसरो को भी जागरूक कीजिये!

विश्व पुस्तक दिवस की शुभकामनाएँ

दिलचस्प

ऐसी किताबें देखी हैं आपने?

किताबों की दुनिया बड़ी निराली है। आप लिखने-पढ़ने के शौकीन हैं तो आपने किताबें जरूर पढ़ी होंगी। चाहे वह मेडिकल, सेल्फ हेल्प, पाठ्यपुस्तक, खेलकूद, फिल्म, राजनीति, कहानी, कविता.. किसी भी विषय की रही हो। लेकिन हम यहां आपको कुछ ऐसी किताबों को बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपने शायद ही कभी देखा या पढ़ा होगा।

* जर्मनी की कंपनी कोरेफ एंड जर्स्तेंबर्ग पब्लिशिंग ने एक अनूठी कुक बुक बनायी है। इस किताब में रेसेपीज कागज के साधारण पन्नों की बजाय ताजा पाश्ता से बने पन्नों पर छापी गई है। इसका काम होने पर इन पन्नों को बेक करके खाया जा सकता है।
* बर्मा में एक ऐसी पुस्तक देखने को मिल सकती है, जिसे संगमरमर की प्लेटों से तैयार किया गया है। इस किताब का वजन ७२८ टन है। पाली भाषा मे लिखी गई यह पुस्तक १.६ मील लम्बी है। इस किताब को संत युनाखान्नी ने लिखा है।
* क्रोशिया के कलाकार-डिजाइनर ब्रुकेता जिनिक ने ऐसी किताब बनायी है जो रात को सितारों या जुगनुओं की तरह जगमग करती है।
* आपने ढाई सौ किलो की किताब देखी है? जी हां! हम दुनिया की सबसे भारी किताब 'सुपर बुक' का जिक्र कर रहे हैं। ३०० पेज की इस किताब का वजन २५२.६ किलोग्राम है।
* लगे हाथ दुनिया की सबसे हल्की पुस्तक की चर्चा भी हो जाए। इस किताब में १५० पेज हैं और वजन मात्र ०.३४ औंस है। इस किताब में उमर खैय्याम की अनूदित रूबाइयां छापी गई हैं।
* लॉस एंजेल्स की लेपिज प्रेस ने 'नाइल पेपर्स ऑफ रिवर मड्स' नामक किताब बनाई है। इस किताब के पन्नों को दुनिया की कई नदियों के तट की रेत से बने स्लिप्केस में रखा गया है।
* सन् १६३६ में अर्नेस्ट विंसेंट नामक लेखक ने गेड्स बाई नामक एक किताब लिखी। ५०,००० शब्दों वाली इस किताब की खासियत यह है कि इसमें अंग्रेजी का महत्वपूर्ण स्वर 'ई' ही गायब है।
* 'वी आर गेटिंग ऑन दी नॉवल' ईको फ्रेंडली किताब है। इसके पहले एडिशन का कवर बर्च सीड पेपर से बनाया गया था। इसे पढ़कर बीज की तरह रोप सकते हैं, जो वक्त आने पर पेड़ का रूप ले लेगा।
* एक सोवियत शिल्पकार ने यूक्रेनियन कवि नरारा शेवन चेको की कविताओं का संकलन किया है। इस पुस्तकाकार संकलन का आकार मात्र ०.६ वर्ग मिलीमीटर है। इस किताब में छपाई ०.५ मिलीमीटर में है। लेकिन जैसा कि आप समझ ही गए होंगे, इस किताब को माइक्रोस्कोपिक विधि से ही पढ़ना संभव है।
* ८०० पेज की एक किताब है, इस पूरी किताब में 'पाई' के दो मिलियन स्थान तक कैलकुलेशन ही लिखे हुए हैं। ज्ञात हो कि पाई की गणना अनंत है। भला ऐसी किताब कौन पढ़ेगा? शायद इसीलिए इसे दुनिया की सबसे नीरस किताब कहा गया है।
* अगर दुनिया की सबसे महंगी किताब की चर्चा हो, तो कुरान की एक हस्तलिखित प्रति का नाम सामने आता है। इसे अफगानिस्तान के एक अमीर ने पारस के बादशाह को उपहार स्वरूप दिया था। इस प्रति के सभी पन्ने ठोस सोने के थे, जिन पर ३६८ जवाहिरात, १६६ मोती, १३२ लाल और १०६ हीरे जड़े हुए थे। कहते हैं, इसका 'कवर' तैयार करने में ही ३०,००० पौंड का खर्च आ गया था।
* 'कॉफी स्टेंस' कॉफी के अवशिष्ट से बनाई गई किताब है। मरता हेडन द्वारा बनाई गई इस किताब के लिए नेपाल से खास तौर पर आर्काइवल लोकता कागज लाया गया। सिर्फ ११ पन्नों वाली इस किताब में कॉफी के फायदे बताये गए हैं। इसे पढ़ते हुए आपको कॉफी की खुशबू महसूस होगी।
* अमरीका के नेशनल प्रेस ने बाइबिल का प्रकाशन निकिल की शीट्स पर भी किया है। ये निकिल शीट्स कागज से भी पतली हैं।
* आपने ब्रिक-बुक्स के बारे में शायद ही सुना होगा। आस्ट्रेलिया में पुरातत्व विभाग को खुदाई के दौरान ऐसी ईंटे बड़ी संख्या में मिलीं, जिन पर अक्षरों को खोदकर उकेरा गया है। यही ब्रिक-बुक्स कहलाती हैं।
* स्पेन के संग्रहालय में १३वीं सदी की ऐसी पुस्तकें रखी हुई हैं, जिनमें इबारत शेर की खाल पर छपी हुई हैं।
* अब चर्चा कुछ अजीबोगरीब विषयों पर लिखी गई पुस्तकों की। पुस्तकों के शीर्षक से ही आपको इनके अनूठेपन का आयडिया लग जाएगा- हाऊ टू अबेंडन शिप (डूबते जहाज से कैसे उतरा जाए), यूरीन थैरेपी (मूत्र पीकर कैसे रोग मिटाए जाएं), मैनीफोल्ड डेस्टिनी (कार के इंजन पर कुकिंग के आयडिया), हाऊ टू शार्पेन पेंसिल्स (लेखकों, शिल्पकारों, चित्रकारों और सिविल सर्वेन्ट्स के लिए पेंसिल छीलने के तरीकों पर ज्ञान), नैचुरल बस्ट एनलार्जमेंन्ट विद टोटल माइंड पावर (हाउ टू यूज दी अदर ९० परसेंट ऑफ माइंड)। है ना हैरत की बात!

साभार शिखर चंद जैन जी की फेसबुक वॉल से।

विश्व पुस्तक दिवस

शिशुपाल यदुवंशी

विश्व पुस्तक दिवस की पुस्तक प्रेमियों को ढेरों शुभकामनाएं व बधाई सच कहूं तो बचपन से ही मेरी सच्ची मित्र रही है किताबें, बचपन से ही मेरा शौक रहा है कुछ ना कुछ लिखना घर में खुद की लाइब्रेरी बना रखा हूं किताबों का अंबार लगा हुआ है हालांकि में अब पुलिस के पेशे में आ गया हूँ , तो समय कम ही मिल पाता है लेकिन अभी भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मददगार किताबों के साथ साथ मुझे आज भी साहित्यिक किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

जब भी मुझे कोई प्रेरणादायक पुस्तक मिलती है तो मुझे ऐसा लगता है जैसे जेठ की तपती दुपहरी में सावन की जैसी फुहारे मिल गयीं है। वास्तव में किताबें हमारी सच्ची मित्र होती हैं यह हमारी संवेदनाओ को जगाकर अंतर्मन की पशुता का शमन कर हमें बेहतर इंसान बनने का अवसर प्रदान करती हैं।

ये जो किताबे होती है वो हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती हैं और उस समय तो इनका महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है, जब हम अकेले होते हैं... और फिलहाल कोरोना महामारी के चलते जो घरों में हैं उनसे यही आग्रह करता हूँ अपने अपने घरों में रहिये, लॉकडाउन का पालन करिए और अच्छी -अच्छी पुस्तकें पढ़िए आपका समय आसानी से व्यतीत हो जाएगा....

आपको पता ही है कि यह किताबें ही है जो जिंदगी के हर मोड़ पर साथ निभाती है।

सुख-दुख हर पल साथ रहती है। किताबें हमारे जीवन में हमारा मार्गदर्शन करती हैं। यह किताबें हीं होती है जो हमें जीना सिखाती हैं। अगर व्यक्ति के जीवन में किताबें ना हो तो व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास पूर्ण रुप से नहीं हो सकता..!

लेकिन आज इंटरनेट, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर के कारण हम किताबों से कटते जा रहें हैं। तुरंत सब मिल जाने की लालच में किताबों से मिलने वाले सुकून को ही भूलते जा रहे हैं। जिसके कारण किताबों को एक बार फिर से जीवित करने और उसकी महत्व के बताने के उद्देश्य से हर साल २३ अप्रैल को 'विश्व पुस्तक दिवस' का आयोजन किया जाता है। विश्व पुस्तक दिवस एक जरिया है लोगों के दिलों में किताबों के प्रति प्रेम जगाने का। विश्व पुस्तक दिवस के जरिए उन पर लेखकों, पाठकों, आलोचकों, प्रकाशकों और संपादकों का एक साथ सम्मान किया जाता है जो अपने ज्ञान, अपने अनुभवों को पुस्तकों के जरिए लोगों तक पहुंचाते हैं।

सच कहूँ तो किताबें अद्भुत हैं। मुझे लगता है कि कोई न कोई किताब पढ़ते रहना चाहिए हर किसी इन्सान को।

ऐसा करके भी हम महीने में हजार बारह सौ पेज की एक किताब तो पढ़ ही ले सकते हैं। मोटी हुई तो डेढ़ दो महीने या उससे कुछ अधिक समय फिलहाल पूरे भारत में लॉक डाउन है तो आप सभी के पास पर्याप्त समय है किताबों को देने के लिए....

वैसे जब हम अपनी सोच, संवेदना और व्यक्तित्वं के निर्माण की प्रक्रिया में किताबों को अहम बना लेते हैं, तो हमारे जीवन के निर्माण की प्रक्रिया में हमारा अपना नियंत्रण बहुत बेहतर हो जाता है। अन्यरथा, हमारी चेतना के ईंट-पत्थर बाहर वातावरण के प्रभावो, प्रतिक्रियाओं और जमे जमाये संस्कारों से ही बने रहते हैं।

हम जो भी किताब पढ़ते हैं उसमें हमें निष्ठा रखनी चाहिए, तो आलोचनात्मक विवेक भी। किताबों से हम सहमत होने के साथ-साथ असहमत होना भी सीखते हैं। किताबों के साथ स्वस्थ संबंध बनाएं तो यह दुनिया से काटती नहीं, दुनिया से जोड़ती और दुनिया में उतारती हैं।

दुनिया भर में वर्ल्ड बुक डे इसलिए मनाया जाता है ताकि किताबों की अहमियत को समझा जा सके। किताबें महज कागज का पुलिंदा नहीं बल्किज वे भूतकाल और भविष्य काल को जोड़ने की कड़ी का काम करती हैं। साथ ही संस्कृतियों और पीढ़ियों के बीच में एक सेतु की तरह हैं.....

सच कहूं तो किताबें हम सभी को मंजिल तक पहुंचाने में जरूर कारगर सिद्ध होंगी,हमें बस इनसे सच्ची मोहब्बत करते रहना चाहिए .....

एक बार पुनः आप सभी को विश्व पुस्तक दिवस की ढेरों शुभकामनाएं

मान बहादुर सिंह 'मान'

पुस्तक

पुस्तकों में समाया ब्रह्माण्ड,
पूर्वजों का सारा ज्ञान है!
समाया भारतीय संस्कृति दर्शन,
हमारा अतीत भविष्य वर्तमान है!

समायी जिसमें समूची सृष्टि, प्रकृति,
पुस्तकें हमारे पूर्वजों की वसीयत प्रान हैं!
करें संचित इन्हें हमारी धरोहर,प्रशस्ति,
पुस्तकें पुरखों की पूँजी कीर्तिमान हैं!

हमारे वेद पुराण गीता रामायण,
हमारा खजाना,हमारी पहचान हैं!
पुस्तकें हैं सूर्य का दिव्य अनंत प्रकाश,
चंद्रमा की शीतलता माँ आँचल समान हैं!

पुस्तकें करती हमारे दुःखों का अंत,
सदा होती हमारे संकटों का हल है!
जगत में सबसे बड़ी मित्र होती पुस्तकें,
हमें दिखातीं राह सदा पाक निर्मल है!

आओ हम करें पुस्तकों से सुखमय बातें,
इनके साथ बिताए दिन व रातें!
पहनाए इन्हें संचय का अमलीजामा,
पुस्तकें हमारी जीवन निधि राम व श्यामा!

मधु प्रधान

सुबह आज भी मधुर-मधुर है
मन भावन किरणें बिखरी हैं
मल गुलाल कलियों के मुख पर
ओस धुली पाती निखरी हैं।

क्यों इतना
अवसाद भरा है
उठो चलो
कुछ मन का करलो।

इनसे कुछ
सम्वाद करो फिर
मन की रीती
गागर भर लो।

आ जायेगी मृदुल दोपहरी
थोड़ा आलस भी आयेगा
आँगन की किलकारी सुनकर
कोना -कोना खिल जायेगा।

सरपट भाग रहे
लम्हों से
कहना अब तो
जरा ठहर लो।

धीरे-धीरे दिवस ढलेगा
पथिक लौट कर घर आयेंगे
दिन के अनुभव, थकन राह की
मिलजुल कर सब बतियायेंगे।

शायद पाहुन
भी आ जायें
थोड़ा सज लो
और सँवर लो।

फिर तारों की चुनरी ओढ़े
निशा परी नभ से उतरेगी
चुपके -चुपके सिरहाने पर
कुछ सुधियों के फूल धरेगी।

उन्मीलित
नयनों में बन्दी
कर लेना उस
स्वप्न भृमर को
मन में क्यों अवसाद भरा है।

अर्चना अनुप्रिया

खोज

स्वयं की खोज में
न जाने किस दिशा में
दौड़-भाग रहे थे हम
बनावटी दुनिया की
अस्थायी चकाचौंध में
प्राकृतिक सुखों को
मूर्खों सा त्याग रहे थे हम
तकनीकी आविष्कार के नशे में
छूट रहे थे सतत साथ चलते
झरनों के चिंतन, सदियों के संस्कार
प्रकृति का सौंदर्य, रिश्ते और परिवार
एक झटका सा दिया समय ने
झकझोर डाला हमारे अंतर्मन को
आईना देखकर चौंक पड़े हम
भूल समझ आई जन-जन को
थोड़ा सँभले, फिर बढ़ने लगे साथ
खोज ली हम सबने मिलकर
राहें,आत्मा तक पहुँचने की
सारे सुख अंदर ही पड़े मिले
जरूरत न पड़ी बाहर ढूंढने की
मुश्किलों से लड़ कर विजयी हुए
परम पिता का सपना साकार हुआ
दिशा मिल गई इन्सानों को जीने की
एक नए जीवन-युग का आविष्कार हुआ..

मीनाक्षी सुकुमारन

बढ़ते प्रदूषण की रोकथाम के लिये
न जाने कितने ही उपाय किये गए
फिर भी ये बढ़ता ही चला गया तेजी से
नदियों की साफ सफाई पर
कितनी कार्यशालाएं, कितने प्रयोजन
कितने लाखों रुपये खर्च किये गये
पर दिन ब दिन वह और मैली होती ही गयीं
क्या सड़कों का बेलगाम ट्रैफिक
क्या प्रदूषण, क्या नदियाँ
सब अचानक से खुद बखुद
नियंत्रित हो गया इस बंद में
पर दुनिया घर में सिमट गई तो सूनी हुईं सड़कें
यातायात हुए नियंत्रित, प्रदूषण भी हुआ गायब
और नदियाँ भी साफ, स्वच्छ, निर्मल हुईं
हवा भी साफ, शीतल हुई
भीड़ और शोर में दब जाती थी जो पंछियों की चहक
अब फिर वो देती है सुनाई
हो कोयल की कूक या
चिड़ियों का चहचहाना
साफ गूँजती है कानों में
सही कहते हैं जब कोई भी चीज हद से गुजर जाती है
तो वो अपना रस्ता खुद बखुद ही बना लेती है
शायद इसीलिए प्रकृति ने भी
अपनी रक्षा का रस्ता खुद ही खोज लिया
तभी तो जो कम बरसों में नहीं हो पाया
वो इन चंद दिनों में हो गया।।

दिनेश दीवाना

बस जरा सी लट हटा लो,
आँख का दिख जाये काजल।

चाँद भी शरमा रहा है,
रेशमी परछाईयों में।
गजब का वातावरण है,
महक है अमराईयों में।
स्वप्न का पर्दा हटा दो,
मत करो इतना अधिक छल।

बदलता रहता है मौसम,
भाव फिर आये न आये।
तस्वीर मन पर आंक दो,
रात यह आये न आये।

आँख की इस झील में,
मुझको बिठा लो।
वेदनाये एक छिन को
जाये टल।

नयन की शंका मिटा दो,
प्यार से सेजो सँवारो।
मिटादो सब पीर पीड़ा,
मलिन दृष्टि से ऊबारो।
सजा इतनी मत दिलाओ,
जिंदगी का कारवां ही जाये ढल।

बस जरा सी लट हटा दो,
आँख का दिख जाये काजल।

मनोज जैन मधुर

विडम्बना

क्या बोलूँ किससे कहूँ, सुनता है अब कौन।
वृद्ध पिता यह सोचकर, हर-पल रहते मौन।१।

बेटे ने की चीखकर, बंटवारे की बात।
आँखों-आंखों में कटी, माँ की पूरी रात।२।

मुआ समय देकर गया, पीड़ा के सौ घाव।
दीवारें घर में उठीं, बंटा प्रेम सद्भाव।३।

बेटा खा-पी,सो गया, भूखा सोया बाप।
पता नहीं किस जन्म का, भोग रहा अभिशाप।४।

'बोल' बहू के तीर से, रहे कलेजा चीर।
कैसी विपदा आ पड़ी, कौन बंधाये धीर।५।

शुष्क हुई संवेदना, करुणा जल से सींच।
पिता बचे दिन काटते, दोनों आँखें मीच।६।

जाने अनजाने हुई, हमसे कैसी भूल।
चाहत फूलों की रखी, मिले शूल ही शूल।७।

सन्नाटे का गूंजता, घर आँगन में राज।
कितना निष्ठुर हो चला, अपना यहाँ समाज।८।

बहुत सहा अब हैं नहीं, मुझे तनिक परवाह।
पुत्र पिता से बोल यह, करता है आगाह।९।

तिनका तिनका जोड़कर, घर को किया समृद्ध।
आज पराये हो रहे, अपने घर में वृद्ध।१०।

सुबह दुपहरी साँझ फिर, घिर आती है रात।
हफ्तों तक होती नही, पिता-पुत्र की बात।११।

निर्वासित तुलसी हुई, तोड़े गये उसूल।
तय हैं चुभना पाँव में, पथ पर बिखरे शूल।१२।

शुष्क हुई संवेदना, करुणा जल की बूँद।
पिता बचे दिन काटते, दोनों आँखें मूँद।१३।

मन तो अब मिलता नहीं, मिल जाते हैं नैन।
व्यथित पिता कुछ इस तरह, पा लेता है चैन।१४।

केटी दादलाणी

रात कटे ना दिन ढलते हैं
अरमां आंखों में जलते हैं
नींद नहीं आती नैनों में
बीज चुभन के ही फलते हैं

अब जीवन कैसे गुजरेगा
ख्वाबों में आकर खलते हैं
प्रतीक्षा में पागल है मन
सब्र सदा मन को छलते हैं

आस सताती ही रहती है
तेरे दर्स सदा टलते हैं
किस्मत ऐसी है बंदे की
खाली हाथ सदा मलते हैं

पंछी की परवाज कभी थी
शूलों पर ही अब चलते हैं
मालिक मेरे मन में रहना
तेरी रहमत पर पलते हैं

सुमित अग्रवाल

गज़ल

बिछड़ कर डाल से पत्ता महज ठोकर ही खाता है,
बता क्या सोच के सब छोड़ तू परदेश जाता है।

तेरे हाथों के छालों से हकीकत बह के आती है,
यहाँ पे क्या शहनशाही के तू किस्से सुनाता है।

जो रातें रो के', फुट पाथों पे तूने जाग काटी है,
हमारा चाँद तेरे दर्द का आलम बताता है।

फकत इक बूँद बादल को तेरी आँखे तरसती हैं,
यहाँ दिन रात आँखों से कोई सावन बहाता है।

वहाँ पर जिन्दगी के बोझ से दोहरा हुआ है तू,
यहाँ ढ़लती उमर काँधे पे इक बूढ़ा उठाता है।

यहाँ पर खेल गुड्डों के तू' जिसके साथ खेला था,
कोई शहजादा उस गुड़िया से अब शादी रचाता है।

तेरे घर, खेत, खलिहानों के सन्नाटे तुझे पूछें,
तुझे भाड़े का कमरा क्यों 'सुमित' इतना सुहाता है।

विरासत

नवनीता कटकवार

जब ना संभाल सके उसकी दी
विरासत उपहार को हम।
अब वो जिम्मेदारी स्वयं उठा रही हैं।
वो है पृथ्वी धरती माँ हमारी दोस्तों..
जो अपने नालायक बच्चों को..
अपने तरीके से सबक सिखा रही हैं।

देखो! बह रही है अब, सरिता की निर्मल धारा।
हवाओं से दूर हुआ है प्रदूषण सारा।
प्रकृति भी अब मंद-मंद मुस्कुरा रही है।
जो अपने नालायक बच्चों को..
अपने तरीके से सबक सिखा रही है ।

सोचते थे जिनके बिना नहीं हो सकता..
पल भर भी गुजारा..
जी रहे हैं हम खुशी-खुशी उन चीजों के बिना..
बात ये पते की और सच्ची समझा रही है।
जो अपने नालायक बच्चों को..
अपने तरीके से सबक सिखा रही है।

भूल गए थे हम जाने कब से कैदे अहसास को..
कितनी कीमती है जिंदगी २
मौत जिसको हरा रही है।
समझो अब तो जो प्रकृति हमें चेता रही है।
आजादी की कीमत हमें वो हर पल समझा रही है।
वो है पृथ्वी धरती माँ हमारी दोस्तों।
जो अपने नालायक बच्चों को...
अपने तरीके से सबक सिखा रही है।

प्रणय श्रीवास्तव 'अश्क'

पापा की लाडली को जन्मदिन की शुभकामनाएँ

आज है २५ अप्रैल का दिन, आज का दिन है बहुत महान।
आज के दिन ही दिव्या (लाली) ने, रोशन किया था हमारा खानदान।।

पाकर उसे गोद में, झूम उठा था मेरा जहान।
आशीर्वाद है माँ विमला देवी का, आभार आपका साईनाथ भगवान।।

दिव्य गुणों की है यह दिव्या, जिसकी मां अर्चना गुण वान।
अनुज ष्रजतष् करता है जिसकी, राखी का सम्मान।।

एक नन्हा पुष्प है अनघ, सुरभित देव का वरदान।
शतायु हो दीर्घायु हो, स्वस्थ प्रसन्न हो सामर्थ्यवान।।

बेटी दिव्या को जन्म दिवस पर कोटि-कोटि आशीष,
पूरे परिवार की शुभकामनाएँ अमिट रहे तुम्हारी मुस्कान।

साधना छिरोल्या

खोज

अहंकार का पहने चोला,
गली-गली में भटके रे,
अपनी ही चालों में उलझा,
मकड़जाल सा फँसा रे।।

दोष दिये ऊपर वाले पर,
अपने दम्भ को भूला रे,
कभी बैठ अपने कर्मों का,
लेखा-जोखा कर ले।।

खूब लगाई हरदम प्यारे,
अपने ही घर में आग रे,
अब चला तू कुआँ खोदने,
और रहा पछताये रे।।

अपना-अपना करते-करते,
अपने में ही सिमटा रे,
अब तो प्यारे अपनों के संग,
कुछ तो समय बिता ले रे।।

मन को दर-दर है भटकाया,
सुख और चैन की खोज रे,
दो क्षण आँख मूंद के प्यारे,
अब तो चिंतन कर ले रेष।

शतरंज की बाजी बिछाई,
अपनों के ही बीच रे,
जीत कर भी हार गया तू,
खेल तू ऐसा खेला रे।।

रेशमा त्रिपाठी

ए मेरी किताब

आनन्द के उन्मेष में
जीवन के अंश में
रोते हुए कंठ में
शोक के अंश में
आशा के शोर में
उन्माद के सन्तोष में
आत्मा की ग्लानि में
कर्म के मार्ग में
अधर्म और अन्याय में
बुद्धि के विचार में
अध्ययन और ध्यान में
गुरू और देव में
मैंने तुम्हें ढूंढा हैं
मैंने तुम्हें पूजा हैं
अज्ञानी के ज्ञान में भी
मैंने तुम्हें खोजा हैं
ए मेरी किताब
जीवन का सार तू
ज्ञान और अध्यात्म तू
धन और परिवार तू
प्रेम और प्रकाश तू
द्वन्द्व की अनुभूति में
जीवन का मार्ग तू
ए मेरी किताब।।

त्रिशला गुड्डा

कुसूर

गम सारे जहां का, हुआ साझा
चाहे रंक हो, और चाहे राजा
बेबसी सबकी, देखी ऐसी
देखी होगी ना, कभी वैसी
कैद मिली, सबसे ही निराली
बिन प्रत्यक्ष हुए, कुसूर वाली
किन्तु ऐ, मानस की जात
तू तो, हरगिज ना करना
प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, कुसूर वाली बात
सोचे दुनिया के, मेले में
आया है, सिर्फ विचरने
वेष खुद की, सहूलियत से
है पल-पल, में बदलने
उतार मुखौटा जरा, देख
अंतर तेरा, बोलेगा जरूर
जुल्म-पाप, अन्याय समेत
तेरे ना जाने, कितने हैं कुसूर
ऐ मानस ना जाने, कितने हैं कुसूर

डॉ. आशु जैन

क्षमा

आज मेरे मन में शान्ति घट गई
वर्षो से जो मन में थी वो भ्रांति मिट गई
राम तुम महान हो ये तो मन जानता था
किन्तु एक बात के लिए बार-बार धिक्कारता था
तुमने सीता को वन भेजकर किया बड़ा अन्याय था
लेकर अग्नि परीक्षा हुआ बड़ा गुनाह था
ये जानकर मन में अंतर्द्वंद्व चला करता था
प्यार तो करता है मन थोड़ी नफरत भी
किया करता था
परन्तु आज सत्य का ज्ञान हुआ
अपनी भूल का भान हुआ
हे राम तुम धन्य हो, तुम चैतन्य मूर्धन्य हो
तुम त्याग की मूरत हो, मर्यादा की सूरत हो
हे सीता तुम महान हो, नारी जगत की शान हो
हर स्त्री को प्रेरणा दे ऐसे गुणों की खान हो
तुमने औरत को सबला होने का साहस दिया
जीवन अपना कर्तव्यों को समर्पित किया
ये इतिहास तुम्हारा सदैव ऋणी रहेगा
जब तक पृथ्वी है तुम्हारा नाम रहेगा
आज अपनी भूल को स्वीकारती हूँ
हृदय से तुम दोनों से क्षमा मांगती हूँ।

डॉ.वसुंधरा रॉय

कोरोना वायरस एवं सरकार के प्रशंसनीय कदम

सरकार के प्रशंसनीय कदम भारत की जमीनी हकीकत तय करेगी!

कोरोना वायरस आजतक रहस्यमय है कि ये वायरस का जन्म खुद से हुआ है या इसे साजिश के तहत पाल-पोस कर विश्व को परोस दिया गया है इसकी तह तक पहुंचना अति आवश्यक है। चीन को आज पूरी दुनिया शक की नजर से देख रही है। पिछले कुछ महिनों में ही यह वायरस पूरी दुनिया में पहुंच कर लोगों को जिंदगी दहशत में जीने को मजबूर कर चुका है। अमेरिका इटली ईरान स्पेन इंग्लैंड और अब भारत में पहुंच कर हाहाकार कर रहा है।

अभी तक इसका कोई इलाज नहीं है बस सावधानी ही एकमात्र उपाय है। भारत में अब तक पुष्टि किए गए केस २३,०७७ ठीक हो गए केस ४,७४६ और मृत्यु ७१८ दर्ज हुई हैं।

अब तक भारत सरकार ने देशहित में जो निर्णय लिए हैं वो सराहनीय हैं जैसे देश आर्थिक चुनौतियों से कैसे निपट सकता है जिसके लिए कोविड १६ आर्थिक बल के गठन की घोषणा की है। केंद्रीयमंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में यह संगठन सभी हितधारकों के संपर्क में रहेगा तथा प्रतिक्रिया मिलने के आधार निर्णय किया जाएगा। लेकिन कितना प्रभावकारी रहेगा ये आने वाला समय ही तय करेगा तथा आम जनता को कितना लाभ प्राप्त होगा ये दिलचस्प होगा।

सरकार के द्वारा आरोग्य सेतु एप के माध्यम से एक और अहम कदम उठाया है जिससे सरकार और आम जनता के बीच सीधा कनैक्शन किया जा सकेगा। भारत सरकार ने कोविड१६ के संक्रमण को रोकने के लिए भारत की जनता के हित के लिए जिस प्रकार आधुनिक तकनीक का सहारा लिया है वह सराहनीय कदम है जिसमें घरों में रह रहे लोगों पर भी सरकार की नजर रहेगी। आरोग्य सेतु एप स्मार्ट मोबाईल धारक अपने फोन पर यह एप डाऊनलोड करना होगा तथा वहां जो जो प्रश्न पूछें जाएं व्यक्ति को सही सही जानकारी उपलब्ध करानी होगी तब जाकर यह एप व्यक्ति के हित में कार्य कर सकेगा। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी अपनी भाषा सुविधानुसार इस्तेमाल किये जाने की तैयारी है तथा इसमें व्यक्ति की निजता का पूरी तरह से ध्यान रखा गया है।

रेल मंत्रालय की ओर से भी आम जनता के हित में सरहानीय कदम उठाए हैं। भारतीय रेलवे अपने सामर्थ्य के साथ ५,००० कोच को आइसोलेशन कोच में तब्दील करने में सफल कदम उठा चुका है तथा बहुत कम समय में २५०० तक कोच को आइसोलेशन कोच बना भी चुका है।

कोविड१६ से संबंधित उपकरणों की व्यवस्था की जा रही है। भारत में रेलवे अस्पतालों की संख्या १२५ हैं जिनमें ७० से अधिक अस्पतालों को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार किया जा रहा है।

अचानक आवश्यकता पड़ने पर रेलवे अस्पतालों में बैड की व्यवस्था करी जा रही है। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देश के सभी सरपंचों से सीधे संवाद करके स्वराज पोर्टल है मोबाइल एप की घोषणा की जिससे ग्रामीणों को सुविधाओं के साथ साथ सतर्कता बरतने के लिए जागरूक किया जाएगा तथा सोशल डिस्टैंस को सरल भाषा में दो गज की दूरी कह संवाद स्थापना करने की एक अच्छी पहल है।

दुनिया में अमीरों में अमीर बिल गैट्स ने भी प्रधानमंत्री मोदी जी की कोरोना जैसे गंभीर महामारी के लिए गये निर्णयों की तारीफ की है। स्वीजरलैंड के कलाकार द्वारा १४,६६० फीट ऊंचे पर्वत मैटरहौर्न पर रौशनी से तिरंगा बनाया तथा कोरोना जैसी गंभीर बिमारी में हम सब साथ साथ हैं का संदेश दिया।

पूरे विश्व में आज भारत की प्रसंशा की जा रही है जो किसी भी भारतीय के लिए गर्व की बात हो सकती है

इसके अलावा सालों साल से आम जनता में भारतीय पुलिस की छवि बनी हुई थी वो भी धूमिल होती दिख रही है। कहीं पुलिस किसी गरीब को अपने हाथों से खाना खिलाती दिख रही है तो किसी को राशन देते हुए दिख रही है ऐसे बहुत से सराहनीय उदाहरण हैं जिससे आम जनता में उनकी छवि किसी भगवान से कम नहीं।

सफाई कर्मचारियों ने भी अपनी ड्यूटी को निभाते हुए देशभक्ति में अपना नाम सम्मान के साथ दर्ज करा लिया है। ऐसा पहली बार हुआ कि सफाईकर्मियों पर फूल बरसा कर उनका धन्यवाद अदा किया गया।

डॉक्टरों ने भी देशभक्ति का एक ऐसा उदाहरण पेश किया है कि आज आम जनता के लिए वे किसी देवता से कम नहीं लेकिन इसी देश में कुछ मूर्खों ने राक्षसो जैसा आचरण अपना कर उनपर व उनके जैसे जो लोग भी देशहित आमजनता के हितों में अपना सबकुछ त्याग कर समर्पण भाव से दिन रात लगे हुए हैं उन्ही पर पत्थरबाजी करने से नहीं चूक रहे लेकिन सरकार ने इसको गंभीरता से लिया है तथा सजा का प्रावधान किया है। आए दिन डॉक्टरों एवं चिकित्सा कर्मियों पर पुलिसकर्मियों पर व अन्य लोगों पर हमले की घटनाएं हो रही हैं। सरकार ने यह फैसला लिया है कि डॉक्टर पर हमला करना गैर जमानती अपराध बना दिया है। जिसमें ३ महीने से लेकर ५ साल तक की सजा का प्रावधान किया गया है। साथ ही ५०,००० से २००००० का जुर्माना भी तय हो चुका है। अगर ज्यादा नुकसान पहुंचा तो यह सजा ६ महीने से लेकर ७ साल की सजा हो सकती है। इस बारे में ३० दिन के बाद मुकदमा चलना शुरू हो जाएगा और फैसला १ साल में किया जायेगा। अगर किसी भी स्वास्थ्य कर्मी या डॉक्टर की गाड़ी का नुकसान हुआ है तो इसके लिए हमला करने वाले व्यक्ति पर मार्केट दर से २ गुना मुआवजा लिए जाने का प्रावधान किया गया है। बता दें कि इससे पहले भारतीय चिकित्सा संघ आईएमए ने कोरोना वायरस संकट के दौरान अपनी ड्यूटी कर रहे डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य कर्मियों पर होने वाले हमलों के विरोध में जब प्रदर्शन का फैसला लिया था जिसके बाद सरकार से आश्वासन दिया उसके बाद विरोध प्रदर्शन को वापस ले लिया।

भारत सरकार द्वारा आधुनिक तकनीक के माध्यम से उठाए गये कदम निश्चित रूप से प्रशंसनीय हैं माना आज देश में पुरूषों में शिक्षा ७४.०४ प्रतिशत है तथा महिलाओं में शिक्षा ८२.१४ हैं लेकिन इस बिंदु पर भी विचार करने की आवश्यकता है कि भारत की आम जनता इस तकनीक का कितना ज्ञान रखती है? क्या भारत के सभी लोगों के पास स्मार्ट फोन या एनरॉयड फोन उपलब्ध हैं? यदि हैं भी तो क्या उनको सही तरीके से इस्तेमाल करना आता है? और जिनके पास साधारण फोन ही हैं उन तक जानकारी कैसे उपलब्ध कराई जाएगी?

भारत को कोरोना के अलावा अन्य पहलुओं पर भी सामना करना पड़ रहा है जो भारतीयों के लिए बेहद चिंतनीय है।

कोरोना को धर्म से जोड़कर देखना भी आश्चर्यजनक है! तमाम बुद्धीजिवियों से एक ही सवाल क्या कोरोना वायरस किसी भी व्यक्ति से पूछता कि किस धर्म के हो तब वो शरीर में प्रवेश करता है? टी वी चैनलों पर धर्म के नाम पर जिस तरह बहस की जाती है जो वर्तमान की पत्रकारिता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है कि क्या यही पत्रकारिता है? कोरोना की बिमारी किसी धर्म जाति को देख कर निर्णय नहीं लेती।

सरकार यथा संभव देशहित में योग्य कदम उठा रही है लेकिन क्या ये कदम उठाने में सरकार से चूक हुई हैं?

कोरोनावायरस जैसी वैश्विक महामारी पर २८ मार्च २०२० से सरकारी तंत्र ने सावधानी रखना आरंभ कर दिया था विदेश से आने वालों पर नजर रखी जाने लगी थी लेकिन प्रश्न वहां ये उठता है कि यदि यात्रियों की स्क्रिनिंग आरंभ कर दी गयी थी तो अब तक ये संक्रमण बढ़ता ही क्यों जा रहा है?

१८ जनवरी से २६ मार्च तक विदेश से आने वालों की संख्या लगभग १५ लाख है तो क्या ये समझा जाए कि कोविड१६ संक्रमण को रोकने में सबसे बड़ी लापरवाही यहीं से आरंभ हुई यदि हां तो इसके जिम्मेदारी कौन लेगा?

सुनामी जैसी प्रलय की चेतावनी भी दी गयी थी लेकिन उस चेतावनी को अनदेखा करना देश को मंहगा पड़ा।

सराहनीय कदम उठाने के बाद भी जमीनी हकिकत आने वाला समय ही तय करेगा। मजदूरों, सब्जिवाले और हर वो व्यक्ति जिनकी रसोई रोज के काम से मिलने वाली धनराशि पर निर्भर रहती है उनके लिए ये समय काटना किसी सजा से कम नहीं है।

आरंभ जैसा भी रहा हो लेकिन सरकार के द्वारा वर्तमान में देशहित के संदर्भ में उठाए गये साकारात्मक कदमों को भी नकारा नहीं जा सकता है मगर फिर भी इस दूरदर्शिता को यदि जनवरी से ही अमल में लाया जाता तो आज स्थिति कुछ हो सकती थी।

जितने भी सराहनीय कदम उठाए गये हैं जमीनी हकीकत तय करेगी कि सरकार कितनी सफल हुई?

सामर्थ्य से भारी कुल्हाड़ी मत चलाइए!

कमलेश कमल

'प्रश्न करना' और 'मजाक उड़ाना' दो ऐसी क्रियाएँ हैं जिनमें वैपरीत्य है- ठीक ऐसे ही जैसे 'तर्क करना' और 'कुतर्क करना' विविध आयामों से विरोधी संक्रियाएँ हैं। प्रश्न करना और तर्क करना आधुनिकता-सूचक है, अग्रगामिता है, ज्ञान-पिपासा है, ज्ञान का संधान है। इसके विपरीत 'मजाक उड़ाना' और 'कुतर्क करना' पश्चगामिता है, बौद्धिक विकलांगता है, मानवीय संस्कृति की विकास यात्रा में पीछे छूटने का परिचायक है।

प्रश्न कोई भी कर सकता है। उसका स्वागत हो, न कि विरोध। जो समाज जितना बन्द होता है, वहाँ प्रश्न और तर्क करने की उतनी ही कम छूट होती है। भरतीय संस्कृति तो शास्त्रार्थ की संस्कृति रही है।

किसी विश्वास में, मत में या किसी ग्रंथ में सब अच्छा ही है, यह सनातन की सोच नहीं है। नोट करें कि ग्रंथ का अक्षर-अक्षर पवित्र और दोषमुक्त हो...यह हिन्दू धर्म की भावना है ही नहीं। यहाँ तो वैभिन्न के सम्मान की परम्परा है।

वायुपुराण कहता है-

मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना कुंडे कुंडे नवं पयरू,
जातौ जातौ नवाचारारू नवा वाणी मुखे मुखे।

अर्थात् जितने मनुष्य हैं, उतने ही विचार हैं। एक ही स्थान के अलग अलग कुँओं के पानी का स्वाद अलग-अलग होता है। एक ही संस्कार के लिए अलग-अलग जातियों में अलग-अलग रिवाज होता है तथा एक ही घटना का वर्णन हर व्यक्ति अपने ढंग से अलग-अलग करता है।

स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में आप तर्क कर सकते हैं, विरोध कर सकते हैं। त्याग को पकड़िए, भोग को पकड़िए स्वतंत्रता है। लेकिन जो भी करें, गहराई में उतरकर करें, उथले न बनें। कुछ लोग गहराई में उतरकर अध्ययन नहीं करते, बस कुछ वैचारिक वमन करने, कुछ उद्धृत करने (Quote) के लिए २-४ पंक्ति पढ़ लेते हैं, या गूगल कर लेते हैं। उन्हें उद्धृत करने (Quote), पढ़ने (read), अध्ययन करने (study) और मनन करने (contemplate) के क्रम और अंतर को समझने की भी आवश्यकता है। छिछला ज्ञान कभी-कभी बड़ा शोर करता है, तभी तो हिंदी में मुहावरा बना- 'थोथा चना बाजे घना।'

माना जाता है कि योग्य व्यक्ति से प्रश्न करना उत्तम मानसिक स्वास्थ्य का संकेतक है। ऐसे में, प्रश्नकर्ता को भी चाहिए कि सही व्यक्ति से सही समय पर और सही रीति से प्रश्न करे। धर्म और अध्यात्म से संबंधित प्रश्न को किसी से भी पूछ देना ऐसा ही है जैसे भौतिकी का प्रश्न किसी गड़ेरिए से करना।

यहाँ तक कि धर्म के मामले में भी कोई विद्वान् सभी मामले का जानकार नहीं हो सकता। यहाँ

कुछ बातें प्रतीकात्मक हैं, कुछ गूढ़ दार्शनिक, कुछ मिथकीय, कुछ विभिन्न साधना पद्धतियों से सम्बद्ध, कुछ जन-श्रुतियाँ तो कुछ प्रक्षिप्त। ऐसे में अत्यधिक सावधानी और समझदारी की अपेक्षा की जानी चाहिए।

तथ्य यह है कि किसी पुरातन प्रथा, श्लोक, मान्यता आदि का सीधे मजाक उड़ाना अल्हड़ता, फूहड़ता, हीनभावना, गुस्सा आदि में से किसी एक या अनेक का परिचायक हो सकता है, लेकिन अगर बड़ी और भारी कुल्हाड़ी उठाने का अभ्यास और सामर्थ्य नहीं, तो इसे उठाने वाला स्वयं घायल होगा, यह तय है। ध्यान दें कि Philosophy के foolish use (दर्शन का मूर्खतापूर्ण प्रयोग) और logic के illogical use (तर्क का अतार्किक उपयोग) ने इस देश का बेड़ा गर्क किया है

अज्ञानता की भट्ठी में जब तर्क पकता है, तो यह या तो फूहड़ होता है या विषैला। जब पहले से ही कुछ उत्तर सोच लिया गया हो या उद्देश्य ही किसी को तंग करना हो, तब प्रबल संभावना है कि बुद्धि की भट्ठी से विषैला धुँआ ही निकलेगा। दिक्कत यह भी है कि ऐसे तर्क देने वाले को इसका अंदाजा नहीं होता कि उसने क्या एकांगी, घटिया, अधकचरा या कचरा सोचा या उगला है। उसे तो लगता है कि उसने कोई तोप का गोला दाग दिया है।

एक तथ्य यह भी है कि धार्मिक ही नहीं किसी भी विषय की मीमांसा अध्यवसाय, वैचारिकी और तार्किकता का एक न्यूनतम स्तर और गाम्भीर्य की अपेक्षा रखती है। क्या ६वीं कक्षा की भौतिकी में प्रकाश के अध्याय (light chapter) में अर्जित ज्ञान के स्तर पर मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया जा सकता है? (स्मरण रहे वहाँ भी इसकी चंद पंक्तियों में चर्चा और निदान है, जिसे आगे कोई नेत्र रोग विशेषज्ञ (opthalmologist) अपने MBBS के वर्षों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद २-३ वर्ष और देकर सीखता है। यही बात सामाजिक विज्ञान में है, भाषा-विज्ञान में है और अध्यात्म तथा धर्म के परिक्षेत्र में भी है।

मन्तव्य यह कि वैचारिकी के जगत् में आगे बढ़ने के लिए अध्ययन की ही सीढ़ियों से ही गुजरना होता है। अध्यवसाय को व्रत बनाना होता है। इनमें बाधक तत्त्व जैसे- काम, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, हीनभावना आदि अज्ञान से ही उपजते हैं, जिनसे मुक्ति के लिए ज्ञान से बड़ा कोई यज्ञ नहीं।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'

आपको संशय है या आप किसी बात से असहमत हैं- अच्छी बात है, लेकिन असहमति दिखाने में अपना और दूसरों का समय नष्ट मत कीजिए। बकवास बातें जो मिलावट आपको दिखती हैं, उनपर पढ़िए, उनकी कमी निकालने, उसे छिन्न-भिन्न करने, तार-तार करने के लिए ही पढ़िए लेकिन खूब पढ़िए। सोचिए कि और लोगों को भी आपसे पहले यह लगा होगा, आप अकेले इतने तार्किक पैदा नहीं हुए हैं। जो महान् तार्किक आपसे पहले हुए, उन्होंने भी पढ़कर ही इसे जाना या प्रमाण सहित इसका विरोध किया‌य फेसबुक या व्हाट्सअप पर ओछे वाग्विलास से नहीं।

तो ढूँढिए! उनमें कुछ ठीक होंगी और कुछ सच ही बकवास होंगी। आप कुछ नया ढूँढ पाएँ या नहीं, पर यह तय मानिए कि आप स्वयं संशय में नहीं रहेंगे और आँख बंद कर हवा में तीर नहीं मारेंगे। आपका मन दर्पण की तरह साफ हो जाएगा। इति शुभम् !

कमलेश कमल

सरन घई, कनाडा

व्यंग्य

लड़की छेड़ने की सही उम्र क्या है!

बात तब की है जब मैं लगभग १५ वर्ष का था। नई-नई जवानी की कोंपलें फूट रही थीं। को-एजूकेशन में पढ़ता था। क्लास में एक लड़की थी बहुत खूबसूरत। मन चाहा पहली बार, और मैंने उसका हाथ दबा दिया। उसने मेरी बहन को बोल दिया। होना क्या था, छोटी बहन ने बड़ा सा लैक्चर पिला दिया। "क्या भैया, अभी ठीक से बड़े हुए नहीं, लड़की छेड़ने चले हो। शर्म नहीं आती। आपकी बहन को कोई छेड़े तो? ये आपकी उम्र है लड़की छेड़ने की।"

तभी मैंने डायरी में नोट कर लिया कि १५ साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

कुछ उम्र आगे बढ़ी। २० साल का हुआ। फिर मन में हिलोर उठी और एक लड़की छेड़ डाली। उसका हमारे घर पर आना-जाना था। उसने माँ से शिकायत कह दी। माँ ने मुझे बेभाव के दो चपाट रसीद कर दिये। लैक्चर पिलाया, "शर्म नहीं आती तुम्हे, अभी से ऐसी हरकतें। अगर तुम्हारे पिताजी को पता लग गया तो तुम्हारी जान निकाल लेंगे। ये उम्र है तुम्हारी लड़की छेड़ने की"

मैंने डायरी में नोट कर लिया कि २० साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

फिर जिंदगी का कारवां आगे बढ़ा। उम्र हो गई २५ वर्ष की। बड़े भैया की शादी हो गई और एक प्यारी सी भाभी घर आ गई। अब तो मैं जवान हो चुका था, शादी की लिस्ट में अब मैं सीनियर मोस्ट था। सोचा, अब लड़की छेड़ने में कोई हर्ज नहीं है। पड़ोसन की बेटी को छेड़ दिया। उसने आकर भाभी को बोल दिया। भाभी ने मुझे उम्र की तराजू पे तोल दिया। बोली, "देवर जी, मैं आपकी अपने मायके में शादी की बात चला रही हूँ और आप ये करतब कर रहे हैं। मेरी क्या इज्जत रह जायगी? ये क्या उम्र है आपकी लड़की छेड़ने की"

मैंने डायरी में नोट कर लिया कि २५ साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

जिंदगी के और कई वर्ष बीत गये। उम्र हो गई लगभग ३५-४० वर्ष। इस बीच शादी हो गई, दो प्यारे-प्यारे बच्चे हो गये। अंकल वाली उम्र हो गयी। लगा अब मामला सुरक्षित है। अंकल पर कौन शक करेगा। राह चलती एक लड़की को छेड़ दिया। पत्नी जी ने देख लिया। बोली, "शर्म नहीं आती तुमको। दो-दो बच्चों के बाप हो गये हो लेकिन छिछोरी हरकतें नहीं गईं। अभी भी नहीं सुधरे। ये उम्र है तुम्हारी लड़की छेड़ने की"

मैंने डायरी में नोट कर लिया कि ३५-४० साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

फिर लगभग ५५ वर्ष की उम्र में दिमाग में एक कीड़ा आ गया। सोचा, अब कौन डर है, सयानी उमर है, एक मसला निबेड़ा जाय, लड़की को छेड़ा जाय। तो भाई लोग, मौका मिल गया बस में यात्रा कर रहा था, साथ में एक ठीक-ठाक सी लड़की बैठी थी, मौका देख कर उसके हाथों में हाथ रख दिया। वो तो भड़क गई। मुझसे थोड़ी दूर सरक गई और बोली शर्म नहीं आती, मेरे पिता की उम्र के हो, घर में बहन-बेटी है कि नहीं। ये उम्र है तुम्हारी लड़की छेड़ने की?

मैंने डायरी में नोट कर लिया कि ५५ साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

अब मैं सत्तर साल का हूँ। घर में बीवी है, बहुऊ है, नाती-पोते हैं, अब किस बात का डर, चलो एक आखिरी ट्राई करते है, आफिस पेंशन लेने के लिये गया। कैशियर एक लड़की थी। जब उसने पेंशन के नोट गिनकर पकड़ाये तो मैंने जान-बूझ कर उसके हाथों को छू दिया।। आखिरी कोशिश पर भी कोरोना वायरस ने आक्रमण कर दिया। बे भाव की सुननी पड़ी। बोली, "बुढ़ऊ, कबर में पैर लटके हैं लेकिन हरकतें अभी भी जवानी वाली हैं। ये उम्र है लड़की छेड़ने की"

मैंने आखिरी बार डायरी में नोट कर लिया कि ७० साल की उम्र लड़की छेड़ने के लिये नहीं है।

आप क्या सोच रहे हैं मैं हास्य कथा लिख रहा हूँ। मेरा मकसद यह समझाना है कि लड़की छेड़ना एक सामाजिक अपराध है जो किसी भी उम्र में स्वीकार्य नहीं है। लड़कियां समाज का सम्मान हैं, हमारे परिवार की पहचान हैं, ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान हैं।

कहिये, ठीक बात है न।

सरन घई, कनाडा

आशुतोष पाल (आशू)

बात

मुझको रोये हुए जमाना हुआ!
आंख से क्यों नमी नहीं जाती!!

बात उसकी सही नहीं जाती!
फिर भी दिल की लगी नहीं जाती!!

लाख बढ़ जाए प्यास की शिद्दत!
फिर भी दरियादिली नहीं जाती!!

प्यार की दिलकशी नहीं जाती!
उनकी जलवागिरी नहीं जाती!!

जितने एहसान है किए तुमने!
याद उनकी कभी नहीं जाती!!

मैंने तद्दिबर की बहुत यूँ तो!
क्या करूँ मुफलिसी नहीं जाती!!

आँखें खुद ही बयान करती हैं!
बात दिल की कही नहीं जाती!!

खोट ईमान में है कुछ शायद!
क्यों मर बुजदीली नहीं जाती!!

मैंने तो तौबा कर लिया आशू!
फितरते मयकशी नहीं जाती!!

भारत की परंपराएं है अद्वितीय
प्रणम्य है मेरी माटी की संस्कृति
शत-शत नमन और शुभ दिवस
अक्षय सुख लाए अक्षयतृतीय

अक्षय तृतीया की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संस्थापक
अन्तराशब्दशक्ति
डॉ प्रीति समकित सुराना

आदित्य राजौरिया अजनबी

पाल घर हुआ पाप घर

वीर शिवा की जिस धरती पर, सनातनी परिपाटी थी।
धर्म रक्षा की खातिर जिसने, लाखों गर्दन काटी थी।

वीर प्रसूता भूमि मराठी, लज्जित और ससंकित है।
भगवा ध्वज वाहक की भू पर, पाप हुआ अब अंकित है।

नमस्ते मात्रभूमि वालों का, जिसको लोग कहें तीरथ।
खंड खंड होती दिखती है, उस मुख्यालय की कीरत।

बाला साहेब कहते उनको, शेर मराठी कहलाते।
सत्ता सुख की खातिर वंशज, हरे रंग में रँग जाते।

भगवा शान रही थी जिनकी, कहते लोग दिलेर थे।
गीदड़ कैसे छोड़ गये जो, बाला साहेब शेर थे।

साधू संत सनातन के ही, सदा बड़े परिचायक हैं।
सबका भला चाहने वाले, उच्च कोटि फलदायक हैं।

सहज सरलता की मूरत वो, भक्ति भाव के पोषक हैं।
विश्व कुटुंब हमारा है यह, प्रेम शब्द उद घोषक हैं।

ऐसे सत्य सनातनियों को, सूअर कुत्ते घेर लिये।
चौपट राजा जहाँ विराजा, है नगरी अंधेर लिये।

जिस खाकी पर किया भरोसा, वो भी तो गद्दार हुयी।
छोड़ उन्हें खुद प्राण बचाकर, वो चुपचाप फरार हुयी।

भाड़ वामिये भी चुप बैठे, सेक्यूलर सांप बिलों में हैं।
लगता भारत की बरबादी, वाले भाव दिलों में हैं।

शांति दूत गर मरता तो तुम, छाती कूट रहे होते।
लीचिंग के सँग जाने किन किन, शब्दों से लूट रहे होते।

बुद्धिजीवियों के मुँह पर ताला, चैनल भी खामोश खड़े।
वो सारे नेता भी चुप हैं, कहते थे जो बोल बड़े।

बहत्तर वर्ष के साधू पर, घातक बार किया तुमने।
अरे गीदड़ों शर्म न आयी, मिलकर मार दिया तुमने।

आंखें फूटी थी क्या कुत्तों, तुमने संत नहीं देखा।
भगवा वस्त्रों से नफरत पर, अपना अंत नहीं देखा।

जागों सारे उठो आज सब, जोरों से हुंकार भरो।
एक साथ सब मिलकर के इन, कृत्यों का प्रतिकार करो।

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी

आक्रोश

जलती हुई मशालें
अब क्यूँ धुआं-धुआं हैं
जो लेखनी विकल थीं
अब क्या उन्हें हुआ है

थे निरपराध साधु
जिन्हें क्रूरता से मारा
निर्मम, ओ! नरपिशाचों
मुंह बंद क्यों तुम्हारा

सर्वस्व लूट गया है
कह पीटते थे छाती
ओ! कथित बुद्धिजीवी
अब चीख न सुनाती

सम्मान पत्र वापस
फिर एक बार कर दो
दुनिया से चीखकर
डर लग रहा है कह दो

आस्तीन के सपोलों
बिष का वमन करो अब
भारत न अब सुरक्षित
कर लो प्रचार मिल सब

पत्थर की मूर्तियों के
नीचे उमड़ पड़ो अब
भाषण असहिष्णुता के
कैंडिल जलालो मिल सब

यदि शर्म शेष हो तो
कालिख लगाना मुंह पर
फिर खुद को झांक लेना
एक आइने को रखकर

राकेश पटेरिया

भीड़ का हमला

हुआ जो पालघर में है रहा क्या और बाकी है।
हत्यारे कोई भी हों ये हत्या साधुता की है।

हुआ है भीड़ का हमला ये जुमला खूब चल निकला
है किसकी जिंदगी कितनी इसी जुमले ने आंकी है।

जरा तो पूछ लेते कौन भगवा रंग धारी हैं
इतना गिर चुके तो क्यों ये पहना रंग खाकी है।

पकड़ बेचारे सन्तों को धकेला है दरिंदों में
अरे क्या खूब ये ड्यूटी पुलिस होकर अदा की है।

लगे क्यों खोजने क्यों पूछने मुल्जिम हजारों में
खड़े थे वर्दियों में जो उन्हीं ने ये जफा की है।

निकलते वक्त जां उनको हुई तकलीफ तो होगी
उन्हें भी भीड़ में दे दो जिन्होंने ये खता की है।

इन्हें भी जख्म दो इतने कि जितने जुल्म हैं इनके
मरे हैं हम तो हमने ही मुकर्रर ये सजा की है।

धरती

रोहित प्रताप सिंह

नदी बन गई वह,
हो गई पहाड़, जंगल और हवा,
बारिश में थिरकी, कांपी,
महुए की गंध से बौराई,
हमें बना बैरी बनी खुद की।।

मछली को सुनाई किलकारी,
चिड़िया को तोतली बोली,
नदी ने सुने बच्चे के सपने,
सुनाते-सुनाते यों ही वह,
जाने क्यों रो पड़ी।।

माँ थी, एक सृजक,
कैसे छोड़े परवाह, आस,
पथराई आंखों से आज भी,
है किसी की राह देखती।।

कहानी के पेड़ सी,
सब देने के बाद भी,
है इंतजार में अब तक,
सोचती शेष क्या देने को।।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

नफे सिंह योगी मालड़ा

पॉलिथीन भगाएँ पेड़ लगाएँ पृथ्वी बचाएँ

पॉलिथीन से मुक्त देश हो, हर गाँव शहर सुंदर छैला।
निकले घर से बाहर कोई, तो हाथ सभी के हो थैला।।
धरती माँ की साँस रोकता,
नहीं जड़ों को बढ़ने देता।
क्या बीमारी लगी फसल में,
नहीं किसी को पढ़ने देता।
उपजाऊ भूमि का दुश्मन,ये जहाँ-तहाँ भी है फैला।
निकले घर से बाहर कोई तो हाथ सभी के हो थैला।।
आग लगे जहरीला बनता,
ले नहीं सकता साँस कोई।
जीवों का जीवन हर लेता,
बचने की नहीं आस कोई।
दुर्गंध में जीवन हो दुर्लभ व हवा को कर देता मैला।
निकले घर से बाहर कोई, तो हाथ सभी के हो थैला।।
पॉलीथिन के ढेर देखकर,
लगता जैसे पहाड़ खड़े हैं।
पशु, जानवर खा-खा इनको,
सड़कों पर बीमार पड़े हैं।
पर्यावरण के प्राण ये डसता, बिच्छू सा है डंक विषैला।
निकले घर से बाहर कोई, तो हाथ सभी के हो थैला।।
प्रदूषण का नाम प्लास्टिक,
नहीं सड़ता, नहीं गलता है।
कारखाने सब बंद करो जी!,
ये जहाँ पॉलिथीन बनता है।
बहुत हो चुका कहर जहर का, किया भूमंडल है कुचैला।
निकले घर से बाहर कोई, तो हाथ सभी के हो थैला।।

राजेश आचार्य

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास की चिन्ता करना
बचें नहीं गर मानव तों फिर
किस से किसकी तुलना करना

उन्नति के आधार बहुत हैं
पर ये हमने स्वयं बनाये
आर्थिक भौतिक सामाजिक
हमने हीं इनके नाम धरायें
पर ईन सब से आज अहम क्या
ये भी बात ध्यान में धरना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास चिन्ता करना

आदिम मानव से उन्नति कर
आज यहाँ तक आये हम
आखेट से आये कृषि युग में
फिर नगर संस्कृति लाये हम
उद्योग और तकनीक के सँग में
जारी रखा हमी ने बढना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास चिन्ता करना

मानवता पर संकट हैं
कोई छोटी मोटी बात नही
प्रश्न खड़ा अस्तित्व का अपने
साधारण हालात नही
इसमे सब से पहले हम को
हर प्राणी की रक्षा करना

कोरोना से लड़ने को हम
मिलकर एक जुट हो जाएँ
आपस के मतभेद भुला दें
तभी सुरक्षित रह पाएँ
संकट हैं ये हर प्राणी पर
सबसे पहले इस से लड़ना

श्रमिक किसान उद्दयमी ही
आर्थिक उन्नति आधार हमारा
ये विकास दर की वृद्धि में
देते सबसे बड़ा सहारा
राजेश लगन मेहनत से इनकी
तय विकास दर आगे बढ़ना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास की चिन्ता करना
बचें नहीं गर मानव तों फिर
किस से किसकी तुलना करना

बबिता कंसल

डर मत

इस समय देश में आपातकाल की स्थिति है, इस वैश्विक महामारी कोरोना के चलते देश में लाकडाऊन मे सभी अपनें घरों मे बन्द है। देश विदेशों से इस महामारी के समाचार सुन कर मन भय, आशंकाओ से भर जाता है।

कुछ लोग अफवाहे पैदा रहे है। जबकि इन बातों पर ध्यान न देकर सरकार द्वारा दी गयी सुचना और आयुष विभाग द्वारा दी गयी सभी गाइड लाइन को बताया गया है। सोशियल डिस्टैंस बनाये रखना जरुरी है। सावधानी बरतनी चाहिए। आपातकाल को नकारात्मक पहलू न समझ कर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए ।

लॉकडाउन से मेरा मन बहुत आशंकित था। कि कैसे ये सब हम कर पायेगे। सभी सुख सुविधा के होने पर थोड़ी भी असुविधा कष्टप्रद लगती है। शुरु मे कुछ परेशानी अवश्य आयी।

परिवार के सहयोग से सब ठीक लग रहा है। एक लम्बे समय के बाद आज परिवार का साथ मिल रहा बच्चों की पसन्द का खाना आज मै उन के सहयोग से बना, खिला कर आनंद आ रहा है। अब सब व्यंजन घर पा ही बन रहे है।

पतिदेव जो हमेशा घर के बाहर कामों के चलते समय घर मे कम दे पातें थे।आज घर मे बच्चों के साथ बच्चे बन सांप सीढी लूडों खेल रहे है। अपनें बचपन के किस्से सुना रहे है। घर मे सारे समय हंसी ठंटा होता रहता है शाम अपनी टेरेसा पर पक्षियों के कलरव सुन सब चहक रहे हैं। आजकल गोरैया फिर से दिखायी देने लगी है। मन बहुत खुश है ये देख की परिन्दे वापस आ रहे है। सब पोल्यूशन कम होने से ही हुआ है।

आस-पड़ोस के सभी लोगों का हाल पूछतें है। मेरी बागवानी पूरे चरम पर है। बच्चें फूलों, सब्जीयो के बारे में सीख रहे है। आपातकाल मे कम उपलब्ध संसाधन मे ही संतुष्ट रहना चाहिए। आपातकाल मे संयम, अनुशासन से रहनें की सीख देता है।

सरकारी, हमारे स्वास्थ्य कर्मी, जो भी अपनी जान पर खेल कर हम सब की सेवा मे लगे है उन का आदर करें। हम सब को इस कोरोना रूपी महामारी को हराना है।
धैर्य रख सवेरा होगा, धैर्य रख जीत होगी, धैर्य रख सब साथ होगे, प्रकृति परिवर्तन कर रही है

हे मानव प्रकति मां से ही हमारा जीवन है। मां हमेशा अपनें बच्चों की सुख के बारे में ही सोचती है। डर मत संयम, के साथ हौसलों से इस महामारी को हरा ।

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

''सृजन शब्द से शक्ति का''

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

१. व्हाट्सअप समूह २ फरवरी २०१६ से।

२. फेसबुक समूह २ फरवरी २०१६ से।

३. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर ७-८ रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन १ नवंबर २०१६ से।

४. फेसबुक पेज १६ फरवरी २०१७ से।

५. मासिक वेब पत्रिका १ जुलाई २०१७ से।

६. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन २५ मार्च २०१८ से।

७. ईबुक प्रकाशन १५ जनवरी २०१९ से।

८. अब तक लगभग ३०० से अधिक पुस्तकों और १५ साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और ८४० सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।

९. १ जून २०१९ से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।

१०. २१ सितंबर २०१९ से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।

११. १ अक्टूबर २०१९ से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-097-1

मुल्य - 120/-